

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—सण्ड 3—उप-सण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 341]

नई दिल्ली, सुक्रवार, अक्तूबर 31, 1980/कार्तिक 9, 1902

No. 341]

NEW DELHI, FRIDAY, OCTOBER 31, 1980/KARTIKA 9, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या <mark>दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में</mark> रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

भौबहन और परिवहन संजासय

(परिवहन पक्ष)

अधिस<u>्</u>चना

नई चिल्ली, 31 अञ्ज्बर, 1980

सा. का. नि. 615(अ). — केन्द्रीय सरकार महापत्त र न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 28 के माथ पठित भारा 126 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्स-निस्तित विनियम बनानी है, अधित्ः :—

- 1. संक्षिप्त माम और प्रारम्भः—(1) इस विनियम का संक्षिप्त नाम तृतीकोरिन पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण के लिए अग्रिमों का अन्दान) विनियम, 1979 है ।
- (2) यह राजपत्र में प्रकाशन की तारील में प्रवृक्त होंगे ।
 2. परिभाषाएं .—इस विनियम में जब तक कि मंदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो ।
 - (क) ''अभिनियम'' से महत्पत्तन न्याम अधिनियम, 1963 (1963 का 38) अभिभेत हैं,
 - (स) ''बोर्ड'' में तूतीकोरिन पत्तन न्यास के लिए अधि-नियम के अधीन गठित न्यासी-बोर्ड अभिप्रेन हैं,
 - (ग) ''अध्यक्ष'' से सोर्ड का अध्यक्ष अभिप्रेत हैं,
 - (घ) ''उपाध्यक्ष'' से बोर्ड का उपाध्यक्ष अभिप्रत है,

- (ड) ''कर्मचारी'' से बोर्ड का कर्मचारी अभिप्रेत है,
- (च) ''सरकार'' में केन्द्रीय सरकार अभिप्रोत है,
- (छ) ''विभाग का अध्यक्ष'' में ऐसा पद अभिन्नेत हैं जिसकें पदधारी को केन्द्रीय सरकार, अधिनियम के प्रयोजन कें लिए, उक्त अधिनियम की धारा 24 की उपधारा (2) के अधीन उस रूप में विनिर्दिष्ट करें।
- (ज) ''विधिक मलाहकार'' से समय समय पर निय्कत बोडें का बिधिक सलाहकार अभिप्रेत हैं,
- (भ) ''स्थायी कर्मचारी'' और ''अस्थायी कर्मचारी का बही अर्थ होगा जो त्तीकोरिन पत्तन न्याम कर्मचारी (भती ज्येष्ठता और प्रोन्निति) विनिधम, 1979 में क्रमश: उनका है।
- (ञ) ''गिम्म वेतन'' से ऐसा कर्मचारी अभिशंत है जिसका वेतन, जिसके अन्तर्गत स्थानापन्न वेतन, महांगाई वेतन, व्यक्तिगत वेतन और विशेष वेतन है, प्रति मास 500 रुपए से अधिक न हो।
- 3. पात्रका.—गह निर्माण अग्रिम का अनुदान कर्मचारियों के निम्नित्यित प्रविगी की किए जा सकेंगे, अर्थात्:—
 - (क) बोर्ड के स्थायी कर्मचारी,
 - (स) बोर्ड के ऐसे कर्मचारी, जो ऊपर के प्रवर्ग (क) क अधीन नहीं आसे हैं और जिन्होंने कम से कम दस वर्ष निरन्तर

(1231)

सेवा की है, परन्तु यह तब जब कि मंजूरीकर्ता प्राधिकारी का यह समाधान हो जाए कि उनके बोर्ड की मंत्रा में कम से कम तब तक वने रहने की संभावना है जब तक उस गृह का, जिसके लिए अग्निम मंजूर किया गया है, निर्माण नहीं हो जाता है या उसे बोर्ड को बंधक नहीं कर दिया जाता है।

दिष्पण - ऐसे मामलों मों, जहां पति और पत्नी दोनों बोर्ड के कर्मचारी हैं और अग्निम के अनुदान के लिए पात्र हैं। यह उनमें से केवल एक को अनुज्ञेय होगा ।

- 4. शतों जो पूरी की जानी है. अफ्रिम के अनुवान के किसी आयेवन में निम्नलिखित शतों पूरी होनी चाहिए, अर्थात् :
 - (क) किसी गृह के मामले में निर्माण/क्रय किए जाने वाले गृह या फ्लैट की लागत निवासी प्लाट की लागत को निकाल कर कर्मचारी के बेतन के 75 गना से या 1,25,000 रुपये से, इसमें से जो भी कम हो, अधिक नहीं होगी और आयेदक ने किसी अन्य प्राधिकारी या निकाय, जैसे कि प्नर्वास विभाग या केन्द्रीय या राज्य आवास स्कीम से इस प्रयोजन के लिए, कोई उधार या अग्रिम न लिया हो । निम्न येतन कर्मचारी के मामले में निर्माण/क्रय किए जाने वाले प्रस्तावित ग्रह/फ्लीट की लागत (भूमि/फ्लैंट के विकय/पटटा विलेख में यथा-वर्णित भूमि की लागत को निकल्कर 50,000 रुपये से अधिक नहीं होगी यद्यपि कि वह उनके मासिक वेतन से 75 गुना से अधिक हो सफेगी—जहां आवेदक दुवारा पहले ही ले लिया गया उधार आदि इन विनियमीं के अभीन अनुज्ञेय रकम से अधिक नहीं है, उसके लिए इस अधिनियम के अग्रिम के लिए आवेदन करना इस शर्त के अध्यथीन रहते हुए स्ता है कि वह बकाया उधार या अग्रिम को उन पर ब्याज महित, यदि कोई हो, एक मुक्त राज्ञि में पुर्वोक्ति प्राधिकारी या विकास को प्रतिसंदरत करने का बचन देता है।
 - (ख) ऐसे मामले में जहां कोई कर्मंचारी इस विनियम के अधीन कोई अग्निम लेने के अतिरिक्त गृह/निवागीय फ्लैट के संनिमाण/उर्जन के संबंध में अपनी भिट्टय निधि लेखे से अंतिम रूप से रकम निकालता है (या निकाला है) इस विनियम के अधीन मंजूर अग्निम और भविष्य निधि से निकाली गयी कुल रकम का योग मामिक बेतन आदि के 75 गूना से या 1,25,000 रुपये से, इसमें से जो भी कम हो, और निम्न बेतन कर्म- चारी की बाबत 50,000 रुपये से उनके 75 मास के बेतन पर ध्यान न बेते हुए अधिक नहीं होना चाहिए।
 - (ग) न तो आवेदक के न आवेदक के पिता/पत्नी या अव-यस्क संतान के स्वामित्व में कोई ग्रह होना चाहिए किन्त् यह भर्त बोर्ड द्वारा आपवादिक परिस्थितियों में शिथिल की जाएगी उदाहरणार्थ यदि आवेदक या आवेदक की पत्नी/पिति/आवश्यक संतान किमी गांव में गृह की स्वामी है और आवेदक किसी नगर में बसना चाहता है, या जहां आवेदक अन्य नामेदारों आदि के साथ संयुक्त रूप से गृह का स्वामी है और वह अपने लिए किसी पृथक गृह का निर्माण करना चाहता है।
 - (घ) संनिर्मित या ऋय िकए जाने वाले गृह की पसी क्षेत्रफल 22 वर्ग मीटर से कम नहीं होना चाहिए ।

टिप्पण :— इस और अन्य विनियमों तथा इन विनियमों से उपाबद्ध बंध के प्ररूपों के प्रयोजनों के लिए 'गृह' शब्द के अन्तर्गत कोई फ्लैट आता है, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपंक्षित गहो ।

- 6. प्रयोजन जिनके लिए अग्रिम अनुदत्त किया जा मकेगा.— अग्रिम निम्नलिखित के लिए अगुदत्त किए जा सकेंगं—
 - (क) या तो कर्तव्य के स्थान पर या उस स्थान पर, जहां कर्मचारी सेटा निष्टत के पश्चात् बसने की प्रास्थापना करता है, किसी नए पृह की संरचना (जिसके अन्त-र्यंत उस प्रयोजन के लिए भूमि के किसी उपयक्त। प्लाट का अर्जन आता है) या पहले से ही निर्मित गृह या फ्लैट को ऋय करना। एहले से निर्मित गृह रा फर्नेट को अध्य करने के लिए अग्रिम के किसी अखेदन पर भी विचार किया जा सकेगा। अभिम की अधिकतम रकम, जो अनदत्त की जा सकती है, पहले से ही निर्मित गृह या फ्लैंट की वास्तविक लागत या मासिक बेतन के 75 गूना या 70,000 रुपये इसमें जो भी सबसे कम हो, होगी। निम्न वेतन कर्भचारियों के मामले में गृहों का संनिर्माण/गृहों/फ्लैटों क ऋथ (भिम की लागत को निकालकर) की कुल लागत 50,000 रुपयों से अधिक नहीं होगी यद्यपि कि वह 75 मास के वेतन से अधिक हो सकेगी।
 - (स) संबंधित कर्मचारी के या उसकीः/उसके पत्नी/पति के साथ संयुक्त रूप से स्वामित्वाधीन किसी विव्यमान गृहं में निवास स्थान की वृद्धिः

परन्तु थिद्यमाग संरचना की भूमि को छोड़कर, और प्रस्थापित बृद्धि और विस्तारों की कुल लागत उसके मासिक वेतन के 75 गुना या 1,25,000 क्यए, इसमें से जो भी कम हो, में अधिक नहीं होगी। निम्न वेतन कर्मचारियों के मामलों में विद्यमान संरचना की, भूमि को छोड़कर, और प्रस्थापित वृद्धि और विस्तार की कुल लागत 50,000 क्ययों में अधिक नहीं होनी चाहिए यद्यपि कि वह कर्मचारी के वेतन के 75 गुना में अधिक हो सकेगी।

(ग) विनियम 4(क) मे विनिदिष्ट किसी प्राधिकारी या निकाय में लिए गए उधार या किसी अग्रिम का प्रति-संदाय,

परन्तु इस विनियम के खंड (ग) के अधीन अग्रिम का अनुदान उपलभ्य नहीं होगा यदि गृह पर संनिमिंण पहले ही प्रारम्भ कर दिया गया है ।

- 6. अग्रिम की रकम:--
 - (क) कर्मचारी को उसकी संपूर्ण सेवा के दौरान इन विनियमों के अधीन एक अग्निम से अधिक मंजूर नहीं किया जाएगा।
 - (स) किसी आवेदक को उसके मासिक वेतन के जिसके अन्तर्गत स्थानापन बेतन (बंहा के सिवाय जहां वह छुट्टी के कारण हुई रिक्ति में लिया गया है) मंहगाई वेतन, वैयिक्त के तेन और विशेष धेतन सिम्मिलत है किन्त् प्रति नियुक्ति पद की अल्प या नियम अविध में लिया गया वेतन सिम्मिलत नहीं है, 75 ग्ना के समत्त्य रकम से अधिक रकम अनुदत्त नहीं की जा सकेगी और यह विनियम 5(क) के अधीन आने वाले मामलों में अधिकतम 70,000 रुपए, विनियम 5(ख) के अधीन आने वाले मामलों में अधिकतम, 25,000 रुपयों तक मीमित होगी।

- (ग) मंजूर किए जाने वाले अग्रिम की वास्तविक रकम, अ।वेदित अग्रिम को नियोचित बनाने के लिए आवंदकों द्वारा दिए गए रेखांकों, ज्यौरेवार विनिदेशां प्राक्कलनों के अधार पर, पत्तन न्यास के मुख्य इंजी-नियर द्वारा अवधारित की जायेगी और ऊपर विनिविष्ट रकम सीमा के भीतर संनिर्माण की प्राक्कलित लागत तक सीमित होगी। अग्रिम की रकम आगे उस रकम तक सीमित होगी, जिसे कोई कर्मचारी उसे लागू संवा नियमां के अनुसार भागतः अपने उपदान मृत्यु—एवं सेवा निवृत्त उपदान से और भागतः अपनी अधिवार्दिता की तारीख के पूर्व अपने वेतन सं सुविधा-पूर्ण मामिक कटौतियों द्वारा प्रतिसंदत्त कर सकता है।
- (ध) अग्निम की मामिक किस्तों की वसूली बोर्ड द्वारा अग्निम की मंजूरी की तारीख से एक वर्ष के अवसान के पश्चाता की जाएगी।
- (इ) किसी कर्मचारी के बेतन के 33-1/2 प्रतिशत तक संगणित किस्त उसके संदाय क्षमता के भीतर मानी जाएगी।
- 7. संवितरण और प्रतिभूति : (1) भागतः भूमि का क्रय करने के लिए और भागतः एक मंजिल नए गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि करने के लिए अपेक्षित अग्रिम निम्निलिखिल रूप में संदत्त किया जाएगाः—
 - (1) मंजूर अग्रिम के 20 प्रतिशत से कनिथक रक्षम आवेदक को, भूमि के ऐसे विकसित फ्लैट का ऋय करने के लिए जिस पर उधार की प्राप्ति की तारीख से तुरन्त संनिर्माण प्रारम्भ किया जा सकता है, आवेदक द्वारा अग्रिम के प्रतिसंदाय के लिए विहित प्रारूप में एक करार निष्पाित किए जाने पर संदेय होगी । ऐसे सभी मामलों में, जिनमें अग्रिम का भाग भूमि का ऋय करने के लिए दिया गया है उस तारीख से दो मास के भीतर, जिसकी उपरोक्त 20 प्रतिशत रक्षम निकाली गयी है या ऐसे अति एक्त समय के भीतर, जैसा अध्यक्ष इस निमित्त अनुका दे, भूमि को ऋय किया जाना चाहिए और उसकी बाबत विऋय धिलेख निरीक्षण के लिए अध्यक्ष को पंश किया जाना चाहिए, जिसके न हो सकने पर आवेदक वोर्ड को संपूर्ण रक्षम, उस पर ब्याज सहित, तुरन्त वापस करने के लिए दायी होगा ।
 - (2) अग्निम के अितशेष के 30 प्रतिशत के समतुल्य रकम आवेदक को, उसके व्वारा ऋग की गयी भूमि को उस पर निर्मित गृह के साथ, बोर्ड के पक्ष में उसके व्वारा बन्धक िकए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विकय के निबंधनों द्वारा अनुजात है, संदेय होगी। ऐसे मामलों में, जहां विकय के निबंधन जब तक भूमि पर गृह बना न दिया जाए, केता में हक निहित नहीं करते हैं, आवेदक बोर्ड के साथ एक करार विहित प्रारूप में निष्पादित करेगा जिसमे वह जैसे ही गृह का निर्माण कर दिया जाता है और संपरित में पूर्ण हक हो जाता है, भूगि को उस पर निर्मित किए जाने के लिए गृह के साथ बन्धक करने का करार करेगा।
 - (3) अग्निम की मंजूर रकम मो से भूमि के क्रय के लिए वी गयी किस्त की क्षटौती करने के पहचात अवशिष्ट रकम क 40 प्रतिहात के समतुख्य रकम तब संदेय होगी जब गृह का मंनिर्माण प्लिथ की अचाई तक पहुंच गया हो ।

- (4) मंजूर अग्निम का अतिशोष तब संदेय होगा जब गृह का संनिर्माण छत को ऊचाई तक पहुच गया हो ।
- (2) केंबल एक मंजिले नए गृहु का संनिर्माण या किसी विद्य-मान गृह मं निवास स्थान की वृद्धि करने के लिए अपेक्षित अग्निम निम्नालिख्ति रूप मं संदत्त किया जाएगा :—
 - (1) मंजूर अग्रिम के 40 प्रतिशत के समतुल्य रकम आवेदक को, उसके द्वारा क्रय की गयी भूमि को, उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह के साथ बोर्ड के पक्ष में उस के द्वारा बंधक किए जाने पर जहां ऐसा बंधक भूमि के दिक्य के निबन्धनों द्वारा अनुशात हो, संदत्त किया जाएगा । ऐसे मामलों में जहां विक्रय के निबंधन जब तक भूमि पर गृह बना न दिया जाए केता में हक निहित नहीं करते हैं । आवेदक बोर्ड के साथ एक करार बिहित प्रस्प में निष्पादित करेगा जिसमें वह जैसे ही गृह का निर्माण कर दिया जाता है उस पर और संपित्त में हक पूर्ण हो जाता है भूमि को उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह सहित बन्धक करने का करार करेगा ।
 - (2) मंजूर अग्रिम के 40 प्रतिशत से अनिधिक और रकम तब संदेय होगा, जब गृह प्लिंध की ऊषाई तक पहुंच गया हो।
 - (3) बचा हुआ 20 प्रतिशत मंजूर अग्निम तब संदेश होगा जब गृह छत की ऊंचाई तक पहुंच गया हो ।
- (3) भागतः भूमि का अध्य करने के लिए और भागतः दो मंजिले नए गृह का संनिर्माण था किसी विद्यमान गृह में आवास स्थान की वृद्धि करने के लिए अपेक्षित अग्निम निम्नलिखित रूप में संदर्श किया जाएगा,—
 - (1) मंजूर अग्रिम के 15 प्रतिशत से अनिधक रकम आवदक को भूमि एसे विकसित फ्लैंट का क्रय करने के लिए जिस पर उधार की प्राप्ति की जारीख से तुरत्त संनिर्माण प्रारम्भ किया जा सकता है, आवेषक व्यारा अग्रिम के प्रतिसंवाय के लिए विहित प्ररूप में करार निष्पादित किए जाने पर संदेय होगी । ऐसे सभी मामले, जिनमें अग्रिम का भाग भूमि का क्रय करने के लिए दिया गया है, उस तारीख से दो मासों के भीतर जिसको उपरोक्त 15 प्रतिशत रकम ली गयी हो या ऐसे अतिरिक्त समय के भीतर जैसा अध्यक्ष इस निमित्त अन्जा दे भूमि को क्रय किया जाना चाहिए और उसकी दावत विकय विलेख निरीक्षण के लिए अध्यक्ष को प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिसके न हो सकने पर आवेदक बोर्ड की संपूर्ण रकम उन पर क्याज सिहता तुरन्त दापस करने के लिए दायी होगा ।
 - (2) अप्रिम के अतिशोष के 25 प्रति शर्त के समतुल्य रकम आघेदक को, उसके द्वारा ऋय की गई भूमि को उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह के साथ, बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा बंधक किए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विक्रय निबंधनों द्वारा अनुजात है, संदेय होगी। ऐसे मामलों में, जहां ऐसा बंधक अनुजात नहीं है, बिनि-धम 7 के उपविनियम (1) के खण्ड (2) में अन्तर्विष्ट उपबन्ध लागू होगा।
 - (3) अग्रिम की मंजूर रकम में से, भूमि के ऋय के लिए बी गयी किस्त की कटौती करने के पश्चात् अविशष्ट रकम के 30 प्रतिशत के समत्र्ल्य रकम तब संदेय होगी जब गृह का संनिमाण प्लिथ की ऊंचाई तक पहुंच गया हो।

- (4) अग्निम की मंजूर रकम में सं, भूमि के क्रय के लिए दी गयी किस्त की कटौती करने के पश्चात् अवशिष्ट रकम के 25 प्रतिशत में अगिधक और रकम तक संदेय होगी जब पहली मंजिल की छत डाल दी गयी हो ।
- (5) मेजूर अग्रिम का अतिशंघ तब भेदं<mark>य होगा</mark> जब दूसरी मंजिल की छत डाल दी गयी हो ।
- (4) क्वेंबल दो मंजिले नए गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह में आवास स्थान की वृद्धि के लिए अपेक्षित अग्रिम निम्न-लिखित रूप में संदत्त किया जाएगा, अर्थात् :—
 - (1) मंजूर किए गए अग्रिम के 25 प्रतिशत के समतुल्य रकम आबदक को, उसके द्वारा ऋय की गयी भूमि को उस पर बनाए जाने वाले गृह के साथ बोर्ड के पक्ष मं उसके द्वारा बंध किए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विऋय के निबंधनों द्वारा अनुआत है, संदेय होगी । ऐसे मामलों में, जहां ऐसा बन्धक अनुज्ञात नहीं है, विनि-यम 7 के उपिंचिनयम (2) के खण्ड (1) में अन्तर्विष्ट उपबन्ध लाग् होगा।
 - (2) मंजूर किए गए अग्निम के 30 प्रतिशत सं अनिधक और रकम तब संदेय होगी जब गृह प्लिंथ तक पहुच गया हो।
 - (3) मंजूर उधार के 25 प्रतिशत से अनिधिक और रकम तब संदेय होगी जब पहली मंजिल की छत डाल दी गयी हो ।
 - (4) मंजूर अग्निम की अवशिष्ट 25 प्रतिशत रकम तब संदेय होगी जब दूसरी मंजिल की छत डाल दी गयी हो ।
- (5) पहले से निर्मित गृह का ऋय करने के लिए अपेक्षित अग्रिम निम्नितिखित रूप में सेंद्रत किया जाएगा —

अध्यक्ष आवंदक द्वारा अपेक्षित और उसं अनुज्ञेय सम्पूर्ण रक्षम का संदाय आवंदक द्वारा उधार के प्रतिसंदाय के लिए विहित प्ररूप में एक करार निष्यादिस किए जाने पर एक मृश्त मंजूर कर सकता है। गृह का अर्जन उधार के निकाले जाने के तीन मास के भीतर पूर्ण किया जाना चाहिए और गृह नोर्ड को बंधक किया जाना चाहिए, जिसके म हो सकने पर अग्निम, उस पर ब्याज सहित, जब तक कि उस समय मीमा का विस्तार अध्यक्ष द्वारा अनुज्ञात ए किया गया हो, बोर्ड को तुरन्त वापस किया जएगा।

- (6) नए फ्लैंट का ऋय/संनिर्माण करने के लिए अपेक्षित अग्रिम निम्निलिखित रूप में संदत्त किया जाएगा :—
 - (क) अध्यक्ष आवेदक द्वारा अपेक्षित और उसे अनुज्ञंय रकम के संदाय की मंजुरी आवेदक द्वारा विहित प्ररूप में एक करार निष्पादित किए जाने पर और उधार के प्रति-संदाय के लिए नीचे के उपनियम 6(रू) (2) मं अन्त-विष्ट उपबन्धों का पालन करने पर द सकेगा । रकम या तो एक मुक्त या अध्यक्ष के विवेक पर उपस्कत किस्ती मों संवितरित की जा सकेगी। आवेदक द्वारा इस प्रकार निकाली गयी रकम या इस प्रकार निकाली गयी किस्त्/ किस्तों को उसी प्रयोजन के लिए जिसके लिए वह निकाली गयी है, अग्रिम या किस्त/किस्तों के निकाले जाने के एक मास के भीतर उपयोग मं लाया जाएगा जिसके न हो सकने पर इस प्रकार संवितरित अग्रिम या अग्रिम का भाग, उस पर ब्याज सहित, जय तक कि उस समय सीमा का विस्तार अध्यक्ष द्वारा विनिर्दिष्ट रूप मंजूर न किया गया हो, बोर्ड को स्रन्त वापस किया जाएगा ।

- (स) (1) उनके द्वारा ऊपर के सण्ड (क) में निर्दिष्ट करार और बंधक विलंस निष्पादित किए जाने के अतिरिक्त निम्नलिसित तीन प्रवगों के आवेदकों से मंजूर अग्निम या उसके किसी भाग को उन्हें बास्तव में सेन्तिरित किए जाने के पूर्व बोर्ड के किसी अनुमोदित स्थायी कर्मचारी की प्रतिभृति विहित प्ररूप में देने की भी अपक्षा की जाएगी, अर्थात्:—
 - (1) ऐसे सभी आवंदक, जो बोर्ड कं स्थायी कमंचारी नहां हैं.
 - (2) ऐसे सभी आवंदक जो किसी अग्रिम के अन्दान के लिए आवंदन की तारीख के पश्चात्वर्ती 18 मासों की अधिष के भीतर संवा से निवृत्त होने वाले हैं।
 - (3) ऐसे सभी आवेदक, जो बोर्ड कं स्थायी कर्मचारी है किन्तु जो ऊपर के खण्ड (2) की परिधि में नहीं आतं है यदि वे पूर्व निर्मित गृह का ऋय करने के लिए अग्निम की अपक्षा करते हैं।

दिष्पण .—(1) फ्लैटो का संनिर्माण के लिए या पहले से मंनिर्मित फ्लैटो का अध्य करने के लिए आवेदक को , उपर के खण्ड (क) और (ख) (1) में अन्तर्विष्ट उपबन्धों का अनुपालन करने के अतिरिक्त , जब भी वह भूमि , जिस पर फ्लैट बने हों , भूमि के स्वामी द्वारा अग्रिम के प्रतिसंदाय के लिए प्रतिभूति के खप में बोर्ड के पक्ष में बन्धक न की गयी हो गाधारण वित्तीय नियमों के संग्रह के नियम 274 के अधीर यथा अधिकथित पर्याप्त संपार्शिवक प्रतिभृति अध्यक्ष के समाधानप्रद रूप में देनी चाहिए ।

- (2) प्रतिभूति का दायित्व सीनिर्भित/क्रय किए गए गृह के बोर्ड को बंधक रहने तक या अग्रिम का उन पर देय ब्याज सिंहत, बोर्ड को प्रतिसंदाय किए जाने तक, उसमें से जो भी पहले हो, जारी रहेगा।
- (3) अग्निम का उस प्रयोजन से भिन्न जिसके लिए वह मंजूर किया गया है किसी अन्य प्रयोजन के लिए उपयोग कर्मचारी को स्वसंत आचरण विनियम है अधीन या कर्मचारी को लागू सेवा के किन्हीं अन्य विनियमों के अधीन उपयुक्त अगुशासिनक कार्यवाही के दायित्वाधीन बनाएगा । उससे, उसके द्वारा लिया गया संपूर्ण अग्निम, उस पर उद्भूत ब्याज महिता, इन विनियमों के विनियम 8 के अनुसार तुरन्त बोर्ड को वापस करने के लिए भी कहा जा सकेगा ।
- (4) विनियम 7 के उपियनियम (1) (1) और (3) (1) में निर्दिष्ट भूमि के विक्रिंसत फ्लैटों की बाबत विक्रय विलेख प्रस्तृत करने की अविधि में विस्तार अध्यक्ष द्वारा अपना यह समाधान करने के पश्चात् किया जा सकेगा कि आवेदक ने भूमि की लगत या तो पहले ही सदत्त कर दी है या तुरन्त संदेश किए जाने की संभावना है, समय सीमा का विस्तार उसे भूमि के लिए हक/पट्टा धृति अधिकार अर्जित करने में समर्थ बनाएगा, और उसका गृह निर्माण करने का पूर्ण आशय है और बहु अग्रिम की प्रथम किस्त के निकाले जाने की तारीक के पश्चात् 18 मासों में या ऐसी अविध में जिस तक गृह को पूर्ण किए जाने के समय का विस्तार विनियम 9 के उपिविनयम (क) खण्ड (2) के अधीन किय गया है, गृह का संनिर्माण पूर्ण करने की स्थित में होगा ।
- 8. ब्याज :—इन विनियमों के अधीन अनुदत्त अग्निम पर, अग्निम के संदाय की तारीख सं, साधारण ब्याज लगेगा । ब्याज की रकम प्रतिमास की अंतिम नारील को वकाया अतिशेष पर संगणित और जैसा समय-समय पर, बोर्ड व्वारा नियत किया जाए, होगी किन्त् केन्द्रीय सरकार व्वारा, समय-समय पर अपने कर्मचारियों के लिए वैसे ही अग्निमों के लिए प्रभारित दर से कम नहीं होगी ।

- 9. संनिर्माण रख-रहाव आदि (क) यथास्थिति गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह मं निवास स्थान मं वृद्धि (1) उस अनुमोदित रेखांक और विनिर्दाशों के ठोक ठीक अन्हण की जाएगी जिसके आधार पर अग्निम की रकम संगणित और मंजूर की गई थी। रेखांक और विनिर्देशों से कोई अन्तर बोर्ड की पूर्व सम्मित के बिना नहीं किया जाना चाहिए। कर्मचारी जब यह प्लिथ/छत की ऊंचाई तक वास्तव में पहुंच गया है और पहले निकाली गयी रक्षम गृह के संनिर्माण में वास्तव में उपयोग मं लाई गयी है। अध्यक्ष यदि आवश्यक समक्ते, प्रमाणपत्रों की सहयता के सत्यापन के लिए जांच किए जाने की व्ययस्था कर सकेगा।
 - (2) उस तारीख सं, जिसको अग्निम की किन्त संबंधित कर्मचारी को संदेश्त की गयी है, 18 मास के भीतर पूरी की जाएगी। ऐसा न किए जाने पर कर्मचारी उसे अग्निम दी गयी संपूर्ण रक्षम उन पर ऊपर के विनियम 8 के अग्नुसार संगणित ब्याज सहित एक मृश्त बापम करने का दायी होगा। समय सीमा में किसी विस्तार की अग्नुजा अध्यक्ष व्यारा एक वर्ष के लिए और बोर्ड द्वारा दीर्घतर अविध के लिए उन मामलों में दी जा सकेंगी जहां कार्य में विलम्ब कर्मचारी के नियंत्रण के बाहर की परिस्थितियों के कारण हुआ हो। गीनिर्माण के पूरा होने की गारीख की रिपोर्ट अध्यक्ष को अधिलम्ब की जानी चाहिए।
 - (स) यथास्थिति गृह के पूर्ण होने या ऋष किए जाने पर त्रन्त संबंधित कर्मचारी गृह का बीमा, अपने स्थयं ही के सर्च पर, भारत के जीवन बीमा कम्पनी के साध या किसी रजिस्टोकत सामान्यः बीमा कंपनी के साथ ऐसी राज्ञि के लिए कराएगा जो अग्निम की रकम से कम न हो और उसे आग, बाढ़ और बिजली गिरने के कारण हानि के विरुद्ध तस तक इस प्रकार बोमा-कृत कराए रखेगा जब तक कि अग्रिम ब्याज महित, बोर्ड की पूर्णतः न जीतमंदत्त कर दिया जाए और पालिसी को बोर्ड के पास निक्षिप्त रखेगा । प्रीमि-यम नियमित रूप से संदत्त किया जाना चाहिए और प्रीमियम की रसीद समिचन प्राधिकारी, उदाहरणार्थ अध्यक्ष दबारा निरीक्षण किए जान के लिए प्रस्त्त की जानी चाहिए । कर्मचारी की ओर से जाग, बाढ़ और बिजली गिरने के विन्द्ध बीमा कराने में असफलता पर बोर्ड के लिए संबंधित कर्मचारी की लागत पर उक्त गृह का शीमा कराना और प्रीमियम की रकम को अग्रिम की बकाया रकम में जोड़ना विधि सम्मत होगा किन्त् बाध्यताकारी नहीं होगा और कोई कर्मचारी जब तक रकम बोर्ड को प्रति-संदल्त नहीं कर दी जाती उस पर ब्याज की चाल दर पर ब्याज का संदाय करने के लिए वैसे ही दायी होगा मानों प्रीमियम की रकम उपरोक्त अग्रिम के भाग के रूप में अग्निम दी गयीथी। अध्यक्ष विधिक मलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी अग्रिम निकालने वाले कर्मचारी से उस बीमाकर्ता के लिए जिसके साथ गृष्ठ का बीमा किया गया (प्रकृप सं. यथाबिहित) एक पत्र पश्चात्वर्ती को यह तथ्य स्चित करने के लिए अभिप्राप्त करेगा कि बोर्ड लो गयी बीमा पालिसी में हितबद्ध है, अध्यक्ष/बित्तीय सलाहकार एवं ग्रूप लेखा अधिकारी बीमाकर्ता के लिए अग्रीयत करेगा और उसकी अभिस्वीकृति प्राप्त करेगा । वार्षिक आधार पर प्रभावी भीमा के मामले में यह प्रक्रिया तब तक दहराई जानी चाहिए जब तक

- अग्रिम की सम्पूर्ण रकम बोर्ड को प्रतिसंदत्त न कर दी जाए।
- (ग) गृह को संबंधित कर्मचारी को अपने स्वयं के खर्चे पर अच्छी भरम्मत हालत में रखना चाहिए। वह उसे सभी चिल्लंगमों से मुक्त रखेगा और जब तक अग्निम बोर्ड को पूर्णतः प्रतिसंदत्त न कर दिया जाए सभी नगरपालिक और अन्य स्थानीय रेट और कर निय-मित रूप से संदत्त करता रहेगा।
- (घ) गृह कं पूर्ण होने के पहचात् उसके वार्षिक निरीक्षण अध्यक्ष कं अनुदेश के अधीन किसी प्राधिकृत अधि-कारी द्वारा यह सूनिरिचत करने के लिए किए जा सकेंगे कि उसे जब तक अग्रिम का पूर्ण रूप से प्रति-संदाय नहीं कर दिया जाता है अच्छी मरम्मत की दशा मे रखा गया है। संबंधित कर्मचारी इस प्रयोजन के लिए अभिविह्ति अधिकारी (अधिकारियों) द्वारा ऐसे निरीक्षण करने के लिए आवश्यक स्विधाएं देगा।

हिष्पण — भिष्या प्रमाणपत्र देना संबंधित कर्मचारी की, उसे लागू सेवा के विनियमों के अधीन अन्दासिनक कार्यवाही के लिए दायी बनाएगा। उससे, उसके द्वारा निकाल गए सम्पूर्ण अग्रिम को उस पर उद्भूत ब्याज सिहत इन विनियमों के विनियम 8 के अनुसार बोर्ड को त्रन्त वापस करने के लिए भी कहा जा सकेगा।

10. अग्निम का प्रतिसंदाय — (क) इन विनियमों के अधीन किसी कर्मचारी को अनुदत्त अग्निम, उन पर ब्याज सहित, 20 वर्षों के अनिधक अवधि के भीतर मासिक किस्तों में पूर्णतः प्रतिसंदत्त की जाएगी । प्रथमतः अग्निम की वसूली 180 मासिक किस्तों से अनिधक मा की जाएगी और तब ब्याज 60 मासिक किस्तों में अनिधक मा बसूल किया जाएगा।

दिष्यण -- (1) मासिक रूप में बसूल की जाने वाली रकम पूण रुपयों में नियत की जाएगी, सिवाय अंतिम किस्स के मामले में , जब अविशिष्ट अतिशोष , जिसमें रुपए का कोई भाग सम्मिल्लित है बसूल किया जाएगा ।

- (2) भारतः भूमि का क्रय करने के लिए और भारतः मंनिर्माण के लिए अन्दत्त अग्निम की बसूली गृह के पूर्ण होने के पश्चात्वती, माम के बेतन से या उस लारीख के पश्चात् के जिसको भूमि का क्रय करने के लिए किसन कर्मचारी को संदत्त की जाती है 24वें मास के बेतन से, इसमें में जो भी पूर्ववती को प्रारम्भ होती। किसी नए गृह के स्तिर्माण के लिए या किसी ग्रिंद्यमान गृह के निवास-स्थान की दृद्धि के लिए अगुदत्त अग्निम की बसूली गृह में पूर्ण होने के पश्चात्वती मास के बेतन से या उस नारीख के पश्चात् जिसको कर्मचारी की अग्निम की प्रथम किस्त संदत्त की जाती है, 18वें मास के बेतन से इसमें जो भी पूर्ववती हो, प्रारम्भ होगी। पहले ही निर्मित गृह का क्रय करने के लिए, दिए गए किसी अग्निम के मामले में बसूली उस मास के पश्चात्वती मास के बेतन से प्रारम्भ होगी जिसमें अग्निम लिया गया है।
- (3) कर्मचारी रक्षम का संदाय किसी लघुतर अविध में करने के लिए, यदि वह ऐसा करना चाहे, स्वतन्त्र होगा । किसी भी मामले में संपूर्ण अग्रिम उस तारीख़ के पूर्व, जिस्को वे सेया-निवृत्त होने बाले हों, पूर्णतः (उन पर ब्याज महिला) प्रतिसंदत्त किया जाना चाहिए ।
- (4) किसी ऐसे कर्मचारी को, जो अग्निम के अनुवान के लिए आवेदन की तारीख से भीस वयों के भीसर सेवा निवृत्त होने बाला हो और जो उसे लागू सेवा विनियम के अधीन किसी उपदान या मृह्य और मेवा निवृत्ति उपदान के अनुवान के लिए पात्र हो

असम्यक कठोरता से बचने के लिए अध्यक्ष उसे, उसकी सेवा की बची हुई अविधि के दौरान सृविधाजनक मासिक किस्तों में (किस्तों की रकम उससे कम नहीं होगी जो बीस वधीं की अविधि के भीतर प्रतिसंदाय के आधार पर निकाली गयी हो) अग्निम का, व्याज सिहत, प्रतिसंदाय करने की अनुज्ञा दे सक्गा परन्तू यह तब जब कि वह चिहित करार और बन्धक बिलेख प्ररूप में इस प्रभाव का कोई उपयुक्त खण्ड सिमिलित किए जाने के लिए सहमत हो कि बोडे उक्त अग्निम का अतिशेष, व्याज सिहत, जो उसक सेवा निवृत्ति या संघानिवृत्ति के पूर्व मृत्यु के समय असंदत्त रह ग्या हो उसके सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिदिष्ट भाग में से, जो उसे मंजूर किया जाए, वसूल करने के लिए हकदार होगा।

- (5) ऐसे मामले मंं, जहां कर्मचारी बोर्ड को दिए गए अग्रिम का अतिशेष उसकी सेवा निवृत्ति को तारीख के पूर्व प्रतिसंदत्त नहीं करता है तो बोर्ड तत्पश्चात् किसी समय बंधक की प्रतिभूति को प्रवृत्त करने के लिए और दिए गए अग्रिम के अतिशेष को, ब्याज और वसुली की लागत सिहस, गृह का विक्रय करके या ऐसी अन्य रीति सं, जो विधि के अधीन अनुझेय हो, वसूल करने के लिए स्वतन्त्र होगा।
- (ख) अग्रिम की वसूली यथास्थिति अध्यक्ष या संबंधित वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखाअधिकारी द्वारा संबंधित कर्मचारी के मासिक वेतन/छुट्टी वेतन/निवांह भत्त बिलों के माध्यम से का जाएगी । चस्ली अध्यक्ष की पूर्व सम्मित के सिवाय विधारित या रोकी नहीं जाएगी । कर्मचारी के लम्बे निलंबर पर होने के कारण, संवेय निर्वाह भत्ता में कभी कर दिए जाने की दशा में वसूली में अध्यक्ष द्वारा, यदि वह आवश्यक समभ्रे, उपरोक्स रूप में कमी की जा सकेंगी।
 - (ग) यदि कोई कर्मचारी अग्रिम का पूर्ण रूप से प्रतिसंदाय किए जाने के पूर्व सामान्य सेवा निवृत्ति/अधिवधिवता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रह जाता है या यदि उसकी मृत्युहो जाती है तो अग्निम की सम्पूर्ण बकाया रकम बोर्ड को तुरन्त संदेय हो जाएँगी बोर्ड उपरोक्त मामलों में यथास्थिति सम्बन्धित कर्मचारी उसके हित उत्तराधिकारी को या विनियम 7(ख) के अन्तर्गत आने वाले मामले में प्रति-भूजों को, यदि उस समय तक गृह पुरा नहीं किया गया है, या बोर्ड को बन्ध नहीं किया गया है, बकाया रकम को, विनियम 8 के अनुसार संगणित उन पर ब्याज सहित, उपयुक्त किस्तों में प्रतिसंदत्त करने के लिए अनुज्ञा देसकेगा। किसी भी कारण से अग्रिम के प्रतिसंवाय के लिए (यथास्थिति) सम्बन्धित कर्म-चारी या उसके उत्तराधिकारियों की और से कोई असफलता बोर्ड को बन्ध को प्रवृत्त करने के लिए और बकाया रकम की वसूली करने के लिए ऐसी अन्य कार्य-याही करने के लिए, जो अनुज्ञेय है, हकदार बना-एगी ।
 - (घ) बोर्ड को बन्धक की गई सम्पत्ति, अग्निम का, उन पर ब्याज सिहत, बोर्ड को पूर्ण रूप से प्रतिसंदाय कर दिए जाने के पश्चात् सम्बन्धित कर्मचारी का (या यथा-स्थिति उसके हित उत्तराधिकारियों को) विहित प्ररूप में प्रतिहस्तातरित की जाएगी।
 - आबेदनों पर कार्यवाही करने की प्रक्रिया :—(क) आवेदन कर्मचरियों द्वारा अध्यक्ष को विहित प्ररूप में (दो) प्रतियों में) उचित प्रणाली से दी जानी चाहिए।

- आवेदन के साथ निम्नलिखित दस्तावेजें होंगी, अर्थात्:-
- (1) आवेदन करने के समय आवेदक के या आवेदक की पत्नी/पित/अवयस्क सन्तानों के स्वामित्वाधीन यदि काई ग्रह/समपित्त हो, उसकी बाबत घोषणा,
- (2) यदि अग्रिम किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि के लिए अपेक्षित है तो विक्रय विलेख की, साथ ही ऐसी अन्य दस्तावेजों की यदि कोई हो, एक प्रमाणित प्रति जो यह सिद्ध करती हो कि आवेषक प्रवन्गत सम्पत्ति में अविवास हक रखता है। स्थान रेखांक भी प्रस्तृत किया जाना चाहिए।
- (3) ऐसे मामले में, जहां आवेदक का भूमि पर कब्जा है और वह उस पर नए गृह का निर्माण करना चाहता है वहां विक्रय विलेख की एक प्रति या उस भूमि पर, जिस पर गृह निर्माण किए जाने की प्रस्थापना है, आवेदक के स्पष्ट हक रखने का अन्य सबूत, स्थल रेखों के साथ यदि वह भूमि पट्टाधृति हो तो पट्टा विलेख की एक अनुप्रमाणित प्रति भी उपाबद्ध की जानी चाहिए।
- (4) ऐसे मामले में अहां आवेदक भूमि का ऋष करना चाहता है, प्लाट के विकेता का इस प्रभाव के पत्र की एक अनुप्रमाणिल प्रति कि व्यवस्थापन और कीमत के संदाय किए जाने के अधीन रहते हुए वह उसके पत्र की तारीख से वो मास की अविध के भीतर आवेदिक की भूमि के स्पष्टतः सीमांकित विकसित प्लाट का रिक्त कब्जा हस्तांतरित करने की स्थिति में है, अग्रेषित की जा सकेगी।
- (5) ऐसे मामलों में, जहां आवेदक कोई फ्लैट क्रय करना चाहता है, फ्लैट के विक्रेता से इस प्रभाव के पत्र, की एक अनुप्रमाणित प्रति की व्यवस्थापन और कीमत का संदाय किए जाने के अधीन रहते हुए वह उसके पत्र की तारीख से दो मास की अवधि के भीतर आवेदक को स्पष्टत: सीमांकित फ्लैट का रिक्त कब्जा हस्तांतरित करने की स्थिति में है, अग्रंषित की जा सकेंगी।
- (ल) विभागों के अध्यक्ष आवेदक की जांच करेंग और उसमें किथत तथ्यों आदि की सुरक्षा के बारे में अपना समाधान करेंगे। वे ऊपर के उप विनियम (क) का अनुपालन करने में किए गए हक विलेखों, आदि से यह भी सुनिष्टित करेंगे कि आवेदक प्रश्नात सम्पत्ति में स्पष्ट हक रखता है। यह करने के पश्चात विभागों के अध्यक्ष आवेदनों को, अपनी सिफारिशों के साथ, अध्यक्ष को अग्रेषित करेंगे।
- (ग) अध्यक्ष का कार्यालय, निष्ठि के उपलभ्य होने के अध्य-धीन रहते हुए, आवेषनों पर कार्यवाही करने के लिए अधिकिथत पूर्विकताओं, आदि, यदि कोई हों, के प्रति निर्देश से आवेदनों की परीक्षा करेगा।
- (घ) (1) अनुमोदन के पहचल, नीचं के उप-विनियमों (ड) की परिधि में अने वाले मामलों में किसी अग्नि के अनुदान की प्रारुपिक मंजूरी अध्यक्ष द्वारा दी जाएगी, जो बोर्ड द्वारा अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार विधि अधिकारियों और राजस्व सथा रिजस्ट्रीकरण प्राधिकारी में परामर्श करके अपना यह समाधान करेगा कि

आवेदक, विल्लंगमों और किर्कां से मुक्ति रूप में सम्पत्ति पर वास्तव में स्पष्ट और विषण्य हक रखता है। अध्यक्ष विहित प्रारूपिकताओं का जैसे कि करार, बंधक विलेख, प्रतिभृति बंधपत्र, आदि का निष्पादन करता है जहां आवश्यक हो, समुचित विधि/प्राधिकारी से परामर्श करके विहित प्ररूप में परा करने की व्यवस्था करेगा और जब मंजूर अग्रिम की समिषित रकम की आवेदक को सवित-रित करने को प्राधिकत करेगा। जहां भूमि या पहले से निर्मित गृह का ऋय अग्रिम की सहायशा से किए जाने का आशय हो वहा अध्यक्ष अग्निम का संदाय प्राधिकृत करने के पूर्व सम्बन्धित कर्मचारी से यह प्रमाणित करने की अपेक्षा भी कर सकेगा कि ऋय के लिए बातचीत अन्तिम प्रऋग में पहुच गई है, ऋय का कीमतों के भंजूर अग्निम की रक म से कम होने की सम्भावना नहीं है और उसने अपना यह समाधान कर लिया है कि संव्यवहार उसे प्रश्तिगत भूमि/गृह के लिए विवास हक अर्जित करने में समर्थ बनाएगा ऐसे मामलों में ऋय विलेख आदि की परीक्षा अध्यक्ष द्वारा (जहां आवश्यक हो विधि और अन्य प्राधिकारियों से परामर्श करके) स्निश्चित करने के लिए सावधःनीपृर्वक करनी चाहिए कि सम्बन्धित कर्मचारी ने प्रश्नगत सम्पत्ति में अविवासक हक फ्लेटों के मागली में भूमि केप्लाट के लिए हक को अप-विजिल करते हुए वास्तव में अिंगत कर लिया है। यह भी सत्यापित किया जाना चाहिए कि कय की गई भूमि /गृह का बाजार मृल्य मंजुर अग्निम से कम नहीं है।

(2) अध्यक्ष किसी नए गृह का संनिर्माण करने या किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि करने के लिए इच्छुक आवेदकों की रेखाकी साथ ही विनि-देशों और प्राक्कलनों की दो प्रतियां विहित प्ररूप में प्रस्तुत करने का अन्देश देगा । रेखांकी को अध्यक्ष को प्रस्तुत किए जाने के पूर्व संबंधित नगर-पालिका या अन्य स्थानीय निकाय द्वारा सम्यक् रूप से अनमोदित किया जाना चाहिए ।

(ड.) उपरोक्त उपविनियम (स) (2) में निर्दिष्ट रेखांकी विनिदेशों और प्राक्कलनों को उस यिषय पर पूर्ववर्ती पत्राचारों के प्रति निर्देश से अध्यक्ष को निर्दिष्ट किया जाना चाहिए । अध्यक्ष वित्तीय सलाहकार एवं मस्य लेखा अधिकारी से परामर्श करके इन सभी ब्यौरों की परीक्षा करने के पश्चात अग्निम के अन्दान के लिए प्राकृषिक मंजरी देगा । अध्यक्ष उपरोक्त उपविनियम (घ) (1) में स्पष्ट की गई सभी प्रारुपिकताओं का अन्-पालन भी करेगा और सब आवेदक को संनिर्माण के प्रयोजन के लिए अग्रिम की अवशिष्ट किस्तों का संवाय आवेदकों द्वारा दिए जाने वाले विनियम १ (क) में यथाविहित प्रमाणपत्रों के और ऐसे अन्वेषणों के जो आवश्यक समभे जाएं, आधार पर सीधे अध्यक्ष द्वारा प्राधिकत किए जा सकेंगे। अग्रिम के अन्तिम किस्त के संवितरण के पूर्व यह भी सत्यापित किया जाना चाहिए कि स्थल का विकास पूरा हो गया है (देखिए उपरोक्स विनियम 7)।

टिप्पण :—विनियम 2 के उप-विनियम (घ)(1) या (ङ) में यथाविहित अग्निम की किसी किस्त का संवितरण प्राधिकृत करते समय अध्यक्ष इस प्रभाव का एक

प्रमाण-एक संलग्न करेगा कि उन अपेक्षित प्रारुपिक-ताओं को, जिनके अनुसरण में किस्त देय हो गई हो, अनुपालन किया गया है।

- (च) अध्यक्ष यह भी सुनिश्चित करेगा कि संव्यवहार/गृह का संनिर्माण विनियमों में बिह्त अवधि के भीतर पुरा हो गया है, और—
 - (1) चिनियम 7 के उप-विनियम (1) और (3) की परिधि में आने वाले मामलों में (उन मामलों के सिवाय जिनमें विद्यमान गृष्टों में निवास स्थान की वृद्धि अंतर्वेलित हैं) बिहित प्ररूप में करार, अग्निम की प्रथम किस्त का संवितरण किए जाने के पूर्व, संबंधित कर्मचारी द्वारा सम्यक् रूप से निष्पादित किया गया है और भूमि का क्रय किए जाने के पश्चात विक्रय दिलेक विहित रूप में निष्पादित किया गया है और हस्तांतरण पत्रों के रिजस्ट्रार के कार्यालय में सम्यक्रप से रिजस्ट्रीकृत किया गया गया है और रिजम्ट्रीकृत दिलेख भूमि के हक के मूल दस्तावेजों के साथ, अध्यक्ष के पास अग्निमों की दिवतीय किस्त के निकाले जाने के पूर्व निक्षिप्त किया गया है।
 - (2) विनियम 7 के उप-विनियम (2) और (4) की परिधि में आने वाले मामलों में और विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि को अन्तर्वितित करने वाले सभी मामलों में बंधक विलेख विहित प्ररूप में निष्पादित किया गया है और हस्तांतरण पत्रों के रिजस्ट्रार के कार्यालयों में रिजस्ट्रीकृत किया गया है तथा अग्रिम की प्रथम किम्त के निकाले जाने के पूर्व रिजस्ट्रीकृत विलेख को, भूमि/गृह के हक के मूल दस्तावेजों के साथ, अध्यक्ष के पास निकाल किया गया है।
 - (3) चिनियम 7 के उप-विनियम (5) की परिधि में आने वाले मामलों तथा उन मामलों में, जिनमें भीम के विकाय के निबंधन, जब तक भूमि पर गृह बनान दिया जाए, कर्मचारी के हक निहित नहीं करते हैं, विहित प्ररूप में करार, मंजूर अग्रिम या उसके किसी भाग के संवितरण के पूर्व, निष्पादित किया गया है और अध्यक्ष के पास निक्षिप्त किया गया है। गृष्ठ का ऋय करने पर त्रन्त या गृह के बिना लिए जाने पर कर्मचारी के पक्ष में हक के निहित हो जाने के परचात तरन्त विहित प्ररूप में बंधक विलेख निष्प-वित किया जाएगा और हस्तांतरणपत्रों के रजिस्टार के कार्यालयों में रिजस्ट्रीक्त किया जाएगा। रिज:-स्ट्रीकृत विलेख, भूमि/गृह के हक की दस्तावेजों के साथ, अध्यक्ष के पास, विनियम 7 के उप-विनियम (5) की परिधि में आने वाले मामलों में अग्रिम के निकाले जाने के तीन मास के भीतर और इस उप-विनियम के अधीन आने वाले अन्य मामलों में कर्म-चारी के पक्ष में हक के निहिल होने की तारीख के और बंधक विलेख के रिजम्द्रीकरण के लिए अपेक्षित समय के तीन मास के भीतर निक्षिप्त किया जाएगा ।
 - (4) विनियम 7 के उप-विनियम (8) (स) (1) की परिधि मों आने वाले मामलों मों प्रतिभृति बंधकपत्र मंजूर अग्निम या उसके किसी भाग का संवितरण किए जान के पूर्व विहित प्ररूप मों अनुमोदित स्थायी कर्मचारी हारा दिया गया है।

- (5) सभी उपरोक्त सामलों में कर्मचारी हंश जिलेलों के निष्पादित किए जाने के पूर्व संस्पत्ति के लिए अपने विषण्य हक को बोर्ड द्वारा दिहित प्रक्रिया के अन्सार सिद्ध करता है। ऐसे सामलों में जहां विक्रय के निबंधन, जब तक भूमि पर गृह न बना लिया जाए, कर्मचारी के पक्ष में करार के निष्पादित किए जाने के पूर्व यह मुनिश्चित किया जाएगा कि कर्मचारी गृह बना लेने पर सभी विल्लंगमों और कुकियों से मूक्त रूप में, स्पष्ट और विषण्य हक अधिन करने की स्थित में होगा।
- (6) बन्धक विलेख (और बन्धक से सम्पत्ति निर्मोचिक या प्रति-हस्तांतरित होने पर प्रति-हस्तांतरिक होने पर प्रति-हस्तांतरिक विलेख) भारतीय रिवस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 की 16) की धारा 23 की अपेक्षा अनुसार उसके निष्पादित किए जाने की तारीस से चार माम के भीतर सम्यक् रूप से रिजिस्ट्रोकृत किया जाता है और इन उपवन्धों के अनुसरण में कर्मचारी द्वारा निक्षिप्त सभी दस्तावेजों बन्ध से सम्पन्ति के निर्मोधित या प्रति हस्तांतरित किए जाने तक सुरक्षित अभिरक्षा में रखी जाती हैं (इन विनियमों में विहित्त प्रतिभूमि बन्धपत्रों और करारों के मामलों में रिजिस्ट्रीकरण आवश्यक नहीं है),
- (7) गृह उसके क्रय के किए जानं/पर किए जाने पर त्रन्त उपरोक्त विनियम 9(क्ष) में उपदिशा रीति मों बीमाकृत किया जाता है और प्रीमियम की रसीदें नियमित रूप से निरीक्षण के लिए प्रस्तूल की जाती हैं।
- (8) जब तक अग्निम पूर्णतः प्रतिसंदत्त नहीं कर दिया है गृह अच्छी मरम्मत की हालत में रखा जाता है और आवश्यक बीमा प्रीमियम, नगरपालिक रैंटें और कर नियमित रूप में संदत्त किए जाते हैं और अपे-क्षित प्रमाणपत्र वार्षिक रूप से प्रस्तृत किए जाते हैं,
- (9) अग्निम के प्रतिसंदाय की किस्तों की मासिक वसूली सम्यक् तारीख से प्रारम्भ होती है और तत्परचात् संबंधित कर्मचारी के मासिक वेतन/छूट्टी वेतन/ निर्वाह भत्ता बिलों से नियमित रूप मे की जाती हैं,
- (10) ऐसे कर्मचारी के मामलों में जिसके लिए उसके आवे-दन की तारीख से अट्ठारह मास के भीतर सेटा निवत्त होने की संभावना हो (जिनियम 7(ख) देखें) उसके उपदान की रकम पर्याप्त होनी जाहिए, जिससे उसकी सेट्ठा-निवृत्ति की तारीख के ठीक पूर्व उसके प्रति बकारा अग्रिम के अतिशेष को प्रा किया जा सके।

- (11) उपगत ब्यय से अधिक निकाली गई रकम, उस पर देय ब्याज सहित, यदि कोई हो, त्रस्त बोर्ड को भैम्बन्धित कर्मचारी द्वारा प्रतिदत्त की जाती हैं।
- (12) बोर्ड को बन्ध की कोई सम्पन्ति, अग्रिम और उसै पर उसै पर क्यांज की पूर्ण केंप से प्रतिसंदाय करेंसे पर त्रंपत्त निमोचित था प्रतिहरूतोतिरित की जाती है और बंध विलेख सम्यक्षा का से रद्द किए। जाता है और संबंधित कर्मचारी को भूभि केंगिति के हुँकों के मूल दस्तावेंजों सहित वापम किया जाता है।
- (छ) ज्याय और गृह को पूरा करने की प्रगति की देसरें के लिए अध्यक्ष को समर्थन बनाने के लिए विभाग की अध्यक्ष त्रीमासिक विवरणियां भेजेगा जिसमें (1) इन विनियमों के अधीन जनके द्वारा उपगत व्यय के अंकों, (2) जन कर्मचारियों की हुंची, जिन्हें जय त्रीमासिक के दौराने गृह निर्माण अग्निम की अन्तिम किस्त, संवितरित की गई थी, अन्मोदनों का प्रतिनिवेश देते हुए, और (3) पूरे किए गए गृहों की सूची दिशास करते हुए इस प्रकार भेजेगा जिससे वह उस त्रीमासिक के, जिससे विवरणियों का सम्बन्ध है, पश्चात्वतीं महीनों के 10 दिन के भीतर अध्यक्ष के पास पहुंच जाए। शून्य विवरणियों को भेजने की आवश्यकता नहीं है।

टिप्पण :— बस्तावेजों पर प्रभार्य स्टास्प शुल्क, यदि कोई हाँ, रिजस्ट्रीकरण फीसे और अन्य क्यय जो विधिक और अन्य प्रारूपिकताओं को पूरा करने के लिए उपगत किए जाएं, कर्मचारी द्वारा अपने स्थयं के साधनों द्वारा निर्वहन किए जाएंगे।

गृहों के सीनर्माण आदि के लिए बोर्ड के कर्मचारियों की अग्रिम के अन्दान विनियमित करने वाले नियमों के अभीम विहित आधेदन का प्रारूप —

- 1. (क) नाम (मोटे अक्षरों में)
 - (स) पदाविध
 - (ग) वेसनमान
 - (घ) वेतनमान वेतन (भक्तों को छोड़कर किन्तू मंहगाई वैतन को, यदि कोई हो सम्मिलित करते हुए)—
- 2. (क) वह विभाग या कार्यालय जहां नियुक्त किया गया है।
 - (स) विभाग का अध्यक्ष
 - (ग) वह कार्यालय जहां तैनात हो—

3 कृपया निम्नलिखिन कथन करें :----

क्या श्राप बोर्ड के स्थायी या ग्रस्थाई कर्मचारी है ग्रौर बोर्ड के ग्रधीन की गयी सेवा की श्रवधि (क) श्राप का स्थायो पद यदि जन्म की तारीख श्रीर सेवा निवृत्त कोई हो। मंबंधिन कार्या- के दिन श्राय् लय श्रीर विभाग का नाम

े के दिन ग्राय् ि इ क्या ग्रापकी पत्नी/पति बोर्ड का कर्मचारी है यदि हो तो ; उसके नाम पदाभिमान, ग्रादि दी जाए

(ख) क्या ग्राप राज्य/केन्द्रीय सरकार के ग्रधीन कोई स्थायी नियुक्ति धारण करते हैं यदि हो तो विशिष्टियां दीजिएना

[भागाम खण्ड 3 (1)]			भारत का राजपनः असाधारणः	·	1435
4. क्या म्नाप या म्नापको पत्नी/पति/म्रव करें:—	यस्क संतान पहले ही	ाः । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	तमी है ? (विनियम 4(ग) देखिए) यदि हां, तो कृपया निम्नलिखि	 त भ श्यन
वह स्थान जहां यह स्थित है मही पता के साथ	फर्शीक्षेत्रफल (——— वर्गमीटर में)	उसका (लगभग) मूल्यांकन	यथास्थिति मन्य गृह के स्थामित्य किसी विद्यमान गृह में निवास-स्थ यृद्धि की बांछा के लिए कारण	
1	·· :		3	4	
ं टिप्पणं:— उपरोक्तः स्तंस । से 4 प्रारूप में) ग्रीर रेखांकों द्वारा, समृचित प्रव			भरा जाना चाहिए। स्लंग 2 से	4 का ममर्थंन विनिर्देशों, प्राक्कलनों	(संलग्न
5. (क) क्या धापको नए गृह के निर्माण	ग के लिए झिप्रिम की	भ्रमेक्षा है ? यदि	र हो तो क्रुपया निम्नलिखित उपर्वीय	ात करें (विनियम 5 देखिए)	
संनिर्माण के लिए प्रस्थापित गृह की लगभग फर्शी क्षेत्रफल (वर्गमीटर में)			प्राक्ष्कलिन लागत	उन वर्षों की संख्या जिनमें श्री —— क्याज सहिंस, प्रसिसंदस करने की !	
	24	निर्माण योग की स्नागत	श्रपेक्षित प्रश्रिम की रकम	₹ I	
1	2	3 4	5	6	
(ख) क्या भूमि घापके कब्जे में उस शहर या नगर का नाम जड़ा यह सि		सेबा-निवृत्ति के	निल् षि त कथन करें ।	नगरपालिका या भ्रन्य स्थानीय प्र का नाम (यदि कोई हो) जिसकी रिता के भीतर वह स्थिति है।	
1		2	3	4	-
लिए प्रस्थापित प्लाट का करे कि व्यवस्थापन और स्पष्ट रूप से सीमांकित वि 6. क्या बाप किसी विद्यमान	लगभग क्षेत्र फल (वर् कीमन का संदाय वि वकस्तित प्लाट का रि	मिटिरों में) कथित हए जाने के प्रधीन क्त कडजा कर सय की युद्धि के लिए	त करें ग्रौर प्लाट के विकेता के ए रहते हुए वह ग्रायेदन की सारीख ज्ता है।	त करना चाहते हैं ? ध्रजित किए कि पत्न की प्रनुप्रमाणित सत्य प्रतिलिपि को दो माम की ग्रवधि के भीतर हो तो, कृपया निम्नलिखिल कथन करे	संलग्न भूमिका
गृह भौर रसोई को छोड़कर)	क्षेत्रफल (वर्गमीटरों में)	यदि कोई श्रितिरक्त मंजिली जोड़ने की प्रस्थापन हो तो क्या नीव	कमरोंकी फर्झीक्षेत्र- प्राक्क सं० फ्ल (वर्ग लागः मीटरों में)	——— जिनमें भ्रग्नि लित वांछित श्रग्निम ब्याज सहित	म को प्रति- जेकी

पर्याप्त है मजबूत है

मजबूत है

डिप्पण:--विश्वमान गृह का रेखांक ग्रावेदन के साथ होना चाहिए।

887 GI/80-2

- 7. क्या श्रापको महले से निर्मित गृह का क्रय करने के लिए अग्रिस की अपेक्षा है ?
- (क) (1) यदि हां, भीर यदि भापकी दृष्टि में पहले से ही कोई गृह है तो कृपया निम्नलिखित कथित करें ---

गृह की डीक-ठीक स्थि ति	गृष्ट् का′फर्शी क्षेत्रफल (क्योंमीटरों में)	गृष्ट् की प्लिंथ क्षेत्र- फल (वर्ग मीटरों में)	गृष्ट की लगभग भाग	गृह की नगर- पालिक मूल्यांकन	स्वामा का नाम भ्रौर पता		ध्रपेक्षित श्रप्रिम की रकम	वर्षी की संख्या जिल्मी प्रतिम को अ्याज संहित प्रतिसंदत्त किए जाने का प्रस्ताव है
1	2	3	4	5	6	7	8	9

टिप्पण:—(i) मावेदम के भाथ गृह का रेखांक होना चाहिए।

- (ii) क्या भापने यह समाधान कर लिया है कि संध्यवहार गृह के लिए भापको भविवाद्य हक मर्जित करने में परिणत होगा ?
- (क) यवि भापकी दृष्टि में पहले से ही कोई गृह नहीं है तो भाप कैसे, कब भौर कहां उसे भिजित करने की प्रस्थापना करते हैं ? निम्नलिखित उपविधित करें :──

षह लगभग रकम जिस तक भ्राप गृह का क्रय करने के लिए तैयार होंगे अपेक्षित भ्रमिम को लागत रकम संख्या जिनमें भ्रमिम को, स्याज सहित प्रतिसंदत्त किए जाने का अस्ताव है।

टिप्पण:-- उपरोक्त सद 7 (क) के सामने विनिर्विष्ट स्थीरे इस मामले में भी यथासंभव शीध्र दिए आने चाहिए और किसी भी दशा में सम्निम की पूरी रकम निकाले जाने के पूर्व दिए जाने वाहिए।

8. क्या वह भूमि जिस पर गृह का संनिर्माण किए जाने की प्रस्थापना है, स्वतंत्र धृति (फीहोल्ड) या पट्टाधृति है ? यदि पट्टाधृति है तो निम्नलिखित कथित करें।

पट्टा की मर्थि। विस्तिनी मर्थिध पहले ब्यतीत हो क्या पट्टा की गर्ते भूमि की प्लाट के लिए संदश्त प्रीमियम प्लाट का वार्षिक किराया । सुकी है बोर्ड को बंधक किए जाने की भनुका वेती है।

दिव्यण !---पद्गाविक्रम क्लिंब की एक प्रति प्रावेदन के साथ देनी चाहिए ।

- 9. (क) क्या भूमि/गृह के लिए आपका हक भिविषाद और विल्लंगमों से मक्त है ?
 - (ख) क्या आप अपने हक के समर्थन में, यदि अपेक्षित हां, मूल दस्तावेकों (विकय या पट्टा किलेख) प्रस्तृत कर सकते हैं ? यदि नहीं, सो उसके लिए कारणों का कथन यह उपविश्ति करते हुए करें कि आप कौन से अन्य वस्तावेजों का संबूत यदि कोई हो, अपने वावे के समर्थन में दे सकते हैं । (उपरोक्त विनिम्ध 5(ख) और 7(क) वेखिए)।
 - (ग) क्या वह परिक्षेत्र में जिसमें भूमि का प्लाट/गृह स्थित है, सड़क, जल प्रदाय, जल निकास, मल विकास, मार्ग, प्रकाश आदि जैसी आवश्यक सेवाएं है (कृपया स्थल रेखांक पूरे पते के साथ दें) ।
- 10. यिव आप इस आवेदन की तारीख से 20 वर्ष के भीतर सेवा निवृत्त होने वाले हैं और उपकान या मृत्यु और सेवा-निवृत्ति उपकान के लिए पात्र हैं तो क्या आप करार प्रक्प/बन्धक विलेख में एक घोषणा देकर यह करार करते हैं कि बोर्ड आपकी सेवा-निवृत्ति या सेवा-निवृत्ति के पूर्व मृत्यु के समय असंदत्त रह गए उक्त अग्निम के उतिशोष को, व्याज सहित, उस सम्पूण उपदान या उसके किसी विनिदिष्ट भाग में से, जो उसे मंजूर किया जगए, वस्त करने के लिए हकदार होगा ले

- 11. क्या विनियम 7(त) आपके मामलों में लागू है ? यदि हां तो निपनलिसित कथन करें :—
 - (1) ऐसे स्थायी कर्मणारी का, जो आपके लिए प्रतिभृति धेने के लिए रजामन्द है, नाम, पदाभिभान, वेतनमान, कार्यालय, विभाग आदि।
 - (2) यह सारीख, जिसको प्रस्ताबिस प्रतिभू सेवा-निवृत्त होने वाला हो ।
- 12. यदि आपने गृह या किसी निधासी प्लाट के संनिर्माण अर्जन के लिए अपने भिवष्य निधि से पहले ही अन्तिम रूप से रकम निकाली है तो कृपया निकाली गई रकम की विशिष्टिया, निकालने की सारीस और वह प्रयोजन, जिसके लिए अब गृह निर्माण अग्निम नियम के अधीन अपेक्षित रकम की अपेक्षा है, दें।

घोषणा

- .1. मैं सत्यनिष्ठा से यह धोषणा करता हूं कि ऊपर उपदिशित विकास मदों के उत्तर में मेरे द्वारा दी गई जानकारी मेरी सबों-त्रम जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।
- 2. मैंने गृह के निर्माण अप्तदि के लिए बोर्ड के कर्मचारियों को अग्रिमों के अनुदान को विनियमित करने धाले मियमों को

पढ़ा है और उनमें दिए गए निबन्धनों और शतो का पालन करने के लिए सहमत्त हो ।

- 3. मैं प्रमाणिस करता हूं कि-
 - (1) मेरी पत्नी/मेरा पति बोर्ड का कर्मचारी नहीं है मेरी पत्नी/मेरा पति, जो बोर्ड का कर्मचारी है इन नियमों के अधीन अग्निम के लिए कोई आवेदन नहीं दिया है और/या प्राप्त नहीं किया है।
 - (2) न तो मैंने मेरी पत्नी/पित/अवयस्क संतान ने किसी गृह के अर्जन के लिए पहले किसी सरकारी स्रोत से (उदाहरणार्थ पुनर्धास विभाग या किसी केन्द्रीय या राज्य आवास स्कीम के अधीन) किसी उधार या अग्रिम के लिए कोई आवेदन दिया है और/या प्राप्त किया है या किसी गृह के अर्जन के सम्बन्ध में किसी भविष्य निधि से कोई अग्रिम लिया है या अन्तिम रूप से रकम निकाली है (उपरोक्त मद 12 भी वेखिए)।

*विकल्प (विकल्पों) को जो लागून हो काट दें

(3) गृह का सीनर्भाण जिसके लिए अग्निम के लिए आवेषन दिया गया था, प्रारम्भ नहीं किया गया है।

(आवेदन के विभाग के प्रधान द्वारा भरा जाना है) अध्यक को अग्रेषित

तारीख - - - - - -

(1) मैंने इस विनियम के 2(स) के अनुसार आवेदनों की जांच की है और उसमें कथित तथ्यों अविद की शृक्षता के सम्बन्ध में अपना समाधान कर लिया है और आवे-वक को प्रश्नेगत सम्पत्ति का स्थब्द हक है।

- (2) यह सिकारिक की जाती है कि - - र का अग्रिस आवेदक को अग्रदत किया जा सकता, है। मैं ने आवेदक के वेसन से की गई मासिक कटौतियों आदि के आधार पर अपना यह समाधान कर लिया है कि वह रकम उसकी संदाय क्षमता के भीतर हैं।
- (3) *विनियम 4(स) के उपकंषों को विद्योप मामले के रूप में, शिथिल किया जा सकता है।
- (4) आवेवक को उसकी अधिवार्षिता की तारीस को देय उपवान/मृत्यु और सेवा-निवृत्ति उपवान की रक्षम (जो सेवा निवृत्ति की तारीस को आवेवक क्षारा गृह निर्माण अग्निम के लिए आवेदन देने के समय धारिक नियुक्ति के आधार पर संगणिक है) - - - - र प्राक्किलित की गई है।
- (5) प्रमाणित किया जाता है कि अभी हस्तारिती श्री - -- - - - - - (नाम और पदाभिभान मोटे अकदों मों दे)** शिक्षांग की अध्यक्ष है । ** ऐसे आवेदनों की जांच करने और सिफारिश करने के लिए विभाग के अध्यक्ष द्वारा सम्यक्ष रूप से प्राधिकृत किया गया है ।

**	^{:*} हस्ताक्षर	,
	पवाभिधान	
	विभागकानाम	
		_

*थवि लागुन हो तो काट वें।

**जो शब्द लागुन हो तो काट दें।

***हस्ताक्षर करने बाले अधिकारी का नाम भी उसके हस्ताक्षर के नीचे मोटे अक्षरों में उपक्षिकत किया जाना, चाहिए ।

प्रवपसंख्या 1

गृहों के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारियों को प्रक्रिमों के धनुवान के लियें (प्रक्रा सं० 2 के ब्यीरों पर प्राधारित) मून प्राक्रित्ती भौर ब्यौरिकार विनिर्देशों की लागत की संक्रिस्टित)

म्म

पदाभिधान

मद सं० उपशीर	मीरकार्यकी मर्दे	मात्रा या संस्था	द्	प्रति	रकम	जोङ्
1 2		3	4	5	6	7
I. मिट्टी का कार्क (माधारों के उत्खन	त में मिट्टी कार्य भीर घधिशेष मिट्टी का व्यास्त घावि)		1(000 वर्ग गिटर		
	या कूटिंग कें: लिये पत्थर या इंटों की गिट्टी का उपयोग अस्ते कृता के साथ बाधार कंकीय		wid entr	100 वर्ग मीटर		

RDINAR	Y	[Par	T II—SEC	3(i)]
3,	4	5	6	7
		~~		
		<u></u> -		
	· 			
	 -	-		
~ ~				
⊣ ==		 1		
			, 	
		74 - 24 - 24 - 24 - 24 - 24 - 24 - 24 -		
•	PART IN THE COLUMN	 स्रावेदक के हर	स्त िक्षर	
		तारीख		
मर्वें, रेट भ्र	ादि को उपदर्गि	ात करने हुए)	पृथक कागज	पर टाइप
के लिये क्यं	ौरेक₁र प्रा प कल	न ।		
	त्र के लिये क्य	3. 4	3. 4 5	3. 4 5 6

न् त्र					
पदाभिधान——————————					
कार्यालय, जिमसे संबच्न है					
परिक्षेत्र ग्रीर पता, जिसमें नृह के निर्माण का प्रस्ता	* *			.	
क सं कार्य के ब्योरे	संख्या		माप		
		नम्बाई नम्बाई	- चौड़ाई		मास्ना ···
1 2	3	4	5	G	7
ो. मिट्टी का कार्य					•
शाधार ग्रीर अन्य खाइयों के लिये मभी मुदार्थों में ज ग्रीर जसे 50 मीटर लीड के भीतर ग्रीर 1-5 मीटर					
सामने भी दीवाल	7: 1	19-1/2	1∸ 1/2	2 - ,	5 9
पीछे का बरांडा दीव≀ल र स ते हुए	1		1-1/2		44
	T. T				

2	3	4	5	6 -	7
बाहरी वीबाल	1	201/2	1-1/2	2	62
कमरों के बीच की सामान्य दीवाल	1-1/2	12-1/2	1-1/2	2	56
सामने की घोर पीछे की डब्लू० सी०	2	3-3/4	1	1 - 1/2	11
यथोक्त पावर्वका	1- 1/2	4- 1/2	1	1-1/2	11
सामने की ग्रांर पीछे की सीक्रियां	2	4-1/2	1 - 1/2	1/2	7
कुल मिट्टी का कार्य	→ →				250
उरखनित मिट्टी की पुनः भराई श्रादि					
सभी मदों के लिये, जैसा कि नमूना प्ररूप सं० 1 में दिया गया है, चाल स्वौरे					

मावेदक के हस्ताक्षर-----

टिप्पण :--- क्रपर की मद 1 के सामने स्तम्भ 3-7 में दी गयी प्रविष्टियां केवल यह म्पष्ट करने के लिये हैं कि संपूर्ण प्ररूप कैसे तैयार किया जाना है उसे पूथक कागज पर टाइप किया जाना चाहिये और घावेदन के माथ समुचित प्रक्रम पर संलग्न किया जाना चाहिये ।

जब सम्पत्ति मुक्त धृति (फीहोल्ड) है सब निध्यादिन किए जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप

(विनियम 7 देखिए)

बंधककर्ता उम भूमि श्रीर/या गृह सम्यत्ति श्रीर परिसर का, जिसका सर्णन इसमें श्रापे लिखी श्रनुसूची में किया गया है भीर जिसकी सीमाएं श्रीधक स्पष्टता के लिए इससे संलग्न नक्षों मेंंगंकी रेखा से दिखाई गयी है तथा जो इसके द्वारा हस्तांतरित भीर शंतरित किया गया श्रीक्यकत है, (जिसे इसमें श्रापे 'उक्त बंधक सम्पत्ति' कहा गया है) पूर्ण भीर एकमान्न हिताधिकारी स्वामी है श्रीर वह उसके कब्जे में है श्रथका वह श्रन्य कृत में उसका विधि पूर्वक श्रीर पर्याद्त रूप से हकदार है ।

बंधककर्ता ने क्या के जिए बंधकदार को भाषेदन किया है। बंधककर्ता ने यह मित्रम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए सोगा है:

- *(1) भूमि का कय करने के लिए भीर उस पर मकान बनाने के लिए या* (उक्त भूमि पर विद्यमान मकान में भावास स्थान विस्तार करने के लिए) ।
- ः *(2) उक्त भूमि पर मकास बनाने के लिए या *(उक्त भूमि पर असने मकान में द्यावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
 - *(3) उन्त बने बनाए मकान का अथ करने के लिए।

वधकदार कुछ निसंधनों भीर मती परः ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' रूपए. की उक्त रकम बधककर्ता को देने के लिए सहमत हो गया है।

उक्त प्रतिम की एक णर्त यह है कि बधककर्ता की चाहिए कि वह इसमें आगे अनुसूची में वाँणत सम्पत्ति का बंधक करके उक्त अग्निम के प्रतिसंवाय को और उन निवंधनों और शतों के सम्यक् अनुवालन की प्रतिभूत करें जो नव तूतीकोरिन पत्तन न्यास कर्मचारी (सकानों के निर्माण प्रादि के लिए प्रतिम का अनुवान) विनियम, 78 में (जिसे इसमें आगे 'उक्त विनियम' कहा गया है और इसके अन्तर्गत जहां संदर्भ के अनुकूल है, तत्समय प्रवृत्त उसके संगोधन या उसके परिवर्धन भी हैं) दी हुई है श्रीर बंधकार ने

- * (बंधककर्ता को : : : : : চ০ (केवल : : : : : ' ६०) का प्रग्निम मंजूर कर दिया है। यह प्रग्निम उतनी किस्तों में भौर उस रीति में संदेय होगा जो इसमें प्रागे बनाई गयी है)

यंधककर्ता को यंधकवार से उक्त ग्राग्रिम निम्नलिखित किस्तों में मिलना है:

- * कपण् तारीख को मिल् चुके हैं।
- *ॱॱॱॱॱॱॱॱॱॱऽपएं इस बिलेखा के निष्पादन पर । 🕐
- * : : : : रुपए तब जय बंधककर्ता, बंधकदार के पक्ष में इस विलेख का निष्पादन करेगा ।
- **.... रुपए तब जब मकात का निर्माण कुर्सी के स्तर पर पहुंचेगा।
- ** रूपए तब जब मकात का निर्माण छत के स्तर तक पहुंचेगा, परन्तु यह तब होगा जब कि बंधकदार का यह समाधान

^{*} जो लागू हो वह लिखिए ।

^{**}थदि भग्निम केसंबाय का ढंग नियम 5 में बिह्ति ढंग से भिन्न है हो तदनुसार इसकी भाषा में परिवर्तन कर दिया जाएगा । .

हो जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें मकान बनाया गया है, जल प्रवार, सङ्कों की प्रकाश व्यवस्था, सङ्कों, नालियों ग्रीर मलवहन जैसी सुविधान्नों की वृष्टि से पूरा हो गया है।

यह करार निम्नलिखित का साक्षी है :---

(1) (क) उक्त विनियम के प्रनुसरण में ग्रौर उक्त विनियम के उपबंधों के प्रमुसार बंधकवार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/विए गए जनत मिप्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधकर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंबिधा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों स्रौर शतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालक करेगा और '''' स्थाप (केवल ''''''''''''''''' रुपए) के उक्त ग्राग्रिम का बंधकदार को प्रतिसंद्याय · · · · · · · · रुपए (केवल · · · · · · · · रुपए) की * ॰॰॰॰॰॰॰। मासिक किस्तों में बंधककर्ता के वेतन में से करेगा। थह प्रतिसंवायके....के.... भास. से प्रमता भकात पूरा होते के पश्चात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्भ होगा । बंधककर्ता ऐसी किस्तों को कटौती उसके मासिक वेसन/धुट्टी वेंसन/मिर्वाह भन्ते में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। उक्त अग्निम की पूरी रकम देने के पश्चान् बंधक-कर्ता उस पर देय क्याज का संवाय भी ······ **मासिक किस्तों में उस रीति में और उन निबंधनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिर्दिष्ट हैं । परम्तु बंधककर्ता ब्याज सहित, प्रक्रिमः का पूरा प्रतिसंदायः उस तारीखः से पूर्व करेगाः जिसः वारीख भने वहः सेवाः से तिवृत्तं होने बाला/माणी है । यवि वहः ऐसा नहीं करेगा/ कारेगी, तो बंधकधार को यह हक होगा कि वह बंधक को दश प्रतिभृति को उसके काद किसी भी समय प्रयुक्त करे और उस समय देय प्रक्रिम भी, मोक स्कम तथा उस पर ब्याज, श्रीर वसूनी के खर्क बंधक सम्पत्ति का विकास करके या विधिः के प्रधीन प्रनुक्षेय किसी धन्य सिति से बसूल करे। **कंµककर्ता इ**स रक्तम काः प्रनिसंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता

(1) (सा) उक्त विक्रियम के प्रनुसरण में फ्रीर उक्त विक्रियम के जमबंद्धों के अनुसार बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त ग्रग्निम के प्रतिफलस्कामा वैधककर्ता इसके द्वारा वंधकवार से यह प्रसंधिदाफरता है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों झौर भारों का सदैव सम्प्रक् रूप से अनुपालन करेगा चौर : : : : : रुपए (केवल : : : : : : : रपए) के उक्त प्रश्निम का बंधकदार की प्रतिसंदायरपए (केवल कीं ''' मासिक किस्सों ग्रपने (बंधककर्ता के) वेतन में से करेंगा । यह प्रतिसंदाय ' ' ' के **** प्रशास के या मकान पूरा होने के पश्चात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो,पारम्भ होकर उनकी ग्रधिवर्षिता की तस्त्रीच तक किया जाएगा कौर उसकी प्रधिवर्षिका की तारीख से प्रतिसंवाय की तारीख नक का क्याज उसके उपवान/मृत्यु-एवं-सेवा निवृत्ति उपवान में से वसूल किया जाएगा । श्रंशककर्ता किस्तों की रकम को कटौसी उसके मासिक वेसन/खुट्टी वेतन/निर्वाह भन्ने मे से तथा उस शेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्यु सिवा निवृत्ति श्रिष्ठि-वर्षित की सारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपवाम/मृत्य् एयं सेखा निवृत्ति उपदान में में करने के निए बंधकदार की प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पुरी बसूली नहीं हो पाती है दो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति की उसके बाद किसी भी समय प्रकृत करें भीर उस समय देश भग्निम की गेष रकम तथा उस पर क्याज भीर बसूली का सार्च, बंधक सम्पत्ति का विकथ करके या विधि के क्रमीत क्रमुबेय किसी कस्य रीति से वसूल करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इसले कम प्रअधिः के भीतर कर सकता है।

(1) (ग) जनत विनिधम के अनुसरण में भौर उक्त विनिधम के उपबंधों के सनुसार बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गण्/दिए गए उन्नत प्रश्निम के प्रतिफलस्वस्य बंधककर्ता इसके द्वारक बंधकदार से यह प्रसंविदाकरता है कि बंधककर्ता उक्त विनियमः के सभी निवंदनों भौर शर्तों का सर्वेव सम्यक् रूप से अनुपालन करेता और ' ' ' ' ' ''''''' हपए (केवल ''''''' हपए) के उक्त प्रश्रिम का बंधकवार को प्रतिसंदाए ' ' ' ' ' ' ' ' ' रुपए) (केवल ' ' ' ' ' ' ' ' रुपए) की मासिक किस्सों में अपने (बंधककर्ता के) वेसन में से करेगा । यह प्रतिसंदाय ' ' ' मास से या मकान पूरा होने के पश्चान्वर्ती मास से इनमें में जो भी पूर्वतर हो, प्रास्म्भ होगा। बंधककर्ताः इसके द्वारा बंधकदार को ऐसी किस्लो की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन से करने के लिए प्राधिकृत करती है भौर बंधककर्ता ग्रथिम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात् ं : : : : मासिक किस्तों में संदाय ग्रपनी ग्रधिवर्षिता की तारीखा तक करेगा तथा घग्रिम की गयी रकम पर प्रग्रिम की सारीखा से उसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के ब्याज की उस बाकी रकम का जो उसकी प्रधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहतीं है, संदाय ग्रपणे उपदान√ मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान से करेगा घौर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक वेतन/शुट्टी वेतन में से तथा उस मोच रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्यु की तारी खा तक नहीं किया गया है; कटौती अपने उपदान/मृह्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में मे करने के लिए वंधकदार को प्राधिकृत करता है। यवि उसकी मृत्यु की तारीख का कोई मतियोग मसंबत रह जाता है तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह मधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे स्पौर उस समय देग ग्रग्रिम की ग्रोष रकम तथा उस पर **ब्याज गौ**र ब**सूली** का खर्च, बंधक सम्मत्ति का विकय करके या विश्व के प्रधीन धनुत्रीय किसी श्रन्य रीति मेवसूल करे। बंधककर्त्वाइस. रकमका प्रतिसंदाय इससे कम् श्रवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण---वाण्ड (1) (क) ध्रीर (1) (ख) या (1) (ग) में. से जो. लागू नहीं: है उसे काट दीजिए।

- (2) यदि बंधककर्ता मित्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि प्रावेदक बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति, प्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में महीं रहता है अथवायदि अग्रिम के पूरे संवाय के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि वह उक्त विनियम में विनिद्दिष्ट ग्रीर उनकी ग्रीर में ग्रनुपालन किए जाने वाले किसी सिबंधन, शर्त भीर भनुबंध का धनुपालन नहीं करता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में प्रश्निम का सम्पूर्ण मूलधम या उसका अतना भाग जो उस समय देय रहता है और जिसका संदाय नही किया गया है, और उस पर : : : प्राप्तिशन प्रतिवर्ष की दर से व्याज जो बंधकदारद्वारा उकत ग्रम्भिम की पहली किस्त के दिए जाने की तारीख से परिकलित किया जागूगा, तुस्स संवेय हो अएमा । इसकी फिसी बात के होते हुए भी, यक्षि बंधककर्ता प्रविम क। उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन केलिए करता है जो: उस प्रयोजन में भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधक-दार बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी अनुगासिक कार्रवाई कर सकेगा जो बंधक कर्ताको लागृ मेवा के नियमों के मधीन उपयुक्त हो।
- (3) उक्त बिनियम के अनुसरण में और उपयुक्त प्रतिफल के लिए तथा उपर्युक्त अग्निम के और उस पर क्याफ के, जो उसके परकाल किसी समय या समयों पर इस विलेख के निश्चंधनों के अधीम कंधकराए को विषय हो, प्रतिसंवाय की प्रतिभूत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकवार को

^{*}यह 180 से घषिक नहीं होगा । **यह 60 से घषिक नहीं होगा ।

[†]नियम के प्रधीन प्रभाय क्यांज की प्रसामान्य वर ।

उक्त सम्पूर्ण बंधक सम्पत्ति जिसका पूरा वर्णन इसमें ध्रागे लिखी धनुसूची में किया गया है, उस सम्पत्ति पर बंधककर्ताद्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों या तत्समय उस पर की सामग्री का उक्त बंधक सम्पत्ति से सम्बन्धित सभी या किन्हीं ग्रधिकारों, सुखाचारों ग्रौर ग्रनुलस्तकों सहित प्रनुदान, हस्तांतरण प्रंतरण ग्रीर समनुदेशन करना है । बंधकदार उक्त बंधक सम्पत्ति को उसके ध्रनुलग्नकों सहित, जिसके ध्रन्तर्गत उक्त अबंधक सम्पत्ति पर के सभी तिर्माण और ऐसे भवन को निर्मित किए गए हैं या इसके परचात् निर्मित किए जाएं भथवा उस पर तत्समय रखी सामग्री भनी है, सभी विल्रुकंगनों से मुम्पत पूर्णकृप से घारण करेगा और उसका उपयोग करेया । किन्तु यह इसमें द्यागे दिए हुए मोचन संबंधी उपबंध के भर्म्योन होगा । इसके पक्षकारों के बीच यह करार किया जाता है और मोक्णा की जाती है कि यदि बंधक कर्ता, बंधक वार का इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन ग्रीर स्थाज का ग्रीर ऐसी ग्रन्य रकम का (यदि कोई हो) को बंधककत्तिकों द्वारा बंधकदार को, उक्त नियमों के निबंधनों कौर शर्ती के अधीन संवेय अक्क्शारित की जाए, सम्यक रूप से संदाय इसमें दी हुई रीति से कर देगा तो बंधकदाए उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ती के भवुरोध स्प्रीर खर्च पर, उन्त बंधक सम्पत्ति का प्रतिहस्तांतरण भीर प्रति-द्यांतरण बंधककर्तात्रीं को उसके या उसके निवेशानुसार उपयोग के लिए कर देगा ।

(4) इसके द्वाका अभिन्यक्त कप यह करार किया जाता है और व्योषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता अपनी ओर से की गयी और इसमें दी हुई असंविदाक्षों का भग करता है या यदि बंधवकर्ता विवालिया हो जाता है यदि सामान्य रूप से सेना सिवृत्ति/प्रश्चिषता से भिन्न किसी कारण से सेवा में मही रहना है, या यदि छन सभी रकमों के जो इस विलेख के ग्राधीन बंधकदार को संदेय हैं, स्नौर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि उक्त श्रियान या उसका कोई माग इस विलेख के घंधीन या किसी अन्य रूप से तुरन्त संदेय हो जाता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में बंधकवार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि बाहु उक्त बंधक सम्पत्ति काया उसके किसी भागका विकय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना,एक साथया टुकड़ों में धौर लोक नीलाम द्वारा था प्राइवेट संविदा द्वाराकर दें। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका क्रय कर ले या विकथ की किसी संविदा को विखंडित कर दे श्रीर उसका प्रकः विकास कप वे तथ्या ऐसी किसी हानि के लिए जिस्मेदार न हो जो ऐस्धा करने से हो । उसे ग्रह गक्ति भी होनी कि वह ऐस्ध विकय करने के लिए, जो बंधकदार ठीक समझे, समीकार्य करे ग्रीर हस्तातरण पक्षीं का निरूपादन करे। यह घोषणा की जाती कि बेचे गए परिसर या उक्सके किसी भाग के ऋग धन के लिए अंधनादार का रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केला या केताओं ने कय धन का मुगसान कर दिया है। यह भी भौषणा की जाती है कि उक्त शक्ति के अनुसरण में किए गए किसी विक्रम से प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप में आरण करेगा। उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का सदाय किया जाएगा भीर तब इस विलेख की प्रतिभूति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके 'लिए, धन का संवाय किया जाएगा और यवि कोई धन बाकी रहता 'है तो वह बंधनकर्ता को दे दिया जाएगा ।

- (5) बंधकमती इसके द्वारा अधकतार के साथ यह प्रसंविदा करता है कि :--
- (क) बंधककर्ता को इस बात का विधिपूर्ण मधिकार श्रीप प्राधिकार है कि वह बंधक सम्पत्ति का, बंधकवार की भीर उसके उपयोग के लिए भनुवान, हस्तांतरण, मन्तरण भीर समनुवेशन पूर्वोक्त रीति में करे।
- (ख) बंधककर्ता मकान के तिर्माण/उक्त मकान में ग्रावास स्थान में परिवर्तन का नाम उस ग्रमुमोदित नक्शे भौर उन विनिर्देशों के भ्रनुसार ही करेगा जिनके गाधार पर उक्त भविम की संगणना की गयी है भौर वह

टिप्पणः अब भ्रमिम बने बनाए मकान के कम के लिए हैं या उस उधार के प्रतिसंदाय के लिए हैं जो अधिदक ने किसी मकान वे निर्माण या कम के लिए लिया है तब खण्ड (ख) भ्रीर (ग) लागू नहीं होंगे।

- (घ) बंधककर्ता भारतीय जीवन बीमा निगम में या किसी राष्ट्रीय-कृत साधारण बीमा कम्पनी में उस मकान का तुरन्त ग्रपने खर्च पर बीमा उतनी रकम के लिए कडाएगा को अक्त भाषिम की रकम से कम म हो । वह उसे उस समय तक जब तक कि बंधकवार की ग्राग्रिम पूरी तीर से चुका नहीं किया जाता है, अनिन, याद भीर तड़ित से हानि या नुकसान के विरुद्ध बीमाकृत रखेगा जैसा कि उक्त नियमों में उपबंध है, ग्रौर बीमा वंधकदार को सौंप देगा । वंधककर्ता समय-समय पर एक्त बीमाका प्रीकि-थम नियमित रूप से देगा और जब उससे अपेक्षा की जाए प्रीमिथम की रसीवें बंधकवार के निरीक्षण के लिए पेश करेगा । यदि अधककर्ता अतिन, बाढ़, तड़ित के विरुद्ध भीमा नहीं कराता है तो अधकदार के लिए यह विश्रिपूर्ण, किन्तु भागद्वकर नहीं होगा कि वह उक्त मकान का बीमा बंधक-कर्ता के खबर पर करा ले और प्रीमियम की रकम की अग्रिम की बकाया रकम में जोड़ ले। तब बंधककर्ताको उस पर ************ प्रति वर्ष की कर से क्याज देना होगा मालो प्रीमियम की रकम की ग्रसकी उक्त प्रक्रिम के भाग के रूप में वी गयी भी । यह व्याज उसे उस समय तक देना होगा जब तक कि वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी आती है याजब तक उसकी बसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख को प्रतिपूर्ति के भन्तर्गत अपने वाली रकम हो । बंधककर्ता जम भी उससे अपेक्षित हो, बंधकवार की एक पत्र देगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस मकान का बीमा कराया गया है। यह पत्र इसलिए होगा कि बंधकवार बीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंधकदार उस बीमा पॉलिसी मैं हिसबद्ध है।
 - (इ.) बंधककर्ता उक्त मकान को ग्रापने खर्च पर ग्रक्की मरम्मत की हालत में रखेगा ग्रीर बंधक सम्पत्ति की बाबत नगरपालिका के ग्रीर ग्रस्य

[🔭] जो निग्रम के अधीन प्रभार्यक्याज की प्रसामान्य ६५:।

^{*}यहां यह तारीख लिखिये जिस तारीख को मग्रिम की पहली किस्त बंधककर्ता को दी गयी है।

सभी स्थानीय रेट, कर और घर्य मधी वेनदारियों उस समय तक नियमित रूप से देगा जब तक कि बंधकवार को प्रिष्ठम पूरी तौर से चुका नहीं विधाजाता है। बंधककार्ता, बंधकदार को उक्त प्राणय का एक वार्षिक प्रमाणपत्र भी देगा।

- (च) बंधककर्ता मकान पूरा होने के वाद बंधकदार को यह सुनिश्चित करने के लिए कि मकान श्रव्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देगा जब तक कि श्रप्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बंधककर्ता ऐसी कोई रकम श्रीर उस पर देय ब्याज, यदि कोई है, बंधकदार को लौटाएगा जो अश्रिम के मद्दे उस ब्यय के अधिक्य में ली गयी है जिसके लिए अग्रिम मंजूर किया गया था।
- (ज) बंधककर्ता बंधक सम्पत्ति को इस विलेख के जारी रहते के दौरान न सो भारित करेगा, न उस पर विल्लंगम मृजित बरेगा, न उसका अन्य संक्रामण करेगा, और न उसका किसी अन्य प्रकार से व्ययन करेगा।
- (झ) इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हक होगा कि वह अधिम की शेष एकमं श्रीर उस पर ब्याज जिसका संदाय बंधककर्ता की सेवा निवृत्ति के समय नक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गयी है तो, उस समय तक नहीं किया गया है, बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्विष्ट भाग में से वसूल कर ले।

भ्रनुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है उपत बंधककर्ता (1) · · · · · · · · · (प्रथम मःक्षी का नाम, पता स्रोर व्यवसाय) ••••• (प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर) (2) (दिलीय माक्षी का नाम, पता न्त्रीर व्यवसाय) ···· (द्वितीय साक्षी के हस्ताक्षर) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए । त्तीकोरिन पत्तनत्यास के न्यासी बोर्ड के लिए और उसकी अोर से तथा उसके निवेशानुसार के।यीलय के श्री · · · · ने हस्ताभार (1) · · · · · · · · · (प्रथम साक्षी का नाम, पना और व्यवसाय) ••••• (प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर) (2) (विसीय साक्षी का नाम, पता व्यवसाय) · · · · · · · · (द्विसीय साक्षी के हस्ताक्षर) की उपस्थिति में हस्तक्षर किए। व्यान दें:-- प्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज परस्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए क्या

स्टाम शुल्क के संदाय मे कोई छूट मिल सकती है,

राज्य सरकार से सम्पर्क कर लें।

प्रदेश सं० 3 क

जब सम्पत्ति मुक्त धृति (फीहोल्ड) है झौर संयुक्त रूप से पति श्रीर पत्नी के नाम में धारित है तब निष्पादित किए जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप (विनिधम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री ::::::::::::जी::::
के श्री ः का पुन्नी/पुक्ष है
भ्रौर जो इस समय · · · · · में में · · · · मंद्रालय/कार्यालय
में के रूप में नियोजित है तथा उसका पीती
उसकी पत्नी ''' (जिन्हें संयुक्त
रूप से इसमें आगे 'बंधककर्ता' कहा गया है और इसके झन्तर्गत उनके वारिस,
निष्यादक, प्रशासक श्रीर समनुदेशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय
या संदर्भ से अपवीजित या उसके विरुद्ध नहीं है) भीर दूसरे पक्षकार के
रूप में नव तूतीकोरिन पत्तन त्यासी बोर्ड (जिसे इसमें भागे 'बंधकदार'
कहा गया है और इसके मन्तर्गत उसके उत्तरवर्ती भीर समनुदेशिती
भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से अपविजित या उसके विरुद्ध
नहीं है) के बीच ग्राज तारीख
को किया गयः है।

वंधमकर्ता उस भूमि भौर/या गृह संपत्ति भौर परिसर का पूर्ण और एकमास हिनाधिकारी स्वामी है जिसका वर्णन इसमें आये लिखी अनुमूची में किया गया है और जिसकी सीमाएं प्रधिक स्पष्टता के लिए, इससे संलयन नक्शों में '''''' री की रेखा से दिखाई गयी हैं तो जो इसके द्वारा हस्तांतरित और भ्रांतरित किया गया प्रभिव्यक्त है, (जिसे इसमें भागे 'उक्त बंधक सम्पत्ति' कहा गया है) और वह उसके कब्बे में है अयवा वह अन्य रूप में उसका विधिपूर्वक और प्रयोग्त रूप से हकदार है।

बंधककर्ता में से एक श्री ं ने (जिसे इसमें आर्थ 'आवेदक बंधककर्ता' कहा गया है) ं रु० (केंदल ं रु० (केंदल ं रु०) के आग्रिम के लिए अंधकदार को आवेदन किया है। आवेदक बंधककर्ता में यह अग्रिम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए मांगा है,

- *(1) भूमि का क्रम करने के लिए उस पर मकान बनाने के लिए या*, (उक्त भूमि पर विद्यमान मकान में श्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
- *(2) उक्त भूमि पर मकःन बनाने के लिए या* (उक्त भूमि पर बने मकान में प्राथास स्थान का विस्तार करने के लिए)।

उक्त अग्रिम की एक गर्त यह है कि बंबकराभीं को चाहिए कि वे इसमें आगे अनुमूची में वाँगम सन्मति का वंबक करते उक्त अग्रिम के प्रतिसंदाय को और उन निवंबनों भीर भर्ती के सन्यक् अनुगानन की प्रति-भूस करे जो नृतिकोरिन परतन न्याम कमंबारी (मकानों के निर्माण आदि के लिए अग्रिम का अनुवान) विनिधम 79 में (जिन्हें इसमें आगे उक्त 'विनिधम' कहा गया है और इसके अन्नांन जहां संकर्म के अनुकूल हो, मरसमय प्रवृक्त उसके संशोधन या उनके परिवांग भी हैं) दो हुई हैं।

धीर बंधकदार ने---

*(आवेदक बंधककार्ती को प्राप्त केंद्र किंद्र किंद्र

र्जरुलेख ग्रांगे किया गया है, बनुपालन इसमें ग्रांगे दी हुई रीति से प्रतिभूत करा लिया है।

घावेदक बंधककर्ता की बंधकदार से उक्त मग्रिम निभनेलिखन किस्नी में मिलना है:

*···ः रुपए ···ः तारीख को मिल चुके

*** रिक्षा का निष्पादन करेंगे।

** रूपए तथ जब मकान का निर्माण कुर्सी के स्करपरपहुँचेगा।

** प्राप्ति तक्ष जब मकान का निर्माण छप के स्तरतक्ष पहुंचेगा।

परन्तु यह तब होगा जब कि बंधकदार का यह समाधान हो जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें सकान बताया गया है, जब प्रदाय, सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालियां और मनबहत जैनो सुविधायों की वृष्टि से पूरा हो गया है)। 1

यह करार निम्नलिखिन का साक्षी है:

(i)(क) उक्त विनियम के धनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा आवेदक बंधककर्ता को मंजूर किए गए/ दिए गए उक्त श्रम्मि के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करते है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों भौर शतों का सदैव सम्यक रूप से ब्रनुपालन करेंगे ब्रीर ' ' ' ' रुपए (केवल ं मामिक किस्तों में अविदक के वैतन में से करेगे । यह प्रतिसंदाय ''''के''' के'''' मास से म्रथवा पूरा होने के पश्चात्वर्ती भाग से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्भ होगा। ब्रावेदक ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेसन/ छुट्टी वेतम/निर्वाहभारते में से करने के लिये बंधकदार को प्राधिकृत करता है। उक्त अग्रिम की पूरी रकम दे देने के पण्चात् आवेदक बंधककर्ता उस पर देथ ब्याज का संवाय भी '''' ‡मासिक किस्तों में उस रीति में श्रीर उन निर्वधनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिर्विष्ट है परन्तु ग्राबेदक बंधककर्ताब्याज सहित प्रग्रिम धन का पूरा प्रतिसंदाय उस तारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख को वह सेवा से निवुस्त होने वाला/वाली है। यदि वह ऐसा नहीं करेगा/करेगी तो संधकवार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाव किसी भी समय प्रवृत्त करे ग्रौर उस समय देय ग्रग्निम की गेष रकम सथा उस पर ब्याज ग्रौर वपूली का खर्चबंधक संपत्ति का विकय करके या विधि के ग्रधीन भनुज्ञेय किमी भन्य रीति से वसूल करे। शाबेदक संधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम ग्रवधि के भीतर कर सकता है।

(i) (ख) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा बंधकरती को मंजूर किये गए / दिए गए
उक्त अग्निम के प्रतिकलस्व क्ष्य आवेदक बंधककर्ती इसके द्वारा बंधकदार से
यह प्रसंविदा करता है कि आवेदक बंधककर्ती उक्त विनियम के सभी
निबंधनों और गर्ती का सदैव सम्यक् क्ष्य से अनुपालन करेगा और

क्षयण् (केंद्रल क्ष्य) के उक्त अग्निम
का बंधकदार को प्रतिसंदाय क्ष्यण् (केंवल
भ्रमण्) की मासिक किस्तों में आने आवेदक बंधकर्ती
के वेदन में से करेगा। यह प्रतिसंधार
भाग से या मकान पूरा होने के पण्वात्यर्ती मास से, इनमें से जो भी

पूर्वतर हो, प्रारम्भ होकर उमकी प्रधिविषा की तारीख तक किया जाएंगा थीर उसकी प्रधिविष्ता की तारीख पर जो रक्तन बकाय होनी तथा प्रिप्त दो गई रक्तन पर प्रिप्ति की तारीख पर जो रक्तन बकाय होनी तथा प्रिप्ति दो गई रक्तन पर प्रिप्ति की तारीख से प्रतिसंदाय को तारीख तक का क्याज उसके उपदान/मृत्यु की रक्तन सेवा निवृत्ति उपदान में से बसून किया जाएगा। प्राविषक बंधककर्ता किन्तों की रक्तन की कटौती उसके मासिक वैसन/खुट्टी वेतन/निविष्ट भरते में से तथा उस णेव रक्तन को जिनका मंदाय उसकी मृत्यु/सिवा निवृत्ति/धिविविष्ता की तारीख नक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकवार को प्राधिकृत करता है। यदि किर भी पूरी वनुसी नहीं हो पालो है तो बंधकवार को पह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे, और उस समय देव प्रिप्ति की उसके वाद किसी भी समय प्रवृत्त करे, और उस समय देव प्रिप्ति की प्रसक्त वाद किसी भी समय प्रवृत्त करे, और उस समय देव प्रिप्ति की उसके वाद किसी भी समय प्रवृत्त करे, और उस समय देव प्रिप्ति की विक्य करके या विधि के प्रधीन धनुक्तेय किसी प्रत्य रीति से वसूल करे। बावेवक बंधककर्ती इस रक्तम का प्रतिसंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता है।

(i)(ग) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त विनियम के उपकंधों

के अनुसार बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किथे गर्/दिए गए उत्क ध्यप्रिम्, के प्रतिकतस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंतिदा करना है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों ग्रीर शतौँ का सदैव सम्यक् रूप से धनुपालन करेगा घौर 😬 🐃 💛 💛 स्थाए. (केवल '''''''''''''''''' रुपए) के उक्त ग्रमिम का वंधकदार को प्रतिसंवाय'''' रारारारा रु० (केवला रारारारारा स्वरण्) की रारारारारार मासिक किस्तों में भवने (बंधककर्ताके) वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय · · · · · · के · · · · · · मास से ग्रा मकान पूरा होने के पश्वात्-वर्ती मास से, इनमें से जो भो पूर्वतर हो, प्रारंग होगा । बंधकरुती इसके द्वारा बंबकदार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेसन/ छुट्टी वेतन में से करने के लिये प्राधिकृत करता है ग्रीर बंधककर्ता ग्रियम की पुरी रकम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देव व्याज का भी 😬 ·····रु० ·····कि ···· मासिक किस्तों में संदाय भ्रपनी प्रधिवर्षिता की तारीख तक करेगा तथा प्रप्रिम वी गयी रकम पर प्रश्निम की नारीख से उसके प्रतिसंवाय की तारीख तक के व्याज, की उस बाकी रकम का जो उसकी अधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, संदाय भगने उपवान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान से करेगा ग्रीर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती असके मासिक बेनन/छुट्टी बेतन में से तथा उस शेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्यु की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिक्वन करता है। यदि उसकी मृत्यु की तारीख को कोई ग्रतिरोष ग्रसंदरत रह जाता है तो बंधकदार को यह हुत होगा कि वह बंद्रक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करेग्रीर उस समय देय प्रग्रिम की शेष रकम तथा उस पर स्थान ग्रीर वनुलो कांखर्घ बंधक

[टिप्पण: खांड (1)(क), (1)(ख),या (1)(ग) में से जो कागू नहीं है उसे काट दीजिए]।

संपति का विकय करके या विधि के स्रबोत धनुजेब किसी घन्य रीति

से चालू करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इसमे कम अविधिः के

भीतर कर सकता है।

(ii) यदि भावेदक बंधककर्ता ध्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से सिक्ष है जिसके लिये वह संजूर किया गया है या यदि भावेदक बंधककर्ता दिश्वलिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा में नहीं रहता है भयवा यदि भिन्न के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यू हो जाती है या यदि भविदक बंधककर्ता उक्त नियम में वितिद्व भीर उसकी और में मृत्यू लग किसी निवंधन, सर्व और अनुबंध का अनुपालन नहीं करता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में भिन्न का सम्पूर्ण मृत्यक्षन या उसका

^{*}जो लागू हो वह लिखिए।

^{***}यदि अभिम के प्रतिसंदाय का ढंग निस्त 5 में बिहित ढंग से निश्त **है तो** नदानार इनको भास में परिवर्तने कर दिया जाएगा।

[†]यह 180 से मधिक नहीं होगी।

[‡] यह 60 से मधिक नहीं होगी । 🕻

जतना भाग जो उस समय देव रहता है और जिसका संदाय नहीं किया गया है, भीर उस पर " "प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से क्याज हो बंधकदार द्वारा उक्त अधिम को पहली किस्त से दिए जाने की तारी असे परिकलित किया जाएगा, तुरन्त संदेय हो जाएगा। इसकी किसी बात के होते हुए भी, यदि प्रधान बंधककर्ता भिप्रम का उपयोग किसी ऐसे अयोजन के लिये करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न हैं जिसके लिये वह मंजूर किया गया है तो बंधकदार, प्रावेदक बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी प्रमुख्यासिक कार्रवाई कर सकेगा औ उसके (प्रावेदक बंधककर्ता को) लागू सेवाई कि मधीन उपयुक्त हों।

- (iii) उक्त नियमों के अनुसरण में ब्रीर उर्युक्त प्रतिकृत के लिए तथा उपर्युक्त प्रिम के ब्रीर उसे पर ब्याज के, जो उसके परवात किसी समय या समयों पर इस विलेख के निवेधनों के प्रधीन बंधकदार की देव हों, प्रसिसंदाय को प्रतिभूत करने के लिये बंधककर्ती, इसके द्वारा बंधकदार की उक्त सम्पूर्ण बंधक सम्पत्ति जिसका पूरा वर्णन इसमें झाँगे लिखी झेनु-सूची में किया गया है उस सम्प्रतित पर अधककतुनियों द्वारा निर्मित या र्नियभित किये जामे वाले भवनी प्रथमा तत्समय उस पर रखी सामग्री का उक्त बैंघक संपीति से संबंधित सभी यें किन्ही ग्रीधकारों, सुबानारों ग्रीर बर्मुलग्नकों सहित धनुवान, हस्तांतरण, बतुरण ब्रीर समनुदेशन कर्ते हैं। बंधकवार उक्ते बंधक संगतित को, उसके बनुलग्नकों सहित जिसके बन्तर्गत उक्त बंधक सम्पत्ति पर के सभी निर्माण ब्रीर ऐसे भवन जो निर्मित किए गए हैं यो इसके पश्चात निर्मित किये जाए, अथवा उस पर तत्सम्य रेखी सामग्री भी हैं सभी विस्लिंगमों से मुक्त पूर्ण रूप से धारण करेंगा धीर उसको उपयोग करेंगा। किन्तु यह इसमें जागे दिए हुए मोर्बर संबंधी उस उपर्वेष के प्रधीन होगा कि यदि विधककर्ता, वधकवार को इसके द्वारा प्रतिभूत उत्ते मुलबन ब्रीर ब्याज का भार ऐसी मन्य रकम का (यवि कोई हो) र्फी बुधिकेकेत्रिकी द्वारी बंधकदार को उक्त नियम के निबंधन भीर गती के अधिर्म सर्विय अवधारित की जाए सम्यंक रूप से संवाय इसमें वी हुई रीति से कर देंगे तो बंधकवार उसके बाद किसी भी समय बंधककतियों के भन्रोध भारे खर्च पेरी उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिहस्तातरण भार प्रति धेतरणे बंधकंकतिथीं को उनेके उपयोग के लिये या उनके निदेशानुसार उपयोग के लिये कर देगा।
- (iv) इसके द्वारा प्रभिव्यक्त रूप से यह करार किया जाता है भीर घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता घरनी घोर से की गयी घीर इस में दी हुई प्रसंविदायों की भंग करते हैं या यदि मानेदक बंधककर्ता दिवालिया हो जाना है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/प्रधिवृत्तिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है या यदि उन सभी रकमों के जो इस विलेख के अधीन बंधकदार की संदेय हैं, घोर उन पर न्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यु ही जावी है या यदि उक्त प्रश्निम्या उसका कोई माग इस बिलेख के प्रभीन या किसी अन्य रूप से तुरस्त संदेय हो जाता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके किसी भाग का विकय, न्यायालय के हस्तक्षेप के विना, एक साथ का टुकड़ों में और लोक नीलाम द्वारा या प्राइब्रेट संबिदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका क्रय कर ले या विकय की किसी संविदा को विश्वण्डित कर दें और उसका पूनः विकय कर दे तथा ऐसी किसी हाति के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो। उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिये, नो बंधकवार दीक समाने, सभी कार्य करे भीर हस्तातरण पत्रों का निष्पादन करे। यह बोबका की जाती है कि बेचे गुए पुरिसर या उसके किसी भाग के कृप बन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केता/केताकी ने क्या धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त मक्ति के मनुसरण में किए गुए किसी विकय से प्राप्त धन की बंधक-बार न्यास के रूप में घारण करेगा । उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विक्य पर हुए कार्चका संवाय किया जाएगा भीर तब इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय

देय अन को चुकाने में था उसके लिये, धन का संदर्ध किया आएया कौर यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ता को दे विदा जाएगा।

- (V) बंधककर्ता इसके क्षारा बंधकक्र्यार के साझ यह प्रसंत्रिया करते
 हैं कि:-
 - (क्.) ब्रंधकक्षांश्ची को इस बात का विधिपूर्ण मिककार भीर प्राधि-कार है कि वे बंधक संपत्ति का, बंधकदार की भीर उसके उप-योग के लिए भनुदान, हस्तातरण, भन्तरण भीर समनुवेशन उसक रोति में करें।
 - (बु) प्रावेदक बंधककर्ता मकान के निर्माण/उक्त मकान में प्रावास स्थान में परिवर्धन का काम उस अनुमोवित नक्को धीर उन विनिर्देशों के बनुसार ही करेगा जिनके घाधार पर उक्त घश्रिम की संगणना की गयी है और वह मंजूद किया गया है, जब तक कि उससे विचलन की भनुका बंधकदार ने न दे दी हो। श्राखेदक संधकु-कर्ता, कुर्सी/छल पड़ने के स्तर पर घनुक्रीय प्रग्निम की किस्तों के लिए भावेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्षे कौर प्राक्कलन के बनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं और यह कि निर्माण कार्य कुर्सी/ छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है झौर मंजूर किए गए झिन में से ली जा चुकी रकम कुए वस्तुतः उपयोग मकान के निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्नों के सही श्रोने का सत्यातन करने के लिये बंधकदार को स्वयं या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की धन्मति देगा/देगी। यदि बंधककर्ता होई मिन्धा प्रमाणपक देता है तो उसे बंधकदार को वह सम्पूर्ण ग्रिग्रिम, जो उसे मिला है तथा इस पर '''''* प्रतिशत प्रतिवर्ध की दर से व्याज देना होगा।
 - (ग) आबेदक बंधककति मकान का निर्माण/उक्त मकान में आबास स्थान में परिवर्धन के कि बंधकदार में इस काम के लिये निर्माल करना जब तक कि बंधकदार में इस काम के लिये निर्माल क्या में समय न बढ़ा दिया हो। इसमें अपितृत म होने पर प्रधान बंधककर्ती को, उसे दी गयी सन्पूर्ण रकम का फीर उक्त निरमों के सुधीन परिकलित ज्याज का एक मुश्त प्रतिसंवाय तुरन्त करना होगा। आवेदक बंधककर्ती मकान पूरा होने की तारी बा की सुधान बंधकदार को देगा और वह बंधकदार के इस आश्रय का एक प्रमाणपत्र देगा कि प्रधान की पूरी रकम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिये किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।
 - हित्रण--ज्य प्रश्निम बने बनाए मकान्/प्रकृष्ट के क्रम के लिये हैं मा उस उधार के प्रतिसंदाम के लिये हैं जो धाबेदक ने किसी मकान्/प्रकृष्ट के निर्माण या क्रम के लिये लिया है तब खण्ड (ख) और (ग) लागू नहीं होंगे।
 - (क) बंधककृती भएरतीय जीवृत् बीमा निगम में उस मकृति पर दुरन्त अपने बार्ष पर बीमा उतनी रकृत के जिसे क्राएंगे जो उक्त मित्र की एक में पर बीमा उतनी रकृत के जिसे क्राएंगे जो उक्त मित्र की रक्त से क्रम ने विश्व के जिसे के प्रमान के किर्दा के क्रिया जाता है, अपित, बाद की मित्र तिहा से हानि छा तुक्सान के विश्व की माक्त रखेंगे जैसा कि उक्त नियमों में उपबंध है, भीर बीमा पालिसी बंधकदार को सींप वेंगे। बंधकक्त समय-समय पर उक्त बीमा का शीमियम नियमित कुप से वेंगे भीर जब उनसे घरेशा की अाए, प्रीमियम की रसीवें बंधकदार के निरीक्षण के लिये पेश करेंगे। यदि बंधकृत्व प्रस्ति, बाद, तदित के विश्व बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकतार के निरीक्षण के लिये पेश करेंगे। यदि बंधकृत्व प्रस्ति, बाद, तदित के विश्व बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकतार के निरीक्षण के स्वाह सामक्रकर

नियम के प्रधीन प्रभार्य क्याज की प्रसानाम्य वर।

^{**}यह वह धारीच लिखिए जिस तारीच को प्रश्निकी पहली कि त बंधककर्ता को दी गयी है।

नहीं होंगा कि वह उक्त मंकान का बीमा बंधककर्ताओं के बच्चे
पर करा ले भौर प्रोमियम की रकम को प्रग्निम की बेकाया रकम
में जोड़ ले। तब मानेदक बंधककर्ता को उस पर ''''
प्रतिवर्ष की वर से स्थाज देना होगा मानो प्रीमियम की रक्म
उसकी उक्त प्रशिम के भाग के रूप में दी गयी थी। यह स्याज
उसे उस समय तक देना होगा जब तक कि वह रकुम बंधकदार
को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी वसूली इस रूप
में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभृति के संत-
र्गत माने वाली रकम हो । वैधककर्ती जब भी उनेसै भर्पैक्षित
हो, बंबेकदार को एक पन्न देंगे जो उस बीमा करने वाले के
नाम लिखा होगा जिससे उस मकीन का बीमा कराया गया है। यह पत्र इसेलिये होगा कि बंधकवार बीमा करने वाले की इस
यह पत्न इसीलये होगा कि बंधकदार बीमा करने वाल की इस
सध्य की सूचना वे संके कि बंधकदार उस बीमा पालिसी में
हितनब है।

- (क) बंधिककर्ती उक्त मकान को अपने अर्च पर अच्छी मरम्मत की हालते में रखेंगे और बंधिक सम्मत्ति की बाबत नगरपालिका के और अन्य सभी देनदारियों उस समय तक नियमित रूप से देंगे जब तक कि बंधिकदार को अपने पूरी तरि से चुकी नहीं दिया जाता है। बंधककर्ता, बंधकदार को उक्त आग्रय को एक वार्षिक अमाग्यत भी देंगे।
- (च) बंधककर्ता मंकान पूरा होने के बाव बंधकदार की यह सुनिश्चित करने के लिये कि मकान अंक्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएँ उस समय तक वेंगे जब तक कि मर्थिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बाबेवक बंधककर्ता ऐसी कोई रुक्त बौर उस प्रर देय ब्याज यदि कोई है, बंधकदार को सौटाएगा जो अधिम के मद्दे, धंस समय के आधिक्य में ली गयी है जिसके लिये बंधिम मंजूर किया गया था।
- (ज) बंधककर्ता, बंधक संपरित को इस विलेख के जारी रखने के वौरान न तो भारित करेंगे, न उस पर बिल्लगम सुजित करेंगे, न उसका सम्य संक्रमण करेंगे भीर न उसका किसी सन्य प्रकार से क्यम करेंगे ।
- (का) इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हुक होगा कि वह प्राप्तिम की बोर्च रक्तम प्रीर उस पर ब्याज जिसका संवाय प्रावेदक बंधककरी की सेवा निवृदित के समय तक या यदि सेवा निवृदित से पूर्व उसकी मृत्यु हो गयी है तो उस समय तक नहीं किया गया है, पावेदक बंधककरीं की मंजूर किये जाने वाले सम्यूज उपवाम या उसके किसी विनिद्दिष्ट भाग में से बेसून कर लें।

भनुभूचा जिसका ऊपर उत्लेखं किया गया है* इसके साक्य स्वरूप विद्वनीतिर्मित देस पर प्रपति हस्तीक्षीर कर दिए।

उक्त बंधकर्कतीयो	
· · · · · · · · · · · ने	(ह स्ता म र)
(1)	(प्रवस साक्षी का काम, पता धीर व्यवसाय)
	(प्रयम साभी के हस्ताकर)

*इसे बंधककतः भरेंगे।

<u></u>	
(2)	(द्वितीय ताली का नाम पता धीर व्यवसाय)
•••••••••••	(द्वितीय साजी के हस्ताकर)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।	
बसके सोड्यस्वरूप सरकार के लि के मादेश मीर निवेश से	र्वे और उसकी भीर से तथी बोर्ड
कार्वालय के श्री	•••••ने
इसं विलेखें पर	(हरताकर)
	· ·
(1)	(प्रवम साक्षी का नाम, वेता और व्ययसाय
	(प्रयम साक्षी के हस्ताकारः)
(2)	(दितीय सोशी का नाम, पता और व्यवसाय)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।	(द्वितीय साश्री के हस्ताक्षर)≨
भारत के राष्ट्रपति के लिए भी भीर निवेश से ''''ने	र उनकी घोर से तथा उनके मादेश मन्नालय/कार्यालय के श्री
(1)	(प्रथम सुक्षि का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय)
	्राज्य (अप (अप (अप) (प्रथम साक्षी के हस्ताकर)
(2)	(द्वितीय सीमी का नाम, पेता) और स्थवसाय)
की उपस्थिति में हस्तोक्षर किए।	(द्वितीय साक्षी के हस्ताकार)
भ्यान वें: मानेवकों को सुलाह वी शुरुक देने से पूर्व यह सुनि	आती है कि इस परताकेल पुर केटाम पित्रवत करने के सिए कि क्या स्टाम पित्रवत करने के सिए कि क्या स्टाम मिल सकती हैं अपनी राज्य सर्कारों
प्राचित पट्टाधृति है तब निष्य का सम्पति पट्टाधृति है तब निष्य का प्र	हैं। पर प्रमुख्या के किस के किसी पित किये जाने बाल बंधक विशेष क्य

(विनियम ७ देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री
भी के श्री
है और जो इस समय में नियोजित है (जिसे इसमें भीगें कि ककतीं कहा गया है और इसके अन्तर्गत, उन्नके कुरिस, निष्पुद्रक, श्रासंक और समनुविधिती भी है, जब तक कि ऐसा विषय या संवर्ध से अपविजित या उसके विषय नहीं है) और इसके प्रमुकार के रूप में निवर्भ प्रमुकार कहा गया है और इसके प्रमुकार कहा गया है और

इसके अन्तर्गंत	उसके	उत्तरव	र्वी, भौर	समनुद्र	शिती	भी	₹	সৰ	तक	कि	ऐसा
विषय या संद	र्म से म	্ৰজি ন	या इसके	विरुद्ध	नही	₹)	के	बीच	সা	ा त	ारी ख
• · · · · · · · · · · · को किया गया है ।											

- *(1) भूमि का क्रंय करने के लिये और उस पर मकान बनान के लिए यां* (उक्त भूमि पर विद्यमान मकान में प्रानास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
- *(2) (उक्तः भूमि पर मकान बनाने के लिये या* (उक्त भूमि पर बने मकान में द्यावास स्थाम का विस्तार करने के लिए)।
 - *(`3) 'उक्त बने बनाए मकान का क्रय करने के लिये।

बंधकदार कुछ निबंधनों भीर शतौं पर · · · · · · · ' रूपए की उक्त रकम बंधककर्ता को देने के लिये सहमत हो गया है ।

उक्त अग्रिम की एक गर्स यह है कि बंधककर्ता को चाहिए कि वह इसमें भागे अनुसूची में वर्णित सम्पत्ति का बंधक करके उक्त अग्रिम के प्रतिसंदाय को और उन सभी निबंधनों भीर शतों के सम्यक् अनुपालन को प्रतिभूत करे जो नव तूतीकोरिन पत्तन न्यास कर्मचारी (मकानों के निर्माण, आबि के लिये अग्रिम का अनुदान) विनियम, 1978 में (जिसे इसमें आगे 'उक्त विनियम' कहा गया है और इसमें जहां संदर्भ के अनुकूल हो, तत्समय प्रवृत्त उसके संगोधन मा उसके परिवर्धन भी हैं) दी हुई हैं।

ग्रौर बंधकदार ने---

बंधककर्ती को बंधकदार से उक्त प्रथिम निम्नलिखित किस्तों में मिलना

हैं: ┃ •*····तारीख को मिल कके ≸

** क्रिक्ट का निष्पादन करेंगे।

** · · · · · · · • • • • • जब जब मकान का निर्माण कुर्सी के स्तरतक पहुंचेगा।

** ' रपए तब जब मकान का निर्माण छन के स्तर तक पहुंचेगा, परन्तु यह नव जब कि बंधकदार का यह समाधान ही जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें मकान बनाया गया है जल प्रदाय, सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालिया ग्रीर मलबहन जैसी सुविधाग्रों की वृष्टि से पूरा हो गया है।

(भीर परिसर के पट्टाकर्ता ने बंधक का प्रनुमोबन इस मर्त पर किया है कि यदि इसमें भन्तविष्ट शक्तियों के भ्रधीन या अन्यशा सम्परित का विकय किया जाता है तो ऐसे विकय के खर्च के पश्वात् पहने उने अनुगाँजन वृद्धि में उसका हिस्सा विया जाएगा जैसा कि उक्त पट्टे में उपबंधित है।

🛴 यह करार निम्नलिखित का साक्षी है:

(1)(क) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकवार द्वारा बंधककर्ता को संजूर किये गए/दिए गए उक्त ब्रग्निम के प्रशिक्तलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकवार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियन के समी निबंधनी भीर गती का सर्वेव सम्यक रूप से अनुगलन करेना और '''''' रूपए)केवल ' ' ' रूपए) के उक्त ध्रियम का वंधकवार को प्रतिसंवाय ·····रक्षण् (केंबल ····ःक्षण्) की***··· ······ मासिक किस्तों में ग्रपने (बंधककर्ता के) वैसन में करेगा। यह प्रतिसंदाय भास से प्रयाना मकान पूरा होने के पश्चान्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। बंधककर्ता ऐसी किस्तों की कटौतों उसके मासिक वेतन/खुट्टी वेतन/निवहि भसे में से करने के लिये बंधककदार को प्राधिकृत करता है। उक्त अग्रिम की पूरी रकम देने के पण्चात् बंधककर्ता उस पर देय व्याज का संदाय भी ... ·····***मासिक किस्तों में उस रीति में <mark>ग्रौर उ</mark>न निबंधनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिदिष्ट हैं । परन्तु बंधककर्ता ब्याज सहित क्रक्रिम का पूरा प्रतिसंदाय उस क्षारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख से वह सेवा से निवृत्त होने वाला/वालो है । यदि वह ऐसा नहीं करेगा/करेगी तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय अग्रिम की शेष रकम तथा उस पर अयाज ग्रीर वसूली का खर्च बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के प्रधीन धनुत्रीय किसी प्रन्य रीति से वसूल करे। बधकतर्गा इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता है।

^{ः *}जो लागू हो वह लिखिए।

^{ं **}यदि प्रक्रिम के संदाय का ढंग विनियम 5 में विहित ढंग से भिन्न है तो तवनुसार उसकी भाषा में परिवर्तन कर दिया ज।एगा।

^{*** 180} से श्रधिक महीं होगी।

^{**&}lt;sup>**</sup> यह 160 से घधिक नहीं होगी।

जपदान/मृत्यु एवं सेया निवृत्ति उपदान में से करने के लिये बंधकदार कां प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बंधकदा को यह हक होगा कि यह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बार किसी समय प्रवृत्त करे और उस समय दय ध्रीभेम की ग्रेष रकम तथा उस पर ब्याज और यसूली का खर्च बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के प्रधीन ध्रमुकोय किसी क्रम्य रीति से वसून करे। बंधकारी इस रकम का प्रतिसंवाय इससे कम ध्रवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण : [खण्ड (1) (क) भीर (1) (खा) में से जो लागून हो उसे काट दीजिए]।

(1)(ग) उक्त विनियम के अनुसरण में धीर उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त प्रश्निम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों ग्रीर शर्ती का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और ' ' ' ' ' ' रुपए (केवल · · · · · · · · रुपए) के उक्त ग्रग्रिम का बंधकदार को प्रतिसंद्राय ···':: क्यूए (केवल ····' हपए) की ···· मासिक किस्तों में ग्रपने (अंधककर्ता के) वेतन में से करेगा। यह प्रति-, संदाय: के मास से या मकान पूरा होने के पश्चात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा । बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वैतन/छुट्टी वेतन में से करने के लिए प्राधिकृत करता है भौर बंधककर्ता मग्रिम की पूरी रकम का संदाय करने के पण्चात् उस पर देय क्याज का भी ' ' ' ' रुपए की ःःःः मासिक किस्तों में संवाय ग्रपनी ग्रधिवर्षिता की तारीख तक करेगा तथा अग्रिम दी गयी रकम पर अग्रिम की तारीख से उसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के ब्याज की उस वाकी रकम का जो उसकी श्रधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, संदाय ध्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान से करेगा धौर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन में से तथा उस शेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्य्/सेवा नियृत्ति/ ग्रिधिविषता की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि उसकी मृत्यु की सारीख को कोई प्रतिशेष ग्रसंदत्त रह जाता है तो बंधकवार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे ग्रीर उस.समय देय अग्रिम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज भीर वसूली का खर्च, बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के भन्नीन मनुशेय किसी भन्य रीति से वसूल करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम प्रवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण : खण्ड (1)(क), (1)(ख) या (1)(ग) में से जो लागू न हो उसे काट दीजिए।

(ii) यदि बंधककर्ता ध्रमिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति, श्रिधविषता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है ध्रयवा यदि ध्रमिम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मूख्यु हो जाती है या यदि बंधककर्ता उक्त विनियम में विनिदिष्ट धौर उसके धार से ध्रनुपालन किए जाने वाले किसी निबंधन, धर्त धौर ध्रनुबंध का ध्रनुपालन नहीं करता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में ध्रमिम का सम्पूर्ण मूलधन या उसका उतना भाग जो उस समय वेय रहता है और जिसका संदाय नहीं किया गया है, धौर उस पर "" " " प्रतिचात प्रति वर्ष की दर से स्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त ध्रमिम की पहली किस्त के दिए जाने की सारीख से परिकलित किया जाएगा, तुरन्त संदेय हो जाएगा। इसकी किसी बात के होते हुए भी, यदि बंधककर्ता श्रमिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भ्रिम है जिसके लिए वह मंजूर

किया गया है तो बंधकवार बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी भनुशासनिक कार्रवाई कर सकेगा जो उसको (बंधककर्ता को) लागू सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त हो ।

(iii) उक्त विनियम के ग्रनुसरण में गौर उपर्युक्त प्रतिफी के लिए तथा उपर्युक्त ब्रिक्सि के धौर उस पर क्याज के, जो उसके पश्चात् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के प्रधीन बंधकदार की देय हो, प्रतिसंदाय को प्रतिभूत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधक-् दार को तारीखः के उक्त पट्टे में समाविष्ट उक्त सम्पत्ति का जिसका पूरा वर्णन इसमें आगे लिखी अनुसूची में किया-गया है, उक्त संपत्ति पर (जिसे इसमें झागे बंधक संपत्ति कहा गया है) बंधककर्ता द्वारा निर्मित्त या निर्मित किए जाने वाले भवनों प्रथवा तत्संमय उस पर रखी सामग्री का उक्त बंधक संपत्ति से संबंधित सभी या किन्हीं भक्षिकारीं, सुखाचारीं भौर अमुलग्नकों सहित अमुदान, हस्तांतरण, भंतरण भौर समनुदेशन बंधकदार द्वारा की गयी प्रसंविताओं भौर इसमें अंतर्विष्ट शर्तों के प्रधीन रहते हुए करता है । बंधकदार उक्त बंधक संपत्ति को पूर्ण रूप से किन्तु उक्त पट्टे के निबंधनों भीर प्रसंविवार्थों के प्रधीन रहते हुए धारण करेगा । किन्तु यह इसमें आगे दिए हुए मोचन संबंधी इस उपबंध के ब्राधीन होगा । यह भी उपबंध है तथा इसके पक्षकारीं द्वारा यह करार किया जाता है भौर घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता, वंधकदार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन ग्रौर ब्याज का ग्रौर ऐसी ग्रन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ता द्वारा बंधकदार को उक्त विनियम के निबंधनों भौर भर्तों के भ्रधीन संदेय भवधारित की जाए, सम्यक् रूप से संवाय इसमें वी हुई रीति से कर देगा तो बंधकवार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ता के श्रनुरोध धौर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिहस्तांतरण घौर प्रति ग्रंतरण बंधककर्ता को उनके या उनके निदेशानुसार उपयोग के लिए कर देगा।

(iv) इसके क्षारा श्रिभिञ्यक्त रूप से यह करार किया जाता है और घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता अपनी मीर से की गयी भीर इसमें दी हुई प्रसंविदामों को मंगकरता है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/ग्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है यायदि उन सभी रकमों के जो इस विलेख के प्रधीन बंधकदार को संदेश है, ग्रौर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि उक्त ग्राग्निम या उसका कोई भाग इस विलेख के ग्राधीन या किसी ग्रन्थ रूप से तुरन्त संदेय हो जाता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके किसी भाग का विक्रय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या टुकड़ों में घौर लोक नीलाम द्वारा था प्राइवेट संविधा द्वारा कर थे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका ऋय कर ले या विकय की किसी संविदा को विखंडित कर दे झीर उसका पुन: विक्रय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जोें∙ ऐसा करने से हो । उसे यह गक्ति भी होगी कि वह ऐसा करने के लिए, जो बंधकवार ठीक समझे, सभी कार्य करे और हस्तातरण पत्नों का निष्पादन करे। यह घोषणा की जाती है कि धेमे गए परिसर या उसके किसी। भाग के कय धन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केताया केताओं ने कय धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणाः की जाती है कि उक्त गानित की अनुसरण में किए गए किसी विक्रय* पर प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप धारण करेगा । उसमें से अर्थ प्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का संदाय किया जाएगा **(ग्रीर उसके बाद; बंधक संपत्ति के पट्टाकर्त्ता, ''''''''''''''''''' की उक्ता पटटे के खण्ड '''''कि इंतुसरण में, अनुपार्जित वृद्धि के 50 प्रतिशत का संदाय किया जाएगा) ग्रौर तब इस विलेख की प्रति भृति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संवायः किया जाएगा और यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ताको दे दिया जाएगा।

^{*} नियम के प्रधीन प्रभार्य ब्याज की प्रसामान्य दर।

^{*} जो लागून हो उसे काट दीजिए।

- (5) बंधेनैकेती इसके द्वारी बंधकवार के साथ यह बसंविदा करती है कि :
- (क) बंधककंति को इस बात का, विधिपूर्ण धर्धकार ग्रीर प्राधिकार है कि वे बंधक संपत्ति का बंधकवार को ग्रीर उसके उपयोग के लिए भनुदीन, हस्तीतरण, बंतरण ग्रीर समनुदेशन उक्त रीति में करें।
- *(वा) कि बंधककर्ता मकान के निर्माण/उक्त मकान में प्रावास स्थान में परिवर्तम को काम उस धनुमीदित भवा ग्रीर उन विमिर्देशों के प्रमुखार ही करेगा जिनके प्राधार पर उक्त प्राप्तमें की संगणना की गयी है और वह मंजूर किया गया है, जब तक कि उससे विकलन की प्रमुखा वंधकदार ने न दे वी हों। बंधकदार कुटी/छन पड़ने के स्तर पर धमुखेय प्राप्तिम की किस्तों के लिए धावेवन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्से भीर प्राक्कलन के प्रमुखार किया जा रहा है जो उसमें बंधकदार को विए हैं, कि निर्माण कार्य कुर्सी/छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है और मंजूर किए गए धावम में से ली जा चुकी रकम का बस्तुत: उपयोग मकान के मिर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्ती के सही होने का सत्यापन करने के लिए वंधकदार को स्थय या उसके प्रतिनिध के द्वारा निरीक्षण करने की धनुमति वेगा/वेगी। यवि बंधककर्ता कोई मिथ्या प्रमाणपत्र वेता है तो उसे बंधकदार को वह सम्पूर्ण धावम, जो उसे मिला है तथा उस पर

- **(ग) बंधकंकती मकान का निर्माणिजिक मकान में पायांस स्थान में परिवर्धन " के अठारह मासे के भीतर पूरी करेगी जब कि बंधकंदीर ने इस काम के लिए लिखित क्य में संगय ने बढ़ी दियों हो। इसमें व्यक्तिकिम होने पर बंधकंकती को, उने दो गई संपूर्ण रक्षम का और उक्त विनयम के अवान परिकर्शनन व्याज का एके मुर्शन प्रतिसंदाय तुरन्त करना होगा। बंधकंकती मकान पूरा होने को तारीख की सूचना बंधकंदार को देगा और वह बंधकंदार को इस प्राथ्य का एक प्रमाणपन्न देगा कि अग्रिम की पूरो रक्षम का उपनेग उती प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।
- (क) बंधकंकती भारतीय जीवन बीमा निगम में उप मकान का तुरस्त भवने **अर्च** पर बोम। उत्ती रक्तम के लिए कराएगा जा उक्त प्रतिम की रक्षण से कम न ही । वह उसे उसे समय तक जब तक कि वंधकैंबार को अभिन पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है, अन्ति, बाद और तदित से हानि यां मुकसान के विरुद्ध बोमाहते रखेगा जैसा कि उक्त वितियम में उपनेष्ठ है, भीर बीमा पालिसी बंधेकवार को सीप वेंगे । बंधेककर्ती समय समय पर उक्त बोमां का प्रोमियम नियमित का से देन। ग्रौर जब उससे भवेका की जाए, प्रोमियमं की एसीवें बंधकदार के निरोक्षणे के लिए पेश करेगा । यदि बंधककेंदी भ्रत्नि, बाके, तड़ित के विरुद्ध बीम ें नहीं बाराता है तो बंधेक्वार के लिए यह विधिवूर्ण, किन्तु भावदकर नहीं होगा कि वह उक्त मेकान का बीमा बंधेनैकर्ती के खर्च पर करीले धीर प्रीमियम की रकंम को ग्र**प्रि**म की वकाया रकंम में जोड़ ले। तब वैधक-करों को उस पर व्याज देना होना मानो प्रोमियन को रकम उसकी 😬 ····· प्राप्त के पूर्वीके प्रक्षिम के भागे के का में दो गई। थीं । यह व्याज उसे उस समय तक देना होगा जबतक कि वह रकमें बंधकंदार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी बसूंखी इस रूप में नहीं हो जाती है मानों वह इस विलेख की प्रतिमृति के प्रतर्गत आले वाली रक्तम हो । बंधककर्ता, जब भी उससे घरेकित हो, बंधकदार को एक पक्ष वेगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होंगा जिससें उसी मकान का बोमा कराया गया है। यह पत्र इसिन होता कि बंधक-दार बीमा करने वाले की इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंबकदार उस बीमा पालिसी में हितबद है।

- (ई) बंधिककर्ती उक्त मंकान की अपने खंबी पर अंध्वेत मरम्मित की हालते में रखेंगा और बंधेक सम्पत्ति की बॉबत नगरगिलका के और प्रमेंथ सभी स्विनीय रेट, कर, और अन्य मनी देनेदारियों उस समय तक निर्वमित रूपें से देंगा जब तक कि बंधिकदार की अधिम पूरी तौर में चूकी नहीं दिया जाता है। बंधककर्ता, बंधकदार की उसे अधिम का एक वाधिक प्रमाणपंत्र भी देगा।
- (च) बंधककर्ता, सकता पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिरिवर्त करने के लिए कि संकाल अन्छी सरम्मंत की होलत में रखा गया है, निरी-क्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देगा जब तक कि अभिमं पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बंधककर्ता ऐसी कोई रक्षम और उस पर देय, ब्याज, याँव कीई हो, बंधकदार को लौटाएगा जो ग्राग्निम के सड़े, उन व्यव्य के ग्राधिक्य में ली गई है जिसके लिए श्राग्निम मंजूर किया गया था।
- (ज) तारीखं को उक्त पट्टा प्रज उक्त बंधेक संवर्षि को बिधिमान्य और अस्तित्वयुक्त पट्टा है और वह किसों मो रूप में मूर्य्य या गून्यकरणीय नहीं है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा आरक्षिक किरीए को संवाय और उसमें दी हुई असंविद्याओं और मोर्सों को पालन इस विलेख की तारीख तक कर विथा गया है और इसमें इसके पूर्व वार्षित रीति में इसका समनुवेशन किया जा सकता है।
- (झ) बंधककर्ता उस समय तक जब तक कोई धन उक्त बंधक संगत्ति की जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा सननुदेशित प्रभिष्यक है, प्रतिभूति पर वेय रहता है भीर हर हालत में उक्त करार को प्रश्नीय कर पट्टे की सभी प्रसिविधों का भीर उक्त पट्टा बिलेख में अंतिबिध्ट शर्तों का सन्त्रक् रूप से अनुपालन करेगा तथा बंधकवार को उन सभी अनुपीलनों, वादों, कार्यवाहियों, खर्ची, प्रभारों, वादों और मांगों को बाबत क्षतिपूरित रखेगा जो उक्त किराए का संवाय न किए जाने के कारण या उक्त प्रसंबिदाओं और शर्तों के या उनमें से किती के भंग किए जाने, पानन या अनुगलन न किए जाने के कारण उपनत होंगी।
- (मा) बंधकर्काती, बंधकं संपत्ति को इस विलेख के जारी रहते के दौरान न तो भारित करेगा, न उस पर बिंग्लर्गम सृजित करेगा, न उसका भन्म संकामण करेगा भीर म उसका किसी भ्रम्य प्रकार से स्वयन करेगा।
- (ट) इसकी किसी बाल के होते हुए भी बंधकर्वार की यह हुक होगा कि वह प्रक्रिम की बोध रकने प्रीर उस पर क्यांत्र जिसेका संदीय बंधकर्कती की सेवानिवृत्ति के समय तक या यदि सेवानिवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गर्या है, बंधकर्कती की मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपयान या उसके किया विनिवृद्धि भाग में से बसूल कर से।

प्रानुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है ।††

इसके साक्यस्वरूप बंधककर्ता ने भौर बोर्ड के लिए भौर उसकी भोर

से ' कार्यालय के श्री ' के हस पर भारते
हस्ताक्षर कर दिये हैं ।

उक्त बंधककर्ता ' ने (हस्तेंक्षरें)

(i) (प्रथम संधी का नाम, पता भौर व्यवसाय) (प्रथम संभी के हस्ताक्षर)

(2) · · · · · · · · · (द्वितीय साक्षो का नाम, पता भीर ध्य-बसाय) · · · · · · · · · (द्वितीय साक्षा के हस्ताक्षर)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

^{*}जहां भग्निम बने बनोएं मकान के ऋष के लिए हैं वहां खण्ड (ख) भीरें (ग) लागू नहीं होंगे।

^{**}नियम के प्रधीन प्रभार्य क्याज की प्रस्तावित दर ।

[†] महा वह तारीख लिखिए जिस तारीख की पश्चिम की पहली किस्त बंधककर्ता की दी गई है। † १इसे बंधककर्ता भरेगा।

भारत के राष्ट्र पति के लिए भीर उनकी और से नया उनके आदेग भीर निदेश से मंत्र(न्य/काशीन्य के आ
े • • • • विकास कर • • • • • • • • • • • • • • • • • •
(हस्:गभर)
(1) · · · · · · (प्रयुत्त सः(भ्री को तृत्त्व,पतः(भ्रौर क्ष्यत्रसःसः) · · · · · · · (प्रयम सःक्षी के हःतःबार)
(2)(दिसीय साक्षी का नाम, पना भीर
व्यवसाय) · · · · · · · · · · · (द्वितीय साभी ्के ,हस्त(क्षर)
की उपस्थिति में ह स्सा भ र किए ।
ध्यान हैं:- प्राक्षेत्रकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टांप शुल्क देने से पूर्व ग्रह सुनिधिचत करने के लिए कि क्या स्टांप शुल्क के संद्राय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से संपर्क कर लें।
प्ररूप संख्या ४-क
जहा सुस्पति पट्टाधृति है इसीर संयुक्त रूप से पति स्पीर पब्ही के नास से धारित है तह निस्मातित किए जाने बाले संबक्त निनेज का प्रका।
यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री
इस समय के रूप में नियोजित है तथा उसका पति/परनी के कार्यालय में
(जिन्हें इसमें घागे संयुक्त रूप से 'बंधककारी' कहा गया है और इसके घंतर्गत जनके वारिस, निष्पादक प्रशासक धीर समनुद्रोधितों भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से अपविजित या उसके विरुद्ध तहीं हैं) धीर दूसरे पक्षकार के रूप में तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड जिसे इसमें घागे "बंधकदार" कहा गया है धीर इसके घंतर्गत उसके उत्तरवर्ती धीर समनुदेशिती भी हैं जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से घान्नजित या उसके विरुद्ध नहीं हैं) के भीच घाज तारीख
तारी वा के पट्टे द्वारा, जो प्रीर प्रीर के बीच किया गया था, पट्टाकर्ता ने में स्थित सम्पति का जिसका विस्तृत वर्णन इसमें आगे धनुसूची में किया गया है, पट्टान्तरण ए० के वार्षिक/
मासिक किराए पर से मारभ होने वाली
वर्षे की श्रवधि के लिए और इस बात के सधीन रहते हुए कि उसमें वृणित प्रसंविदाओं और मतौं का पालन और श्रतुपालन किया जाएगा, वृष्टकरुती को दिया है।
कृषककर्ताओं में से एक श्री ने (जिसे इसमें झाते भागेदक बंधकर्ता कहा गया है) त० (केंद्रण
कप्यों) के प्रतिम के लिए ब्रांगकदार की प्रावेदन किया है। प्रावेदक ब्रांगक- कर्ता ने यह प्रतिम निम्निलिखित प्रयोजन के लिए मांगा है,
 (1) भूमि का अल करने के लिए और इस पर मकान सनाने के लिए.
या है (उक्क भूमि पर विद्यमान मुकान में भावास स्थान का विस्तार करने के लिए) *(2) उक्त भूमि पर मकान बनाने के लिए या ^क (उक्त भूमि पर
बने मकान में ध्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
*(3) उक्त बने बनाए सकान/फ्लैट का क्रेप करने के लिए,
बंधकवार कुछ निबंधनों ग्रीर गतौं पर : : : : : : : : : : : : : : : : : :
*ओ लागू हो वह लिखिए।

उक्त प्रियम की एक शर्त यह है कि बंधककर्ता को चाहिए कि बह इसमें मांगे अनुसूची में वृणित सम्पत्ति का बंधक कर्ड़के उक्त प्रियम के प्रति संबंध को प्रीर उन सभी निबंधनों भीर शर्ती के सम्यक् प्रमुपालन को प्रतिभूत करें जो तूरीकोरिन पत्तन न्यास कर्मकारी (सकानों के निर्माण प्राप्ति के लिए प्रप्रिम का अनुवान) विनियम, 1979 में जिसे इसमें प्राणे "उक्त विनियम" कहाँ ग्या है भीर इसमें जहां संबर्भ के धनुकून हो, तत्समय प्रवृत्त उसके संशोधन या उसके परिवर्धन भी है) दी हुई हैं।

भीर बंधकवार ने

- * (1) अविद्रक बंधकति को इनने (केवल इनने) का अभिन मंजूर कर दिया है। यह सभिन उनने किन्तों में भ्रौर उस रीति में मंदेय होगा जो इसमें आगे बनाई गई है।
- *(2) प्राह्मेदक वंधक्कर्ता हो राज्य राज्य (क्रेजन राज्य) का प्रीप्त विश्व को प्रीप्त उत्त विश्विम में उद्योधित रोति में वे विया है, तथा उस उधार का स्थाज सहित प्रतिसंदाम तथ्य उक्त विश्विम में विष् हुए निव्धानों सप्तैर शाजी का, जिस्हा उद्योध प्राप्त करा लिया है। प्राप्त महा है, प्रतुपालन इसमें प्राप्ते वो हुई रोति से प्रतिभूत करा लिया है।

भावेदक बंधककर्ता को बंधकदार से उक्त प्रम्निम निस्नलिखित किस्तों में मिलना है:

** प्रस्ते तक अन्त्र वंश्रककृत्वी, ब्रांग्रकदार के प्रक्ष में इस ज़िलेक्स का निष्पादत करेंगे।

** रिस्पित क्यों तब जब सकान का निर्माण कृती के स्तर पर पहुंचेगा।

** रिस्पित कि जब मकान का निर्माण कि के स्तर तक पटुंचेगा, परंतु यह तब जब कि बंधकदार का यह समाधान ही जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिल्लों सकान बनाया गया है, जल प्रदाय, सड़कों की प्रकाश ज्यवस्था, सड़कों, नालियों घौर सलवहन जैसी सुविध्याघों की दृष्टि से पूरा हो गया है)

†(भीर परिसर के प्रदेशकर्ता ने बंधक का भनुमोदन इस गर्त पर किया है कि यदि इसमें अंतर्विष्ट शक्तियों के अधीन या अन्यशा सम्पति का विक्रय किया जाता है तो ऐसे विक्रय के खर्च के पश्चात्, पहले उसे अनुपार्जित वृद्धि में उसका हिस्सा दिया जाएगा जैसा कि उक्त पट्टे में उन्बंधित है।)

यह करार निम्न्सलिखित का साक्षी है।

(1) (क) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त विनियम में उपबंध के अनुसार बंधकदार द्वारा आवेदक बंधककर्ती को मंजूर किए गए/विए गए उक्त प्रश्निम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता, बंधकदार से यह प्रसंविदा करते हैं कि बंधकुकर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों ध्रौर शर्जी का सर्दव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे और ''''' रुपये (केवल ·····ःरापये) के उक्त अग्रिम का बधकवार को प्रतिसंदाय ····ः रुपये (केवलः : : रुपये) की †† : : मासिक किस्तों में धावेवन बंधककर्ता के बेतन में से करेंगे। यह प्रतिसंवाय ::: के ''' मास से प्रवदा मज़ान पूरा होते के परचात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। प्राप्तिक बंधककर्ता ऐसी किस्लों की कटौती उसके मासिक बेनन/छुट्टी बेनन/निवृहि भरते में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करना है। उक्त प्रतिम की पूरी रकम देते के बश्काल भानेवृक बंधककार्ता उस पर देप स्थाज का संदाय भी ::: £ मासिक किस्तों में उस रीति में गाँर उन निर्मप्रनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिर्दिष्ट है । परंतु धाबेदक बंधकफर्ता व्याज महित प्रश्निम का पुरा प्रतिसंवाय उस तारीच

^{**}यि श्रिप्रिस के संवाय कः ढंग ब्रिनियम 5 में बिहित ढंग से भिन्त है तो तबनुसार इसकी भाषा में परिवर्षन कर दिया जाएगा। †शह (सामान्यतः) नजूस भूमि को लागू होता है भौर वहां भंतःस्थापित किया जाएगा जहां लागू हो। †*यह 180 से श्रीक्षक नहीं होगी।

[£] यह 60 से मधिक नहीं होगी।

से पूर्व करेगा जिस नारी का वह सेवा में निवृत्त होने वाला/वाली हैं पदि वह ऐसा नहीं करेगा जो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उन। समय देय प्रश्निम की भेष रकम नथा उस पर स्थाज और वसूली का सर्च बंधक संपत्ति का विकय करके विधि के प्रधीन प्रनुतेय किसी अन्य रीति से वसूल करे। धावेदक बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इसमें कम अविध के भीतर कर सकता है।

(1) (क) उकत विनियम के ग्रनुसरण में ग्रीर उक्त विनियम के उपग्रंधों के ग्रमुसार मंधकवार द्वारा भावेवक बंधककर्ता को मंजूर किए गए/विए गए उपन श्राप्तिम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करते हैं कि बंधककर्ला उक्त विनियम के सभी निर्वधनों भीर शर्ती का सबैव सम्यक् रूप से प्रनुपालन करेंगे भीर ''''' रूपये (केवल फप्पण) के उक्त प्रक्रिम का बंधकदार को प्र किस्तों में, भावेदक मधककर्ता के वेतन में से करेंमे। यह प्रतिसंदाय के माम से या मकान पूरा होने के पश्चात्वर्यी माम से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होकर उसकी अधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा और उसकी अधिवर्षिता की तारीख पर जो रकम बकाया होगी नथा प्रग्निम दी गई रकम पर प्रग्निम की तारीख से प्रतिसंदाय की तारीख तक का ब्याज उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृति उपदान में से बसूल किया जाएगा। भावदक बंधककर्ता किस्तों की रक्तम की कटौती उसके मासिक बेनन/फुट्टी देतन/निकहि भरते में से तथा उस ग्रेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्य/सेवा निवृति/प्रधिवर्षिता की तारीख तक है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु किया गया सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए वंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बंधकदार को यह हक होगा कि अह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे घौर उस समय देय प्रग्रिम की गोष रकम तथा उस पर ज्याज ग्रौर वसूली का खर्च, बंधक संपत्ति का विजय करके या विधि के ब्राधीन धनुक्षेय किसी ब्रन्य रीति से बसूल करे। ब्रानेदक बंधककर्त्ता इस रकम का पनिसंदाय इससे कम ग्रवधि के भीतर कर सकता

(1) (क) उक्त विनियम के धनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंत्रूर किए गए/ दिए गए उक्त अग्निम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि गंधककृती उक्त विनियम से सभी निगंधतीं और शर्तों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और '''''' रुपये (केवल : 'राप्या रुपये) के उक्त अग्रिम का बंधकदार को प्रति-(केवल म्पये) संवायभपवे) की,....... मासिक किस्लों में ग्रंपने (बंधककर्ता के देतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय :: के :: माम से या मकान पूरा होने के पक्ष्वातुवर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। बॅधककर्ता इसके हारा बंधकवार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेतन/छट्टी येतम में से करने के लिए प्राधिकान करना है भौर बंधककर्ता प्रिमिस की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देय ब्याज का भी '''' रूपम की '''' मामिक फिस्तों में संदाय प्रपनी प्रधि-वर्षिसा की तारीख तक करेगा तथा प्रश्निम दी गई रकम पर प्रश्निम की क्षारीख से उसके प्रतिसंवाय की सारीख तक के क्याज की उस बाकी रकम क़ा जो उसकी ध्रधिवर्षिता की सारीख को बकाया रहती है, संदाय भ्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति/उपदान से करेगा घोर बंधककर्ता किस्सों की रकम की कटौती उसके मासिक बेलन/छुट्टी बेतन में से तथा उस शेष रकम भी जिसका संदाय उसकी मृत्यु/मेव। निवृत्ति/प्रधिवर्णिता की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निमृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करना है।

मिंदि उसकी मृत्यु की तारीख को कोई मितियेख असंदरत रह जाता है तो संधकयार की यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाव किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय अग्रिम की ग्रेष रकम तथा उम पर ब्याज और वसूली का खर्च, संधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के अधीन भनुज्ञेय किसी मन्य रीति से वसूल करे। संधककर्ती इस रकम का प्रतिसंवाय इससे कम श्रवधि के भीतर कर मकता है। [टिप्पण — खंड (1) (क), (1) (ख) या (1) (ग) में से जो लाग

[टिप्पण — खंड (1) (क), (1) (ख) या (1) (ग) में से जो लागू न हो उसे काट बीजिए]

(2) यदि भावेदक बंधककर्ता अग्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि भावेदक बंधककर्ता विवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/प्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है अथवा यदि अग्निम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यू हो जाती है, या यदि बंधककर्ता उक्त विनियम में विनिर्दिष्ट ग्रौर उसकी मोर से भनुपालन किए जाने वाले किसी निवंधन, गर्त ग्रीर ध्रमबंध का मनुपालन नहीं करता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में प्रश्निम का संपूर्ण मुलधन या उसका उतना भाग जो उस समय देय रहना है और जिसका संवाय नहीं किया गया है भौर उस पर '' ** प्रतिशत प्रतिवर्ध की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त मग्रिम की पहली किस्त के दिए जाने की तारीख से परिकलित किया जाएगा तुरस्त संदेय हो जाएगा। इसकी किसी बात के होते हुए भी, यदि ब्रावेदक बंधककर्ता ब्राग्निम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधकदार भावेदक बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी श्रमुणासिक कार्रवाई कर सकेगा जो उसका (श्रावेदक बंधककर्ता को) लागू सेवा के नियमों के ग्राधीन उपयुक्त हो।

(3) उक्त नियम कि अनुसरण में भीर उपर्युक्त प्रतिफल के लिए तया उपर्यक्त मग्रिम के मोर से उस पर ब्याज के, जो उसके पश्चात किमी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के अधीन बंधकदार को देय हो, प्रतिसंदाय को प्रतिभृत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को तारीख....'..'' उक्त पट्टे में समाविष्ट उक्त सम्पनि का जिसका पूरा वर्णन इसमें घागे लिखी धन्सूची में किया गया है, उकत संपर्लि पर, जिसे इसमें मार्ग बंधक संपरित कहा गया है, बंधककर्ता द्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों भववा तत्समय उस पर रखी सामग्री का, उक्त, बंधक संपरित से संबंधित सभी या किन्हीं प्रधिकारी मुखाचारों और भनुलग्नकों सहित भनुदान, हस्तांतरण, भंतरण और सम-न्देशन बंधकदार द्वारा की गई प्रसंविदाओं ग्रौर इसमें भ्रतर्विष्ट शतों के प्रधीन रहते हुए करते हैं। बंध्कदार उक्त बंधक संपत्ति की पूर्ण रूप से किन्सु उक्त पट्टे के निबंधनों ग्रीर प्रसंविदाशों के ब्राधीन रहते हुए धारण करेगा । किन्तु यह इसमें ब्रागे दिए हुए मोचन संबंधी उपबंध के ब्रधीन होगा अर्थात् यदि बंधककर्ता, बंधकवार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन भौर व्याज का श्रौर ऐसी ग्रन्थ रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ताघों द्वारा बंधकदार को, उक्त विनियम के निबंधनों ग्रीर शर्तों के ग्रंधीन संदेय ग्रंवधारित की जाए, सम्यक् रूप से संबाय उसमें दी हुई रीति से कर देंगे तो बंधकदार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ताओं के घन्रोध गौर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिहस्तानरण भौर प्रति अंतरण बंधककर्ताओं को उनके या उनके निदेणा-नुसार, उपयोग के लिए कर देगा।

(4) इसके द्वारा श्रीभव्यक्त रूप में यह करार किया जाता है भीर घोषणा की जाती है कि यदि श्रावेदक बंधककर्त्ता श्रेपनी श्रोर से की गई 'श्रीर इसमें दी हुई प्रसंविदाओं को भंग करता है या यदि उन सभी रक्तमों के जो इस विलेख के श्रीधीन बंधकदार को संदेय हैं, श्रीर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या

^{*} यह 180 से घधिक नहीं होगी।

^{**} नियम के अधीन प्रशार्य व्याज की प्रसामान्य वर

यदि उक्त ध्रश्चिम मा इसका कोई साग इस विलेख के प्राप्तीन या किसी श्रस्य रूप में तूरत संदेध हो जाता है तो ऐसी प्रस्पेक दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके किसी भाग का विकय न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक मात्र या ट्कड़ी में श्रीर लोक नीलाम द्वारा या प्राइवेट संविदा द्वारा कर दें। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका क्य कर ले या विकय की किसी संविदा की विखंडित कर दे ग्रीर उसका पून विकाय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने में हो। उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिए जो बंधकदार ठीक समझे, सभी कार्य करे और हस्तांतरण पत्नें! का निष्पादन करे। यह घोषणा की प्राती है कि बेचे गए परिसर या उसके किसी भाग के कब धन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केता या केताओं ने कय धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त गक्ति के श्रनुसरण में किए गए किसी विकय से प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप में धारण करेगा। उसमें से सर्व प्रथम ऐसे विकय पर श्रुए खर्च का संदाय किया जाएगा (ग्रीर उसके बाद, बंधक संपत्ति के पट्टाकर्ता को उत्त पट्टे के खण्ड के ग्रनु-सरण में, प्रनुपार्जित बृद्धिध के 50 प्रतिशत का संदाय किया जाएगा) भीर तक इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय देय धन को चकाने में या उसके लिए, धन का संदाय किया जाएगा और यदि कोई धन बाकी रहता है सो वह बंधककर्ता को दे दिया जाएगा।

- (v) बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करने हैं कि:---
 - (क) बंधककर्ताश्चों को इस बात का विधिपूर्ण अधिकार श्रीर प्राधिकार है कि वे बंधक संपत्ति का, बंधकदार को श्रीर उसके उपयोग के लिए श्रनुदान, हस्तांतरण, श्रंतरण श्रीर समनुदेशन उक्त रीति में करें।
 - **(ख) श्रावेदक बंधककर्ता सकान के निमार्ण/उक्त मकान में भावास स्थान में परिवर्धन का काम उस धनुमोदिस नक्से श्रौर उन विनिदेशों के श्रनुसार ही करेगा जिनके ग्राधार पर उक्त अधिम का संगणना की गई है और वह मंजूर किया गया है, जब नक कि उससे विचलन की श्रनुजा बंधकदार ने न दे दी हो। आवेदक बंधककर्ता कूरसी/ छत पड़ने के स्तर पर अनुज़ेय अग्रिम की किस्सों के लिए ग्रावेवन करने समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्से भीर प्राक्कलन के प्रनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं कि निर्माण कार्य कुरसी/छत पढ़ने के स्तर तक पहुंच गया है और मंजूर किए गए ग्राप्रिम में से ली जा चुकी रकम का बस्तुत: उपयोग मकान के निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्नों के सही होने का मत्यापन करने के लिए बंधकदार को स्वयं या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की अनुमति देगा। यदि बंधककर्ता कोई मिथ्या प्रमाणपत्न देना है तो उसे अंधनवार को वह संपूर्ण मग्रिम, जो उसे मिला है सथा उस पर 🗥 🦈 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से व्याज देना होगा। इसके अतिरिक्त उपयुक्त बंधककर्ता के विरुद्ध उसकी लाग् सेवा के नियमों के अधीन उपयुक्त अनुणासनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी।
- **(ग) म्रावेदक बंधककर्ता मकान का निर्माण/उक्त मकान में भ्रावास स्थान में परिवर्धन · · · · · · · *** के म्रट्ठारह मास के भीतर पूरा करेगा जब तक कि बंधकदार ने इस काम में लिए

- लिखित क्य में समय न बढ़ा दिया हो। इससे व्यक्तिक होने पर आवेषक बंधककर्ता को, उसे दी गई सम्पूर्ण रक्षम का भीर उकत विनियम के भंधीन परिकलित स्याज का एक मुक्त प्रति-संदाय करना होगा। आवेषक बंधककर्ता सकान पूरा होने की तारीख की सूचना बंधकवार को वेगा भीर वह बंधकदार को इस आध्य का एक प्रमाणपत्न देगा कि अग्निम की पूरी रक्षम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए श्रष्ट मंजुर किया गया था।
- (प) बंधककर्ता भारती या जीवन बीमा निगम में उस महान का तुरंत श्रपने खर्च पर बीमा उतनी रकम के लिए करायगे जो उक्त श्रमिम की रक्षम से कम न हो। वे उसे उस समय सक जब तक कि बंधकदार को प्रश्निम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है, ग्रग्नि, बाइ ग्रौर सड़ित से हानि या नुकसान के विकड़ी बीमाकृत रखेंगे, जैसा कि उक्त बिनियम में उपबंध है, भीर बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देगे। बंधककर्सा समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमियम नियमित रूप मे देगें भीर अब उनसे अपेक्षा की जाए, प्रीमियम की रसीवें बंधकदार के निरीक्षण के लिए पेश करेंगे। यदि बंधककर्ता ग्रन्सि, बाङ् तड़िल के विख्या बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण, किन्तु आबद्धकर नहीं होगा कि वह उन्त मकान का बीमा बंधककर्ताघों के खर्चपर कराले गौर प्रिमियम की रकम को प्रश्निम की बकाया रकम में जोड़ लें। तब प्रावेदक बंधककर्ता को उस पर ''''प्रतिवर्ष की घर से स्थाज देना होगा मानों प्रीमियम की रकम उसको उक्त अग्रिम के भाग के रूप में दी गई थी। यह स्याज तक देश होगा जब तक कि समय वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी बसूली इस कप में नहीं हो जाती है मानों वह इस विलेख की प्रसिभृति के ग्रंतर्गत ग्राने वाली रकम हो। बंधककर्ता जब भी उनसे भपेक्षित हो, बंधकवार को एक पत्न वेंगे जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस मकान का बीमा कराया गया है। यह पक्ष इसलिए होगा कि बंधकदार बीमा करने वाले को इस लच्या की सूचना दे सकेंगें कि बंधकदार उस बीमा पालिसी में हिसबद्वध है।
- (इ) बंधककर्ता उक्त मकान को भ्रमने खर्च पर श्रज्छी मरम्मन की हालत में रखेने भीर बंधक संपत्ति की वाबत नगरपालिका के श्रीर भ्रत्य सभी स्थानीय रेट, कर, भीर श्रत्य सभी देन-दारियां उस समय तक नियमित रूप से वेंगे जब तक कि बंधकदार को भग्निम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है। बंधककर्ता, बंधकदार को उक्त भ्राग्नय का एक वार्षिक प्रमाण पक्ष भी देंगे।
- (च) अंधककर्ता, मकान पूरा होने के बाद बंधकदार को यह मुित-िश्चत करने के लिए कि मकान ग्रच्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है निरीक्षण करने की सभी मुित्रिधाएं उस समय नक देंगे जब तक कि ग्राधिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) ग्रावेवक बंधककर्ता ऐसी कोई रक्षम ग्रीर उस पर वेय ब्याज, यदि कोई हो, बंधकदार को लौटायेगा जो ग्राग्निम के मुद्दे, उस व्यय के ग्राधिक्य में ली गई है जिसके लिए ग्राग्निम मंजूर किया गया था ।

^{**} जहां ग्राप्रिम बने बनाए मकान के कथ के लिए हैं बहां खण्ड (म्ब) ूप्पीर (ग) लागृ नहीं होंगे।

^{*}नियम के अधीन प्रभार्य ब्याज की प्रस्तानित दर।

^{****}यहां वह नारीख लिखिए जिम नारीख को अग्निम की पहली किस्त बंध्रककर्ता को दी गई है। 887 GI/80---4

56	THE GAZETTE OF INDIA:	EXTRAORDINARY
(স)	तारीख ं क्षा उक्त पट्टा ग्रब उक्त बंधक संगरित का विधिमान्य भौर श्रस्तित्वयुक्त पट्टा है ग्रीर बह्	(1)
	किसी भी रूप में शून्य या शून्यीकरणीय नहीं है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा आरक्षित विराये का मंदाय और उसमें वी	****************
	हुई प्रसंविदास्रों धौर गर्नों का पासन इस विलेख की तारीख तक कर दिया गया है स्रौर इसमें इसके पूर्व वर्णित रीति में इसका सममुदेशन किया जा सकता है ।	(2)
	दसका समगुदशन ।कथा जासकता हा	
(₩)	यंक्षककर्ता उस समय तक जब तब कोई धन उक्त बंधक संगरित की जिसका उल्लेख इसमें भागे लिखी भ्रानुसूची में किया गया	की उपस्थिति में हस्ताक्षा
	है, भौर जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा समनुदेशित भ्राभ-	ध्यान दें: श्रावेदकों को
	व्यक्ति है, प्रतिभृति पर देय रहता है स्त्रीर हर हालत में उक्त	पर स्टाम्प
	करार की प्रविध तक पट्टे की सभी प्रसंविदायों का और उस्त	नि भया स
	पट्टा विलेख में ग्रंतिबिट शर्ती का सम्यक रूप से अनुपालन करेंगे तथा बंधतदार को उन सभी अनुयोजनों, वादो, कार्यवाहियों, खर्ची, प्रभारों, दायों और मांगों की आबत स्तिपूर्ति रखेंगे जो उक्त	सकसी है.
	किराये का सदाय न किये जाने के कारण या उक्स प्रसंविदाधों शर्ती के या उनमें से किसी के भंग किए जाने, पालन या श्रन्- पालन न किए जाने के कारण उपगत होंगी ।	त्रय सम्पत्ति पट्टा ६
(अ)	बंधककर्ता, अरधक संपरित को इस विलेख के जारी रहने के दौरान	W. T. W. T. W. C.
	न तो भारित करेंगे, न उस पर बिल्लंगम मृजित करेंगे, न	यह करार एक पक्षक
	उसका ग्रन्य संकामण करेंगे श्रीर न उसका किसी प्रकार से व्ययस करेंगे ।	जो इस समय
	व्यथम कर्ग ।	· · · · · · · · · · कें क
(₹)	इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हुक होगा	है जिसे इसमें आगे "बंध
	कि वह अग्निम की शेष रकम और उस पर ब्याज जिसका संदाय	वःस्मि, निष्पादक, प्र <i>णा</i> सक
	प्रावेदक बंधककर्ता की सेवा निवृत्ति के समय नक या यदि	विषय या संदर्भ से प्रवर्ना
	सेवा निवृक्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, ग्रावेदक बंधककर्ता को संजूर किए	के रूप में तूनीकोरिन पत
	जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में	कहा गया है और इसके ।
	से बसूल कर लें।	जब तक कि ऐसा विशय के कीच ग्राज प्रारीखा
	भनुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है।*	उधार लेने वाले ने

उधार लेने वाले ने तूमीकोरिन परतन न्याम कर्मचारी (मकान के निर्माण ग्रादि के लिए ग्रिप्तम का अनुशान) विनियम, 1979 (जिसे इसमें ग्रामें 'उन्हर विनियम' कहा गया है ग्रीर जहां संदर्भ के अनुकूल हैं, इसके अंतर्गत उस समय प्रयुक्त उसके सणीधन या उसमें परिवर्धन भी हैं) के उपबंधों के ग्राधिन उपर्युक्त बने बनाये मकान के क्रय के लिए उत्तन न्याम को ग्राबेदन किया था और पत्भन न्याम ने उधार लेने वाले को का क्यांचे में देखिए नार्गेख उत्तन प्रयोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस संबंध में देखिए नार्गेख जन्म प्रयोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस संबंध में देखिए नार्गेख जन्म का कार्योक्य पत्न संक्या का कार्योक्य के माथ संलयन है श्रीर जिसमें उल्लिखन निर्मंधों पोर णती पर

तारीखा को जम्म उधार प्राप्त किये जाने के समय बंधककर्ता श्रीर बंधकदार द्वारा श्रीर उनके बीच एक करार निष्पादित किया गया था जिसके द्वारा बंधककर्ता ने ग्रन्य यांतों के माथ उसे अश्रिम दी गई रकम श्रीर उक्त रकम के लिए मंदेय व्याज के लिए भी उक्त नियम द्वारा उपबंधित प्ररूप में प्रतिभूति के रूप में उक्त एकैट का बंधकदार को बंधक करने वाली दस्कावेज का निष्पादन करने का बंधनवद्ध

यह ऋग्रिम मंजूर किया गया है।

तारीखा ं ं ं के उस हस्मांतरण विलेख द्वारा जी एक पक्षकार के रूप में ं ं ं ं भीर दूसरे पक्षकार के रूप में मेंबंधककर्ता द्वारा भीर उनके बीच निष्पादित किया गया है, उक्स विलेख वर्णित प्रतिकल ने लिए ं ं ं ने उन सम्पत्तियों का जिनका

इसके साक्ष्यस्वरूप बंधककर्ता ने इस पर ध्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

	• • • • • • • • •		• • • • नं				• • • •
						(हर	नाक्षर)
(1)				· (प्रथम		का न ग्रीरक्या	
* * - * *				(प्रथम	साक्षी	के हरू	ताक्षर)
					पना	ग्रीर व्यव	प्रमाय)
				(डितीय	साक्षी	के हस्त	ाक्षर)
की उप	स्थिति में	हस्ताक्षर	किए ।				
इसके स	१६यस्थ रूप,	तूनीकोरिन	पत्तन न्यार्स	ो बोर्डके	लिए भौ	र उसकी	म्रोर
में ''	.,,.,,,		कार्यालय व	केश्री∵		•••ने	
					• • • • •	 (हस्त	 ॥क्षर)

(1) · · · · · · (प्रथम साक्षी का नाम ग्रीर व्यव	
(प्रथम माक्षी के हम	18सर)
(2) · · · · · (हितीय माक्षी का पना ग्रीर व्या	
(हिनीय साक्षी की हर-	सक्षर)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।	
Mr. S. M. S.	

ध्यान दें: श्रावेदकों को सलाष्ठ दी जाती है कि इन दस्तावेजी पर स्टाम्प णूल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प णूल्क के संदाय से कोई छूट सिल सकसी है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले ।

प्रस्थप संख्या अख

जय सम्पत्ति पट्टा धृति है सब निष्पादिस किए आने वाले बंधक विलेख का प्रका

(विनियम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो
∵ःःः का पुत्र है भीर
जो इस समय ः ः ः ः ः में, ः ' ः ः ः ः ः ः ः
ः ः ः ः ः के कार्यालय में ः ः ः ः के कप में नियोजित
है जिसे इसमें आगे "बंधककर्ता" कहा गया है और इसके अंतर्गत उनके
वारिस, निष्पादक, प्रणासक ग्रीर समन्येणितो भो है, जब तक कि ऐसा
विषय या संदर्भ से अववर्षित या उसके विश्व नहीं है) और दूसरेपक्षकार
के रूप में तूनीकोरिन पत्पन न्यासी वोर्ड जिसे इसमें भ्रागे ''बंधकदार"
कहा गया है और इसके अंतर्गत उसके उत्तरवर्ती और समनुदेशिती भी हैं
जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से अपवर्जित या इसके विरुद्ध नहीं है)
के बीच ग्राज प्रारीखा : : : : को किया गया है।

विस्तृत वर्णन उक्त वस्तायेज को अतुसूची में और इसकी अतुसूची में भी किया गया है, वंधककर्ता को उक्त वितेख में वर्णिए निबंधनों और मती पर विकय, श्रंपरण श्रीर समनुदंगन किया है।

_ - ---- ----

उक्त श्रंतरण के प्रतिकार का संदाय वयककर्ता ने का क्यये के उस सरकारी उधार में से किया है जो उने दिया गा, है।

यह करार निम्नलिखिन का मोओ है।

- (1)(क) उक्त विनिधमों के अनुसरण में और उक्त विनिधमों के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा अधिदन बबककर्ना की सजूर किए गर/दिए गए उक्त अग्निम के प्रतिकल स्वरूप वंधककर्ता, बंधकदार से यह प्रसंविदा करते है कि बश्रककर्ती उक्प वितियमों के पमी क्लिंधतों और शर्ती का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे ग्रीरःःःःः छपये (' ' ' ' ' ' रुपये) के उक्त प्रसिम का बधकदार की प्रतिसदाय ····· रुपयें (···· रुपयें (कार्ये कार्ये कार्ये किस्तो में क्रावेदक बंधककर्ता के वेतन में से करेगे । यह प्रतिसंदाय ''''के ः ः ः ः ः ः ः मास से श्रथवा श्रीग्रम लेने के मास के पश्चात्वर्ता मास से, इसमें से जो भी पूर्वत्वर हो, प्रारम्भ होगः । बधककर्ता ऐसा किस्सी की कटौनी उसके मासिक बेनन/छुट्टी बेनन/निर्वाह भन्ने में से करने के सिए अधिकदार को प्राधिकृत करता है । उत्तर अग्निम की पूरी रक्षम देने मासिक किस्तों में उस रीति में और उन निबंधनो पर करेगा जो उक्त विनियमों में विनिर्दिष्ट है । परन्तु बंधककर्ता ब्याज सहित क्रिप्रिम का पूरा प्रतिसंदाय उस तारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख को थह सेवा से निवृत्त होने वाला है । यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो बंबकदार का यह हक होगा कि वह बंधक को इस प्रतिभृति की उसके बाद किसी भी समय प्रयुत्त करे और उप समय देव श्रम्भिम की शेव रकम तथा उस पर ब्याज स्नौर यसुली का लार्च बद्धक संपत्ति का विकय करके या विधि के अधीन अनुक्षेप किसी अन्य रोति से यसूल करे। बधककर्ता इन रकम का प्रतिसंदाय इससे कम ग्रवधि के भीतर कर सकता है।
- (1) (ख) उक्त नियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों के उपबंधों के प्रनुसार बंधकदार द्यारा श्रावेदक बधककर्ता को संजूर किए गए/दिए गए उक्त अग्रिम के प्रतिफलस्वरूप बधककर्ता बंधकदार सेयह संविदा करमा है कि बंधककर्ता उक्त विनियमो के सभी निवधनों क्रीर णतीं का सदैव सम्बक् रूप से अनुपःलन करेगा और ः ः ः फपये (' ं क्या क्या के प्रतिसंदाय का विश्वक्रदार को प्रतिसंदाय ·····क्यये (· ···· क्यये) की ···· क्ष्ममासिक किस्तो में बंधककर्ता के वेशन में से करेगा । यह प्रतिसंदाय : : : : : : के :::: मास से या अग्निम लेने के पण्यानुगर्ती माम से, प्रारंभ होकर उसकी अधिवर्षिता की नारीख तक किया जाएगा श्रीर उसकी श्रधिवर्षित तारीख पर जो रकम बकाया होगी तथा श्रश्मिम दी गई रकम पर प्रग्रिम की तारीख से प्रतिसंदाय को तारीख तक का ब्याज उसके उपदान/मृत्यु एवं मेवा निवृत्ति उपदान में से वयून किया जाएगा । बधककर्ता किस्तों की रकम की फटोनी उसके मामिक वेपन/फ़ुट्टी घेतन/ निर्वाह भन्ते में से तथा उसकी मृत्यु/सेवा निर्वृत्ति/यधिवर्षिक्ष कों नारीख को उस रकम की, जिसका संदाय न किया गया हा, फटोनी उनक उपदान/ मृत्यु एवं भेया निवृत्ति अपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भा पूरी वसूला नहीं हो पातो है तो बंबक-दार को यह हक होगा कि वह बंधक का इस प्रतिभृति को उसके बाद किमी समय प्रवृत्त करे ग्रीर उस समय देव श्रग्निम को ग्रेप रकम कथा उस पर ब्याज और वसूत्री का खर्च, बधक संपत्ति का विश्रय करके या विधि के अर्धान अनुक्षेय किसी अन्य रीति से वसूल करे । किन्तु, बंधककर्ती इस रकम का प्रतिसंदाय इसमें कम ऋवधि के भीतर भी कर सकका है।

 $(1)(\vec{v})$ उक्त विनियमों के अनुसरण में श्रौर उक्त विनियमों के उपबंधों के अनुसार बधकदार द्वारा आवेदक बंधककर्ता की मंजूर किए गए/दिए गए उक्त ऋग्रिम के प्रतिकलस्यरूप श्रावेदक 'धककर्ता बधकदार से यह प्रमविदा करता है कि बंबककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों श्रीर शर्तों का भदैव सम्यक् रूप से अनुपत्नन करेगा श्रीर : : : : क्यमें (केवल : : : : रुपये) के उक्त ग्रम्भि का वधकदार की प्रति-मासिक किस्तों में बंधककर्ता ग्रपने बेलन भे से करेगः । यह प्रतिसदाय ः ः ः मकान पूरा होने के पण्जात्थर्ती मास से, इनमें से जा भी पूर्वतर हो, प्रारंण होगा । अधककर्ता बंधकदार को ऐसी किस्तो की कटौती उसके मासिक वेतन/छुद्टी वेतन में से करने के लिए प्राधिकृत करता है और अबककर्ता भ्रपनी भ्रधिवर्षिता की तारीखा तक श्रीप्रम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात उस पर देय ब्याज का भी: *** रुपये की : : मामिक किस्तों में संदाय करेगा तया उसकी प्रक्षिवर्षिता की तारी**ख को** उधार दी गई रकम पर श्रम्भिम की तारोज से प्रक्षिसंदय को तारीख तक साकी रह गई ब्याज की रकम का प्रतिसदाय उसकी उपदान/मृत्यु एवं **मेवा** निवृत्ति उपदान से करेगा और आवेदक बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौर्ता उसके मासिक येवन/छुट्टी बेवन/निर्वाह भत्ता में से तथा उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/ग्रधिवर्षिता की तारीक्ष की उस रकम की, जिसका सदाय न किया गया हो, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंबककर को प्राधिकृत करता है। यदि उसकी मृत्यु की नारीख को कोई अनिर्णेष असंदत्त रह जाता है तो वधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाव किसी समय प्रथम करे और उस समय देव अग्रिम की गोष रकत तथा उस पर ब्याज भ्रौर यसूली का खर्च, बंधक संपत्ति का विकास करके था थिधि के प्रश्नीन प्रतुज्ञेग किसी प्रत्य रीति से बसूल करे । बंधककर्ताइस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम भ्रवधि के भोतर कर सकना है।

टिप्पण: खंड (1)(क), (1)(खा) या (1)(ग) में से जो लागून हो उसे काट दें)

- (II) यदि बंधककर्ता अग्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के सिए करेगा जो उस प्रयोजन से सिन्स है जिसके लिए वह मूजर किया गया है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाएगा या मामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/ ग्रधिवर्षिता से भिन्त किसी कारण में सेश में नहीं रहेगा ग्रथका पदि वह श्रयिम के पूरे संदाय के पूर्व मर जाएगा या यदि बंधककर्ना उक्त विनियमों में थिनिविष्ट और उनकी योर से धनुपालन किए जाने वाले किसी निबंधन. णर्नभीर अनुबंध का अनुपःलन नहीं करेंगे तो ऐसी प्रत्येक दशा ने **धक्रि**म का संपूर्ण मूलधन या उसका उत्तरा भाग जो उस समय देख रहता है स्रीर जिसका संदाय नहीं किया गया है, और उस गर 😬 🥶 है प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त पश्चिम की पहती किस्त के दिए जाने की लागब से परिकलित किया जाएगी. नुरस्त समेध हो जाएगा । इसको किसी बाच के होने कुए भी, यदि बधककर्ती फ्रांप्रेम का उपयोग किसा ऐसे प्रयोजन के लिए करना है जो उन प्रयोजन के भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधकार को यह स्वतंत्रका होगी कि वह बंधककर्ना के विरुद्ध ऐसी अनुशासनिक कार्रवाई करे जो उसको बंधककर्ताको) लागूसेया के नियमों के प्रर्थान उपपुत्र हो ।
- (III) उक्त विनियमों के और अनुसरण में और उपयुक्त प्रक्षिकल के लिए तथा उपर्युक्त अग्निम के और उस पर ब्याज के, जो उसके पश्चात् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के अधीन बंधकदार को देय हो, प्रतिसदाय को प्रतिभृति करने के निज्, बाकती, तो रोखा के उक्त हस्तानरण पत्न में समाविष्ठ उक्त सम्मति के जिनका पूरा वर्णन इसमें आगे लिखित अनुसूची में दिया हुआ है, उक्त सम्मति पर यदि

^{*} यह 60 से प्रधिक नहीं होगी।

^{श्रंश}यह 180 से अधिक नहीं होगी ।

ध्यान वें:खंड (1)(क) या (1)(ख) में से जो लागून हो उसे काट वीजिए। †नियम के श्रधीन प्रभायं व्याज की प्रसामान्य दर।

यवि कोई हो, जिसे इसमें श्रागे 'बंधक संपत्ति' कहा गया है) बंधककर्ता दुबारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों का तत्समय उस पर की सामग्री का उक्त बंधक संपत्ति से संबंधित सभी या किन्हीं ऋधिकारों, सुखाचारों और अनलानकों सहित अनुदान, हस्तातंरण, अंतरण और समनुदेशन क्रोता दुवारा की गई प्रसंविदाओं स्त्रीर उसमें श्रोतिबिष्ट गती के अधीन रहते हुए करते हैं । बंधकवार उक्त बंधक संपस्ति को पूर्ण रूप से किन्तु उक्त हस्तांतरण पक्ष के निबंधनों भीर प्रसंघिदामों के ग्रधीन रहते हुए धारण करेगा किन्तु यह इसमें भागे दिए हुए मोचन संबंधी इस उपवंध के अधीन होगा । परन्तु इसके पक्षकारों द्वाराग्नौर उनके बीच यहकरार किया जाता है और घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता, बधकदार को इसके दवारा प्रतिभृत उक्त मुलधन और ब्याज का और ऐसी अन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ता द्वारा अंधकदार को, उन्त विनियमो के निबंधनों और शतों के भ्रधीन संदेय करने के लिए अवधारित हो, सम्यक् रूप से संवाय इसमें दी हुई रीति से कर देंगे तो बंधकदार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ता के धनुरोध और खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का पूनः हस्तांतरण भीर पुनः श्रंतरण बंधककर्ताश्रों को उनके या उनके निदेशानुसार उपयोग के लिए कर देंगे।

(IV) अभिव्यक्त रूप से यह करार किया जाता है और घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता अपनी भोर से की गई और इसमें दी हुई प्रसंतिवाध्रो को भंग करेगा या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाएगा या सामान्य रूप से सेवा निवृहित/प्रधिविषता से भिन्न किसी कारण से सेवा मे नहीं रहेगा या यदि वह उन सभी रकमों के जो इस विलेख के अधीन बंधकदार को संदेय है, ग्रीर उन पर व्याज के पूरी सरह से चुकाए जाने से पूर्व मर जाता/जाती है या यदि उन्त प्रक्रिम या उसका कोई भाग इस विलेख के भ्रधीन या किसी भ्रन्य रूप से तुरन्त संदेय हो जात है तो ऐसी प्रत्येक दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपरित का या उसके किसी भाग का विकय, न्यायालय के हस्तक्षीप के बिना, एक साथ या ट्कड़ों में धौर सार्वजनिक नीलाम द्वारा या प्राइवेट संविदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका कथ कर लेया विकय की किसी संविध। को विखंडित कर देशीर उसका पूनः विकय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो । उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिए जो बंधकदार ठीक समझे सभी कार्य करे भौर हस्तातरण पत्नों का निष्पादन करें। यह घोषणा की जाती है कि बेचे गए परिसर या उसे किसी भाग के कय धन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात की प्रमाण होगी कि केता/केताक्रों ने कथ धन का भुगतान कर दिया है ।यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त शक्ति के अनुसरण के किए गए फिसी विक्रय से प्राप्त धन की बंधकदार न्यास के रूप में धारण करेगा । उसमें से खर्च प्रथम ऐसे विकय पर हुए वर्ष का संदाय किया जाएगा* (भ्रौर उसके बाद, बंधक संपरित के पट्टाकर्ता,को उक्त पट्टे के खण्ड ·····के अनुसरण में अनुपाजित वृद्धि के 50 प्रतिगत का संदाय किया जाएगा) भ्रीर इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संदाय किया जाएगा श्रीर यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ता को दे दिया जाएगा।

- (\mathbf{V}) बंधककर्ता, बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करते हैं :—
- (क) िक बंधककर्ता, को इ.स. बात को विधिपूर्ण अधिकार और प्राधिकार है िक वह बंधक संपित्त का, बंधकदार को और उसके उपयोग के लिए अनुदान, हस्तातरण, अंतरण और समनुदेशन उक्त रीति में करें।
- **(ख) कि आवेदक बंधककर्ता मकान के निर्माण/उक्त मकान में आवाम स्थान में परिवर्तन का काम उस धनुमोदित नक्शे और उन

विनिर्देशों के अनुसार ही करेगा जिनके भाधार पर उक्त अग्रिम की संगणना की गई है और वह मंजूर किया गया है, जब तक कि उससे विचलन की भनुजा बधकदार ने दे दी हो। बंधकदार क्रसी/छन पड़ने के स्तर पर धनुझेय अग्रिम की किस्तो के लिए आवेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्सो भ्रौर प्राक्कलन के श्रनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं, कि निर्माणकार्य कुरसी/छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है, और मंजूर किए गए अग्रिम में से ली जा चुकी रकम का वस्तुत: उपयोग मकान के निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपन्नों के सही होंने का सत्यापन करने के लिए बंधकदार को स्वयं या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की अनमति देगा/देगी। यदि बंधककर्ता कोई भिष्या प्रमाणपत्न देता है तो उस बंधकदार को वह संपूर्ण प्रश्रिम, जो उसे मिला है तथा उस परःः '† प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से अ्याज देना होगा । इसके प्रतिरिक्त बंधककर्ता के विकद्ध उसका लागु सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त प्रनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी।

- **(ग) आवेदक बंधककर्ता मकान का निर्माण/उस्त मकान में आवास
 स्थान में परिवर्धन * के आद्टारह मास
 के भीतर पूरा करेगा जब तक कि बंधकदार ने इस काम के
 निए लिखित रूप से समय न बढ़ा दिया हो। इसमें व्यितिकम
 होने पर बंधककर्ता को, उसे दी गई संपूर्ण रकम का और
 उक्त नियमों के अधीन परिकर्तित व्याज का एक मुस्त प्रतिसंदाय करना होगा। बधककर्ता मकान पूरा होने की तारीख की
 सूचना बंधकदार को देगा और वह बंधकदार को इस आशय का
 एक प्रमाणपत्न देगा कि आग्रम की पूरी रजम का उपयोग
 उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए बह मंजूर
 किया गया था।
 - (घ) वेधककर्ता मारतीय जीवन बीमा निगम में उस माकान का त्रन्त अपने खर्च पर बीमा उतनी रक्षम के लिए कराएंगे जो उक्त अग्निम की रकम से कम नही । वे उसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार को ग्राग्रिम पूरी सौर से चुका नहीं दिया जाता है, श्रस्ति, बाढ़ धौर तड़ित से हानि या नुकसान, क विरुद्ध वीमाक्रुत रखेगे जैसा कि उक्त विनियमों में उपबंध है, श्रीर बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देंगे। बंधककर्ता समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमियम नियमित रूप से वेंगे ध्रौर जब उनसे भ्रमेक्षा की आए, प्रीमियम की रसीदें बंधकदार के निरीक्षण के लिए पेण करेंगे । यदि बंधककर्ता श्रीन, बाद, तिष्कृत के विरुद्ध बीमा नहीं कराते है तो बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण किन्तु प्राबद्धकर नहीं होगा कि वह उक्त मकान की बीमा बंधककर्ता के खर्च पर करा ले और प्रीमियम की रकम को श्रम्रिम की बकाया रकम में जोड़ ले। तब बंधककर्ती की उस पर····· प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देना होगा मानो प्रीमियम की रकम उक्त प्रियम के भाग के रूप में दी गई थी। यह ब्याज उसे उस समय तक देना होगा जब सक कि वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी जाती है या अब तक उसकी बसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभूति के श्रंतर्गत श्राने वाली रकम हो । बंधककर्ता जब भी उससे श्रपेक्षित हो, बंधकवार को एक पत्न देगाओं उस बीमा करने वाल के नाम लिखा होगा जिससे उस मकान का वीमा कराया गया है। यह पत्न इसिलए होगा कि बंधकदार बीमा करने वाले

^{*}यहाँ वह तारीख लिखिए जिस तारीख को अग्रिम की पहली किस्त बंधककर्तीको दी गई है ≀

^{**}हिष्पण--जहाँ अग्रिम बने बनाए मकान के ऋय के लिए हैं बहाँ खण्ड (ख और ग) लागू नहीं होगे। ोनियम के अधीन प्रभार्य व्याज की प्रस्तावित वर ।

पक्ष भी देंगे।

	· (-/1
(₺)	बंधककर्ता उक्त मकान को भ्रमने खर्च पर भ्रष्टी सरम्मत के हालन मे रखेंगे भ्रौर बंधक सम्पत्ति की वाबन नगरपालिका व ग्रौर श्रन्य सभी स्थानीय रेट, कर, श्रौर भ्रन्य सभ देनदारियो उस समय तक नियमित रूप से देगे जब तक वि

वधकदार को ग्रग्निम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाना है । बंधककर्ता, बंधकदारको उक्त श्राणय का एक वार्षिक प्रमाण-

- (च) बंधककर्ती, मकान पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिश्चित करने के लिए कि मकान अच्छी मरम्मन की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय नक देंगे जब तक कि अधिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बंधककर्ता ऐसी कोई रक्षम श्रीर उस पर देय ब्याज, बंधकवार को लौटाएगा जो श्राग्रम के मब्बे, उस व्यय के श्राधिक्य में सी गई है जिसके लिए श्राग्रम मंजूर किया गया था।
- (ज) तारीख का उक्त हस्तांतरण विलेख श्रव विधिमान्य है श्रीर उक्त बंधक संपत्ति का अस्तित्वयुक्त पट्टा है श्रीर वह किसी भी रूप में शून्य या शून्यकरणीय नहीं है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा श्रारक्षित किराए का संदाय श्रीर उसमें दी हुई प्रसंविदाश्रों श्रीर शतों का पालन इस विलेख की तारीख तक कर दिया गया है श्रीर इसमें इसके पूर्व वर्णित रीति में इसका समनुदेशन किया जा सकता है।
- (झ) बंधककर्ता उस समय तक जब तक कोई धन उक्त बंधक संपरित की जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा समनुवेशित प्रभिव्यक्ति है, प्रतिभूति पर देय रहता है और हर हालत में उक्त करार की ध्रवधि तक पट्टे की सभी प्रसंविदाधों का और उक्त पट्टा विलेख में अंतविष्ट शर्ती का सम्यक् रूप से अनुपालन करेगें तथा बंधकदार को उन सभी अनुयोजना, वादों, कार्यवाहियों, खर्चों, प्रभारों, वावों और मांगों की बाबत क्षतिपूरित रखेंगे जा उक्त कराये का संवाय न किए जाने के कारण या उक्त प्रसंविदाधों और सतों के या उनमें से किसी के भंग किए जाने पालन या अनुपालन न किए जाने के कारण उपगत होगी।
- (अ) अंधककर्ता बंधक सपस्ति को प्रस विलेख के जारी रहने के शौरान न तो भारित करेंगे, न उस पर जिल्लंगम सर्जित करेंगे, न उसका अन्य संकामण करेंगे श्रौर न उसका किसी श्रन्य प्रकार से व्ययन करेंगे ।
- (ट) इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हक होगा कि वह भग्निम की शेप रकम और उस पर ब्याज जिसका मंदाय बंधककर्ता की सेवा निवृद्धिके समय नक या यदि सेवा निवृद्धि से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या जमके किसी विनिद्दिष्ट भाग में से बसूल कर ले।

इसके साक्ष्य स्थरूप बंधककर्ता ग्रोर तूतीकोरिन परतन न्यासी बा	3
के लिए ग्रांर उनकी ग्रार से कार्यालय के श्री	
·····ंन ऊपर सर्व प्रथम लिखित तारोख को इस पर·····	
ः ः ः ः अपने हस्ताक्षरः कर दिए हैं	ı
उस्त अंध्रमकर्ता ने	•

(हस्ताक्षर)

(1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय)
....(प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर)
(2) (ह्वतीय साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय)
....(ह्वतीय साक्षी के हस्ताक्षर)
की उपस्थित में हस्ताक्षर किए।
इसके माक्ष्यस्वरूप, तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बांडे
के लिए और उसकी ओर में तथा उसके निदेश से
.....कार्यालय के श्री
....के
(हस्ताक्षर)
(1) (प्रथम साक्षी का नाम,

पता ग्रीर व्यवसाय)
....(प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर)
(2)(ह्वितीय साक्षी का नाम,

पता और व्यवसाय)

· · · · · (विवतीय साक्षी के तस्तीक्षर)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

ध्यान दें: श्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्ताबेज पर स्टाम्प शुल्क देनेसे पूर्व यह मुनिष्चित करने केलिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय सेकोई छूट मिल सकती है, अपनी राज्य सरकारों/प्रणासनों से सम्पर्क कर हों।

अनुपूरक बंधक विलेख

^{*}इसे बंधककर्ताभरेंगे।

^{के क}िया निर्मासुरी तो। काट दीजिए ।

- (iii) बक्रकार्ता ने, मूल उधार के प्रतिफलस्बल्ल उक्त मूल बबक विलेख की श्रनुसूची में और इसमें श्रागे तिवा श्रनुसूची में भी उल्तिखित सम्मित्यां तृतीकीरित पत्ति त्यामी बार्ड को ब्याज महित उक्त राजि के सभुदाय की प्रतिभृति के रूप में श्रेतरित, समनुदेशित भीर हस्तातित करदी है।
- (iv) बंधककर्ता *प्रः उजार/मृत उजार में से क्रमणः · · · · क्षये प्रीरः · · · · क्षये तथा · · · क्षये की · · · · किस्ते ने चुका है।
- (v) बंधवानानी मूल उचार के महुंगे का क्ष्मये की का समान मानिक किसी में कृत का का किसी के क्ष्मये का प्रतिनंदाय क्षम मुका है।
- (∨ां) बधककर्ता ने तृतीकोरिन पत्तत न्यासी बार्ड के क्षा का क्षा क्षानुसरण से इस प्रयोजन के लिए कि वह इसमें ब्रागे लिखी मनतूत्री में जिल्हीबन परिसर पर मकान का निर्माण/विश्वार प्रा कर सके/*क्ष्य कर सके, कर सके, करपे के व्यक्तिरिक्त जवार के लिए बंधकदार की ब्राबेदन किया है।
- (vii) बंधकदार प्राप्त प्राप्त कर्षे की उस्त अभिनेतन रागि, जिसे इसमें अभि "प्रतिरिक्त उपार" एड गना है, इस्ते हो उपि उपार्थ सिबंधनों श्रीर एनी पर बंधकस्ति को देने के लिए सहमन हा गना है।
- (viii) बंधककर्षाः तृतीकोरित पत्कत न्यामा बोर्ड केः फं प्रकृतरूप में मूल उबार और प्रतिरिक्त उधारकः पतिपंधार प्रविक मुखिबाजनक किस्तों में करना चाहता है ।

यह करार इस बात का माक्षो है कि :--

(1) उक्त वितितम के अनुमरण में छोर उन्हें वितितन में छंत्। बिट्ट उपबंधों के अनुमरण में बंधककर्ता को छब मंतृर किए गए परिनर प्रोर एक्षिरिका उधार के प्रतिकलस्त्रक्ष बंबककर्ता को छब मंतृर किए गए परिनर प्रोर एक्षिरिका उधार के प्रतिकलस्त्रक्ष बंबककर्ता इसके डारा बंबकदार में यह प्रगीवता करता है कि यह (बजककर्ता) उक्त वितिषम के गभी निबंधतों और प्रति का मदीब सम्यक् अनुपालन करेगा और उक्त मृत बंबह विवेश के छांचा वेय का राणि पा/और क्षेप्र की राणि तथा अतिरिक्त उदार का जिन्हा था। या स्वार हीता है) *** प्राणि तथा अतिरिक्त उदार का जिन्हा था। या स्वार हीता है) ** प्राणि तथा अतिरिक्त उदार को कि के प्राणि का महाद करने हैं पर्ण्य की को स्वार व्यक्त को उक्त (कुल) ** राणि को उक्त कि होता में वितिरिक्ट रोति में और दर में ममान मासिक कि हों में करेगा बाब उक्त छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति होता वह छोर/य जिन्ही से उपयोग व्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति होता है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति होता है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति होता है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति होता है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष प्रति होता है तो वह छोर/य उपयोग ब्याज की बमुली बंधककर्ती से उक्त छोष छोर होता है तो प्रति है स्वार होता है तो वह छोर/य छोर होता है से उक्त छोर होता है तो प्रति हमा छोर होता है से छोर होता है से छोर हमा छोर होता है से छोर होता है होता है से छोर होता होता है से छोर होता है से छो

की तारीख पर उसको (बंधककर्ता को) गांध्य उध्या/मृत्यु एपं सेवा निर्वान उपदान की रकम में से की जांग्गी । उक् : कार्य की (कुल) ***राशि की वपूरी, बंधककर्ता के वेतन सं : . अर्थ के : मान से आरंभ होगी और बंधककर्ता अपने मासिक वेतन/कुट्टी में से इन किस्तों की रकम की कटौती करने के तिए वंधकदार की प्राधिकुत करना है।

- (II) बंधककर्ता यह घोषण करता है कि वह सम्पत्ति जो उक्त मूल अधक विलेख में समाधिष्ट है और जिसका उल्लेख इसमें आगे लिखी अनुसूची में भी है, अब मंजूर किए गए अतिरिक्त उबार के संधाय के लिए में। उसी प्रकार प्रतिभूति होगी और वह उस उसी प्रकार भाग होगा मानो अतिरिक्ष उधार उस मूल राणि का ही भाग है जो उक्त मूल बंधक विलेख द्वारा प्रतिभूत है।
- (iii) यह करार किया जाता है प्रीर घारण का जाता है कि उना मूल बंधक बिलेख के प्रधान मंदेय मूल धन धीर किस्तों के संबंध में उना मूल बंधक बिलेख में प्रतिबिद्ध सभी प्रसंबिदाएं, शक्तियां, प्रीर उनबंध इस बिलेख के प्रधीन संदेव (उक्त प्रतिनिक्त उधार श्रीर) (श्रीकिस्तों की लागू होंगे श्रीर इसके द्वारा किए गए परिवर्तनों के सिवाय उनत नूल बंधक बिलेख के सभी निबंधन श्रीर शन्ते पूर्णन्या प्रवृत्त श्रीर प्रभावी रहेंगी।

अनुसूची जिसका ऊपर उस्लेख किया गया है

स० ः ः
सभा सुषाचारो अनुलग्नकों मार्गाधिकारों सहित सं ''''' वाला बहु सन्दूर्ण भूषंड जो ''' ने स्थित है और जिसका- क्षे ल कर '''विस्ट.('''') है का जिसके
उ मर में · · · · · · · है
दक्षिण में कि
पूर्व में : : : : : : है
पण्चिम में ः ः ः ः ः ः ह्है
इसके साक्ष्यस्थालका व्यवकारनी ने स्रोर तूनकोरित पत्तन न्यासो बोर्ड के निए स्रोर उसकी स्रोर से स्रोत प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्थान स्यान स्थान
बब्रक्तर्ता ने
(इन्सन्)
वं गुरु सः गी
1' ' ''' '' ' ' ' ' (प्रयम क्ष्मीर का नाम, क्ष्मीर व्यवसाय)
2' ' ''' 'पितार संभाकातान, यस स्रोत वस्त्रसाय)
को उनस्थिति में हस्तक्षर किए।

^{--- --- -- -- -- -- -- -- --}ैयादे लागु नहीं है तो काट दीजिए ।

^{कर्ष} उन मामलों में जहां मूल उधार का प्रतिसंदाय श्रारंभ नहीं हुआ। है, यह निर्माण या विस्तार को देशा में पहतों किए। के प्रारंभ किए जाने की दारीख से 18वें माम में पण्चात् का श्रीरवने बनाए मकान के कर के लिए श्रिप्रिम प्राप्त किए जाने की तारीब श्राणामी मान के परवाद् का नहीं होना चाहिए। अन्य मामलों में यह श्रनुपुरक विकेब के निकादत के जातावी माल से परवात् का नहीं होना चाहिए।

परिवर्णन (V) या सब स्पेष किया जाएगा जबसूत उबार के निनेत्र भाग का प्रतिनेदान नेते किया गान है।

पण्चिलंग (\overline{vi}) सीर (\overline{vii}) तथा खंट $(\overline{\Pi})$ का सब लोग किया जाएक अब किया अवेरितन उबार के लिए अवेदन नहीं किया गया है।

परिवर्णन (viii) का उप लोग फिया जाएगा जब प्रतिनंदाय को रोति में कोई परिस्वर्गन फरने का प्राणान नहीं है।

^{***}इसे तब काट दें जब किसी अभिरिक्त उबार के लिए अविदेश नहीं किया गया है।

^{ां} हमे तब काट दें जब कियी अतिरिक्त उधार के लिए आवेदन नहीं किया गया है।

तूनीकोरिन पत्पन स्वार्णा बोर्ड के निष् ग्रोर उक्का पार्सिक
(हस्मा क्षर)
ा. · · · · · · · · · · प्रथम साक्षी का नाम पना और व्यवसाय)
2. · · · · · · · · · · · · · (दिवकीय मार्की का नःम, पता व्यवमाय)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।

त्ररूप संख्या-5

बोर्ड के कर्मचारी द्वारा भूखंड का कथ करने श्रीर मकान बनाने, विद्यमान मकान का विस्तार करने तथा बने बनाए मकान के कथ के लिए श्रीयम लेने केसमय निभादित किए जाने बाले करार का प्रकार

(विनियम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो श्री : ' : ' : : : : ' का पुत्र है ग्रीर इस' समय : ' : ः ः ः ः ः ः ः ः ः के रूप में सेवा कर रहा है (जिसे इसमें द्वागे 'उधार लेने वाला' कहा गया है स्रीर इसके संवर्गक उसके वारिंग, निष्पादक, प्रशासक स्त्रीर विधिक प्रतिनिधि भी हैं, जब तक कि एया विश्वय या संदर्भे में अपवर्शिक या उसके विरुद्ध नहीं है) ग्रीर दूसरे पक्षकार के रूप में नव तूनीकोरिन पर्वन न्यासी बोर्ड (जिन्हें इसमें बार्ग 'तूनीकोरिन पत्नन' कहा गया है और इपके अंचर्गन उनके उत्तर वर्सी प्रीर नजन्देशियी भी है, जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से अपर्याजन या उनके विरुद्ध नही है (के बीच प्राप्त तारीख : : : : : को किया गया । उबार लेके वाला इसमे संलग्न प्रनुसूची में वर्णिन भृमि का *ऋष करना चाहता है धीर उस पर मकान बनाना चाहना l^{*} \cdots \cdots भें स्था प्रकेत मकान में बास स्थान का विस्तार करना चाहता है/* : : : में स्थित एक बने बनाए मकान का कषाकरता चाहता है धीर उधार लेते वाले ने तूतीकोरिन पल्ला न्याम कर्मचारी (मकानो के निर्माण, बादि के लिए न्नग्रिम का अनुदान) विनियम, 1979 के (जिसे इतमें श्रागे 'उक्त नियम' कहा गया है) और इसमें अहां संदर्भ के ध्रतुकूत है, तत्ममय प्रवृत उपि संगोधन या परिवर्धन भी हैं) उपवंध के अधीन उक्त भूमि का कप करने ब्रौर, उस पर मकान बनाने के लिए eta^{st} \cdots \cdots \cdots \cdots भ्रपने सकान में वास स्थान का विस्तार करने के लिए */उक्त बने अनाए (..... भवें) के श्रविम के लिए तून(कोर्टन पत्सन न्याम को भाषेशन किया है । तूनीकोरिन पत्तन न्याम ने, उधार नेते वाले को का ये) का अग्रिम जन्त प्रयोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस संबंध में देखिए पत्र सं॰ःःः, जिसकी एक प्रति इस विशेख के साथ संकम्त है और भिसमें उक्तिखित निबंधनों छौर गर्तो पर यह अग्रिम मेजूर किया गया है । इसके पक्षकारों द्वारा ग्रीर उनके बीच यह करार किया जाता है कि :---

 राणि के प्रतिफलस्यणप उधार लेते जाला तृतीकोरिन पत्तन त्यासी वोर्ड के साथ यह करार करता है कि वह :—-

(क) उस समय प्रकृत उक्त नियमों के प्रनुपर लगाए गए व्याप सहितः प्रकृतिक की प्रकृतिक प

(यहा किस्तों की संख्या लिखिए मानिक किस्तों में सरकार को प्रतिसंदाय अपने बेतन में से करेगा । यह अतिमदाय अपने बेतन में से करेगा । यह अतिमदाय अपने बेतन में से करेगा । यह अतिमदाय अपने के मकान पूरा हाने के पश्चाम्वर्ती मास गे, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा । उधार लेने बाला ऐसी किस्तों की कटौती उसके गागिक बेतन, छुट्टी बेतन घौर निर्वाह भने के बिलों में से करने के लिए तूर्ताओरित पत्तन त्यास की प्राधिकृत करना है।

े (ख)(1) उक्त मंजूर किए गए ग्रियम में से कि कि काने वाली (यहा दी जाने वाली ••••• क्याये की रकम प्राप्त करने की तारीख़ किम्न की रकम लिखिए)

में दो मास के भीतर या ऐसे श्रितिरक्त समय के भीतर जो तृतीकोरित पत्तन न्यास विभागाध्यक्ष इस निसिस अनुज्ञात करें, भूमि का क्रय करते में उक्त रक्तम खर्च करेगा श्रीर उसके संबंध में विक्रय विलेख तृतीकोरित पत्तन न्यास के निरीक्षण के लिए प्रस्तृत करेगा श्रीर ऐसा न करने पर उद्यार लेने वाला उसे प्रान्त स्थिम की पूरी रक्षम का श्रीर उस पर व्याज का तृतीकोरित पत्तन न्यास को प्रतिसदाय करेगा।

- *(ा) उसन मकान का निर्माण/विस्तार, सुर्ताकोरिन पत्तन न्याम बोर्ड बारा अनुमोदिन किए जाने वाले उस नक्या और उन विलिदेशों के अनुमार जिनके आधार पर अप्रिम की रक्त की मंगमता की जानी है और अन्तिम क्या में मंजूर की जानी है. के अट्टारह मास के भीतर या उस बढाई गई प्रविध के भीतर पूरा करेगा जो तूनीकारिन पत्तन के न्यासी बोर्ड द्वारा अधिकथित की जाए।
- (2) यदि उबार तेने ताले हारा" भूमि का कर करने धौर उस पर मकान बनाने के लिए/"मकान का विस्तर करने के लिए/" बने बनाए मकान का कथ करने के लिए बन्दून थी गई रक्ष्म इन बिनेख के खनीन उसके द्वारा प्राप्त की गई रक्ष्म से कम है तो वह ऐप रक्षम का तूनीकोरिन पत्तन नामी बोई की तुरन्त प्रतिसंदाय करेगा।
- (3) इस विलेख के प्रयोग उबार लेते वाले को प्रक्रिम दी गई रकम के लिए धीर उक्त रकम के लिए संदेय ध्याज के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उक्त मकाम/उक्त भृति और उस पर बनाए जाने वाले मकान को तृतीकोरिन पत्तन स्थासी बाँड के पाम बंबक रखने के लिए उक्त विनियम द्वारा उपवेधित प्ररूप में दम्यावेज का निष्पादन करेगा।
- (4) भ्यदि उक्त प्रयोजन के लिए श्रिप्रिम का भाग लेने की नारीख से दो मास के भीतर या ऐसे श्रितिरिक्त समय के भीतर, जिसे तूतीकोरित पत्तन त्यासी बोई/विभागाध्यक इस निमित्त समुज्ञान करे, भूमि भा त्रस्य नहीं किया जाता है और उसका विकय निलेख तूनोकोरित पत्तन त्यासी बोई के निरीक्षण के लिए प्रस्तुत नहीं किया जाता है/भ्यदि श्रिप्रम लेते की नारीख से तीन मास के भीतर या ऐसे श्रितिरका समन्न के भीतर जो जूतीकोरित पत्तन त्यासी बोई/विभागाध्यक इस निरिक्त श्रमुज्ञान करे, मकान

^{*}जो लागुन हो उसे काट बीजिए।

का क्य गही निया जाना है और ासे क्यंक नहीं रखा जाता है /*मिंद उधार लेने बाला उपर किए गए करार के प्रमुखार, उक्त मकान का निर्माण/ विस्तार पूरा करने में श्रमकल रहता है या यदि उधार लेने बाला दिवालिया हो जाता है या पूर्तीकोरिन पल्लन न्यासी बोर्ड की नौकरी छोड़ देदा है या मर जाता है तो श्रमिम की पूरी रकम उस पर लगने वाले ब्याज सहित तूरीकोरिन पत्तन न्यासी बार्ड को, सुरन्त मोध्य श्रीर संदेय हो जाएगी।

- (5) सरकार को यह हक होगा कि वह उक्त प्रांप्रम की गेष रकम प्रौर उस पर व्याज जिसका संवाय उसकी (उधार लेने वाले की) मेथा निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस संपूर्ण उपदान या उसके किमी विनिर्विष्ट भाग में से बसूल कर ले जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।
- (6) तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोई के इस निमिल्न किसी श्रन्य श्रिधिकार पर प्रतिकृल प्रभाव डाले बिना, यदि कोई रक्षम उधार लेने वाले द्वारा तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड को नौटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड उस रक्षम को भू-राजस्य की बकाया के रूप में वसूल करने की हकवार होगी।
- (7) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प गुल्क देना होगा वह सुतीकोरिन पस्तन न्यासी बोर्ड देगा ।

न्नमुसूची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है।**

- 22	
	ाले ने श्रौर तूतीकोरिन पतत्न न्यामी
बोर्ड के लिए और उनकी श्रोर से	
के कार्यालय के श्री	ने इस पर ग्रयने-ग्रपने
हस्ताक्षर कर दिए हैं ।	
उक्त उधार लेने वाले ने	
	(उघार लेने नाले के हस्ताक्षर)
(1)	(साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय)
•••••	(साभी के हस्ताक्षर)
(2)	(साक्षी का नाम, पता स्त्रीर व्यवसाय)
	(साक्षी के हस्ताक्षर)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।	
•••• कार्या	नयं के
থা · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
ने	
(1)	(साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्य व साय)
	हस्ताक्षर
••••• (साक्षी के	(तूतीकोरिन पस्तन न्यासी बोर्ड
हस्ताक्षर)	के लिए और उनकी भोर से)
(2) •••••(साझी फा	
नाम पता ग्रौर	
व्यवसाय)	
•••••••(साक्षी के	

हस्तामर)

की उपस्थिति में हस्ताक्ष'र किए।

प्रकृप संख्या-5(क)

बोर्ड के कर्मचारी द्वारा भूमि का कय करने श्रौर मकान बनानं के लिए क्षव निष्पादित किए जाने वाले करार का विशेष प्ररूप जब उमे भूमि का हक, मकान बन जाने के पत्रचान् संकान्त होगा।

(विनियम 7 देखिए)

उधार लेने वाला इससे संलग्न धनुसूची में वर्णित भूमि का ''''' (यहां विकेशा का ''''''ों क्य करना चाहता है धौर उस पर मकान बनाना नाम लिखिए)

चाहता है।

उक्त भूमि के हस्ताक्षर-पन्न उक्तः (विकेता का नाम लिखिए) द्वारा उधार लेने वाले के पक्ष में तभी निष्पादित किया जाएगा जब मकान बन जाएगा।

इसके पक्षकारों के द्वारा श्रौर उनके बीच यह करार किया जाता है कि:→

-स्पये की राणि भौर उक्त नियम के उपघन्ध के अनुसार तृतीकोरिन पतन न्यासी बोर्ड द्वारा उधार लेने वासे को दी जाने वाली राणि सपये की राणि के प्रतिफलस्वरूप उधार

(यहां दी जाने थाली घोष रकम लिखिए) लेने बाला तूतीकोरिस पत्तन न्यासी बोर्ड के साथ यह करार करना है कि यह :---

(कः) उस समय प्रवृत्त उक्त नियमों के अनुसार लंगाए गए व्याप्त सहित की उक्त रक्तम का

(यहां मंजूर की गई पूरी रकम लिखिए)
....मिसक किस्तों में तूतीकोरिन पतन न्यासी
बोर्ड को प्रतिसंदाय प्रपने वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय

^{*}जो लागून हो उसे काट वीजिए।

^{**}यह उधार लेने वाला भरेगा।

े परिष्या मिला से अथया मिलान पूरा होने के परिवातवर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वनार हों, प्रारंभ होता। उदार लेने वाला ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक बेनन, छुट्टी बेनन और निर्वाह भने खिलों में से करने के लिए तूनीकीरिन पत्तन त्यामी बोई को प्राधिकृत करना है।

- (ख) उभोंही उसे उक्त भूमि का क्रय मृत्य प्राप्त हो जाएगा धौर उक्त भूमि का कब्जा मिल ज.एमा उक्त भूमि की ब.ब. उक्त भूमि के केता के रूप में प्रपान सारे प्रधिकारों का प्रतिभति के रूप में तूनीकोरित पत्तन त्यामी बोर्ड के पक्ष में धौर उक्त (विक्रेता का नाम लिखिए) के विकद्ध समनुदेशन करेगा धौर इस प्रयोजन के लिए उक्त विनियम में उपबन्धित प्ररूप में प्रतिरिक्त हस्तांतरण पद्ध निष्पादिस करेगा।
- (ग) उक्त मकान का निर्भाण पत्तन न्यासी बोर्ड द्वारा अनुमोदित किए जाने वाले उस नक्ष्णे और उन विनिर्देणों के अनुसार जिनके आधार पर अग्निम की रकम की संगणता की जानी है और अन्तिम रूप से मंजूर की जानी है, के अट्ठारह मास के भीतर या उस बढाई गई अवधि के भीतर पूरा करेगा जो तूतीकीरिन पत्तन न्यासी बोर्ड द्वारा अधिकथित की जाए।
- (घ) यदि मकान बनाने के लिए वस्तुतः दी गई रकम इस विलेख के ग्रधीन उसके द्वारा प्राप्त की गई रक्तम से कम है तो वह उनके अन्तर का तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड को तुरन्त प्रतिसंदाय करेगा।
- (इ) ज्योंही सकान बन जाता है झौर उसके पक्ष में झावस्यक धिभहरूनांनरण पत्न या हस्तानरण पत्न निष्पादित हो जाता है, इस विलेख के झधीन उधार लेने वाल को भिग्न दी गई रकम के लिए और उक्त रकम के लिए संदेय ब्याज के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उक्त भूमि झौर उस पर बनाए गए सकान को तूनीकारिन पत्तन न्यासी बोर्ड के पास बंधक रखने के लिए उक्त नियम द्वारा उपबन्धित प्ररूप में दस्तावेज का निष्पादन करेगा।
- (2) यदि उद्यार क्षेत्रे बाला उत्पर किए गए करार के प्रतुनार, उक्त मकान का निर्माण पूरा करने में प्रमफल रहता है या यदि उक्त भूमि के क्य मृल्य का संदाय करने प्रीर कब्का करने के प्राप्त करने पक्ष प्रतिरिक्त हस्तांतरण पन्न निष्पादित नहीं करना है या उसके पक्ष में प्राव्यक्ष प्रशिवस्तांतरण पन्न या हस्तांतरण पन्न निष्पादित कर दिए जाने के परसात वधक विलेख निष्पादित नहीं करना है या यदि उधार लेने वाला दिवालिया हो जाना है या तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बाई की नौकरी छोड़ देता है या मर जाना है तो अग्निम की पृरी रकम उस पर लगने वाले क्यांज महित सरकार को नुरन्न गोध्य प्रीर संदेय हो जाएगी।
- (3) सूतीकांरित पत्तन न्यासी बोर्ड को यह हक होगा कि वह उक्त अग्निम की ग्रेय रक्षम भीर उस पर ब्याज जिसका संदाय उसकी (उधार लेने वाले की) सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा-निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी बिनिर्दिष्ट भाग में से बसूल कर ले जो उधार लेने वाले का मंजूर किया जाए।
- (4) तूतीकांरित पत्तन त्यासी बोर्ड के इस निमित्त किसी प्रत्य प्रधिकार पर प्रतिकृत्व प्रभाव डाले बिना यिव कोई रकम उधार लेने वाले द्वारा तूतीकांरिन पत्तन त्यासी बोर्ड को लांटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो तूनीकांरिन पत्तन त्यासी बोर्ड उस रकम को भु-राजस्य की बकाया के रूप में वसूल करने का हकदार होगा।
- (5) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प णुल्क देना होगा उसे तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड देंगा।

श्रमुमूची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है।** (भूमि का वर्णन करें)

*जो लागून हो उसे काट दीजिए।

इसके साक्ष्यस्यरूप उधार लेने वाले ने प्र	भौर नूतीकारित पत्तत न्यासा
बोर्ड के लिए भीर उनकी भार में ''''	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
कार्यालय के श्रीप प्राप्त प्र प्राप्त	ः स्थाप
ग्रपने भ्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।	
उक्त उधारलेने वाले .	
(उद्यार लेने क≀ले के हस्ताक्षर)
ने ने	
(1)	'(साक्षी का नाम पना घौर व्यवसाय)
	ं (सःक्षीः के हस्तःकार)
(2) · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	ं (साक्षी का नत्म, पत्रा घीर व्यवसाय)
की उपस्थिति में हस्तःक्षर किए।	
श्रीः ' - ' - ' - ' - ' - ' - ' - ' - ' - '	·
ने	
(1) · · · · · · · · (सःक्षी का नाम, पनः श्रीर व्यवसा	य) हस्तक्षर
ं (माक्षी के हस्ताक्ष	र) (तूतीकोरिन पनन न्यामी बोर्डके लिए भ्रोर उनकी भ्रोर मे)
(2) · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता भौर व्यवस	ाय)
······(साक्षी के हस्ताः की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।	क्षर)

স**ক্ত্ব-5(**€)

बोई के कर्मचारी द्वारा मकान बनाने के लिए श्रीप्रम की दूसरी किस्त प्राप्त करने के पूर्व उस देशा में निष्यादित किए जाने वाले करार का विशेष प्रक्ष जिसमें उसने विहिन भूमि के क्रय के लिए श्रीप्रम की पहली किस्त प्राप्त कर नी है श्रीर जब कि भूमि का हक उसे मकान बन जाने के पश्चात संकान होगा।

(विनियम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री :
जो:::::कापुत्र है ग्रीर इस समय::::::
ं के रूप में सेवा कर रहा है (जिले इसके
श्रामें 'उधार लेने चला' कहा गया है भौर इसके भन्तर्गत उसके वारिस
िनिष्पादक, प्रणासक ग्राँर विधि प्रतिनिधि भी हैं, अब तक कि ऐसा विषय
या संदर्भ से अपवर्जित या उसके विषद्ध नहीं है) और दूसरे पक्षकर के
क्ष में तूतीकोरित पसन त्यासी बोर्ड (जिसे इसमें ग्रागे तूतीकोरित पसन
न्यासी बोर्ड कहा गया है भौर इसके भनांत उनके उतरवर्ती भौर समन्-
वैशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से सार्वाजत या उसके
विरुद्ध नहीं है) के बीच भाज तारीखःकां
किया गर्या।

उधार लेने वाला इससे संलग्न धनुसूची में वर्णित में स्थित भूमि पर मकान बनाना चाहता है।

उद्यार लेने वाले ने सूतीकोरिन परान न्यासी कर्मचारी (मकानों के निर्माण, ग्रादि के लिए प्रम्निम का भनुदान) विनियम, 1979 (जिसे

^{**}यह उष्टार लेने वाला भरेगा।

इसमें ग्रागे 'उक्त विनियम' कहा गया है ग्रौर इसमें जहां संदर्भ के मनुक्ल हो, तत्समय प्रयुत्त उसके संशोधन या परिवर्धन भी हैं) के उपबन्ध के म्रधीन रुपये (. रुपये) के म्रप्रिम के लिए तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को ग्राबैदन किया है। नूतीकोरिन (यहां मंज़्र की गई पूरी रकम लिखिए) (''''रूपये) का ग्रम्भिम उभन प्रयोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस संबंध में देखिए नारीख का कार्यालय पत्र संख्या जिसकी एक प्रति इस विल्लेख के साथ संलग्न है भीर जिसमें उहिलाखित निबन्धनों भीर शतों पर यह ब्रिग्रिम मंत्रूर किया गया है। इसके पक्षकारों के बीच' तारीख को निष्पादित करार के ग्रनुसरण में तूतीकोरिन पत्तन न्यासी भोई ने उपर्युक्त मंत्रूर की गई रूपये की राणि (यहां मंजूर की गई पूरों रकम लिखिए) में सेरुपये (यहां दी गई वहली किस्त की रकम लिखिए) की राशि उधार लेने वाले को उक्त करार में विशित्त निबन्धनों भीर शतों पर देदी है जिससे कि वह उक्त : : : : का कय कर सके।

इसके पक्षकारों द्वारा भीर उनके बीच निम्नलिखित करार किया आता

- (2) उधार लेने वाला तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के साथ यह करार करता है कि वह:—

 - (ख) उक्त मकान का निर्माण, प्रथम किस्त प्राप्त करने की तारीख से महारह मास के भीतर या उस बढ़ाई गई मबधि के

भीतर जो तूतीकोरिन पत्तन त्यासी बोर्ड प्रधिकथित करें, जस अनुसारित नक्यों घोर उन विनिर्देशों के अनुसार पूरा करेगा जिनके प्राधार पर अग्रिम की रकम की संगणना की गई है भौर वह संजूर की गई है भौर मकान पूरा हो जाने की तारीख से तीन मास की अविधि के भीतर प्रपने पक्ष में आवश्यक अभिहस्तांतरण पन्न या हस्तांतरण पन्न प्राप्त करेगा।

- (ग) यदि मकान बनाने के लिए बस्तुतः दी गई एकम उधार लेने बाले द्वारा प्राप्त की गई रकम से कम है तो बह उनके भन्तर का भूतीकोरिन पत्तन त्यासी बोर्ड को तुरन्त प्रति संबोध करेगा।
- (घ) ज्यों ही मकान बन जाता है भीर उसके पक्ष में भावश्यक मिहस्तांतरण पन्न या हस्तांतरण पन्न निष्पादित हो जाते हैं, उधार लेने वाले को अग्निम की गई रकम के लिए भीर उक्त रकम के लिए संदेय ब्याज के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उक्त भूमि भीर उस पर बनाए गए मकान को तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के पास बंधक रखने के लिए उक्त विनियम द्वारा उपबंधित प्ररूप में दस्तावेज का निष्पादन करेगा।
- (3) यवि उधार लेने वासा इसमें इसके पूर्व उपबंधित रूप में उक्त मकान का निर्माण पूरा करने में प्रसफल रहता है या धपने पक्ष में धावध्यक अभिहस्तातरण पत्न या हस्तातंरण पत्न कराने में या बंधक विलेख निष्पादित करने में अमफल रहता है या यवि उधार लेने वाला दिवालिया हो जाता है या मूरीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की मौकरी छोड़ देता है या मर जाता है तो अग्रिम की पूरी रकम उस पर लगने वाले ब्याज सहित तूर्तीकोरिन पत्तन त्यासी बोर्ड को तुरन्त गोध्य और संदेय हो जाएगी और तूर्तीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड अपने अन्य अधिकारों पर प्रतिकृत प्रभाव डाले विना इसके द्वारा अनुवस्त प्रतिभृति की वसूली के लिए कार्यवाही करने का हकदार होगा।
- (4) तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को यह हक होगा कि वह उक्त मग्रिम की शेष रकम और उस पर ब्याज जिसका संदाय उसकी (उधार लेने वाले की) सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस सम्पूर्ण उपवान या उसके किसी विनिर्विष्ट भाग में से वसूल कर ले जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।
- (5) तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के इस निमित्त किसी झन्य झिक्षार पर प्रतिकृत प्रभाव डाले जिना, यदि कोई रकम उक्षार लेने बाले द्वारा तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को लौटाई जानी हैं या संदेय हो जाती हैं तो तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड उस रकम को मू-राजस्व की बकाया के रूप में बसूस करने का हकदार होगा।
- (6) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प शुल्क देना होगा उसे सूसीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ज देगा।

भ्रनुसूची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है*** (भूमि का वर्णन करें)

इसके साक्ष्यस्थरूप उधार लेने वाले ने और तूतोकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए ग्रोर उनकी ग्रोर सेके कार्यालय के श्रीने इस पर ग्रपने-अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं?

उक्त उधार लेने वाले

(उधार लेने वाले के हस्ताक्षर)

^{*}जो लागू नही हो उसे काट दीजिए।

^{***}यह उधार लेने वाला भरेगा।

[भाग [[सण्ड 3 (i)]
(1) (साध्यी का नाम, पता भीर व्यवसाय)
·····(साक्षी के हस्ताक्षर)
(2) (साक्षी का नाम, पता भीर व्यवसाय)
·····(साक्षी के हस्ताक्षर)
को उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।
कार्यालय के
श्री · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
्त्र (1) · · · · · · · · (साक्षी का नाम,पना औ र व्यवसाय)
(साक्षी के हस्ताक्षर)
(2)(साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय)
⋯⋯⋯⋯ (साक्षी के हस्नाक्षर)
की उपस्थिति में हम्ताक्षर किए।
(हस्ताक्षर)
(तूतीकोरिन पत्तन म्यासी बोर्ड के लिए ग्रीर जनकी ग्रोर में)
N64 40 2-41
बोर्ड के कर्मचारी द्वारा मुनान बनाने के लिए प्रियम की पहली किस्त
लेने के पूर्व उस दशा में निष्पादित किए जाने वाले करार का विशेष
प्रकप जिसमें उसने भूमि का कप घरने ही धन में किया है किन्तु भूमि का हक मकान बन जाने के पण्चात् उसे संकान्त होंगा।
(विनियम 7 वेलिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री, जो श्रीः का पुत्र है और इस समय के रूप में सेवा कर रहा है (जिसे इसमें प्रापे 'उधार लेते वाला' कहा गया है और इसके अन्तर्गत उसके वारिस, निष्पादक, प्रशासक घोर विधिक प्रतिनिधि भी हैं, जब तक कि लेसा विषय या सन्दर्भ से अपविज्ञित या उसके विरुद्ध नहीं हैं) और दूसरे पक्षकार के रूप में तूतोकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड (जिसे इसमें ग्रामे 'तूर्त।कोरिन पक्तन न्यासी बोर्ड' कहा गया है ग्रीर इसके भन्तर्गत उसके उत्तरकर्ती भीर समनुदेशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विशय या सन्दर्भ से भ्रप्याजित या उसके स्रिक्ड नहीं है) के बीच भाज तारीस्क • • • • • • • • • • • की किया गया।

उधार लेने वाले ने इससे उपाधव अनुसूची में वर्णित और 🗥 🗥 ·····ंमें स्थित भूमि का····ं(यहा विकेता का नाम लिखिए) से क्रय करने का करार किया है और अधने ही धन से उसके मूल्य का संदाय कर दिया है भीर उक्त भूमि का कब्जा प्राप्त कर लिया है । उधार लेने काला उक्त भूमि पर सकान बनाना चाहना है चीर उक्त(विकेना का नाम लिखिए) उधार लेने वाले के पक्ष में उक्त भूमि का घीमहस्ता-न्तरण एक तभी निष्पादित गरेशा जब मकान का निर्माण हो अरागुगा। उधार लेते वाले ने तूतीकोरिन पत्तन न्यास कर्मचारी (मकानों के निर्माण मावि के लिए प्रक्रिम का प्रनुवान) विनियम, 1929 (जिसे इसमें द्यागे 'उक्त जिल्लियम' कहा गया है स्त्रीर इसमें जहां सन्दर्भ से सनुकूल है सत्ममय प्रवृत्त उसके संगोधन भीर परिवर्तन भी हैं) के उपवस्थ के मधीन तूरीकारिन पत्तन न्यासी बोर्ड को । । । । । चन्ने के मग्रिम के लिए मावेदन किया है भीर तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड ने उद्धार लेने वाले को " ' ' ' ' ' व उसे (सहा मंजूर की गई पूरी रकम लिखिए) का ग्रांथिम उक्त प्रशोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस सम्बन्ध में देखिए तारीखः '''' का पत्र सं०'''' जिसको एक प्रति इसके साथ संलग्न है घीर जिनमें उल्लिखित निवन्धनों मौर णती पर उक्त मधिम मंजूर किया गया है।

इसके पक्षकारों द्वारा भीर उनके बीच निम्नलिखिन करार किया जाता है :---

- (1) इस करार के निष्पादन के पक्चात तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड द्वारा दी जाने वाली '''' रंग रंगे (यहां पहनी किस्त की रकम लिखिए) की राशि ग्रीर उक्त नियमों के उपबन्ध के श्रनसार तूर्त कोरिन पत्तन त्यामी बोर्ड हारा उधार लेने वाले की दी जाने वाली ····· रूपये की ग्रेप रकम के प्रतिकलस्वरूप उधार लेने वाला ······ रूपये (केवल ····· रुपये) (यहां मंजूर की गई पूरी रकम लिखिए) के प्रतिसंदाय को प्रतिभूत करने के प्राणय से तूती-कोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को उनन भूमि के, अिसका वर्णन इसकी अनुसूबो में किया गया है, क्रेना के रूप में उका भूमि को बाबन ग्रीर उका(यहां विकेश का नाम लिक्षिए) के विरुद्ध प्राने सभी अधिकारी को प्रतिभृति के रूप में समनुदेशन करना है।
- (2) उधार लेने वाला सूतीकारिन पत्तन न्यासी बोई के साथ करार करता है कि यह,
- (क) उस समय प्रवृत्त उक्त विनिधम के प्रतृत्वार लगाए गए ब्याज महितः सन्ये (यहा मंजूर को भई पूरी रक्तम लिखिए) मासिक किस्तों में तुरीकारिन पत्तन न्यासी बोर्ड की प्रतिसंदाय प्राने वेतन में से करेगा । यह प्रतिसंदाय : : : माम से अथवा मकान पूरा होने के परचात्वर्ती माम से, इसमें से जो भी पूर्वनर हो, प्रारम्य होगा भीर उधार लेने वाला ऐसी किस्तों की कटौती उनके मासिक बेनन, छुट्टी केतन भीर निवहि भन्ते में से करने के लिए तुर्शकोदिन पत्तन न्यासी बोई को प्राधिकृत करता है।
- (सा) उत्कत मकान का निर्माण, प्रथम किल्ल प्राप्त करने की तारीस्क से अठारह मास के भीतर या उस बढ़ाई गई भ्रविध के भातर जो तूनी-कोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड प्रधिकायित करे, उस प्रतुमंहिंदत नक्ष्मे ग्रीर उन विनिर्देशों के अनुसार पूरा करेगा जिनके आधार पर अग्रिम को रक्षम की संगणना की गई है और वह मंजूर की गई है धीर मकान पूरा हो जाने की तारीख से तीन माम को प्रवधि के भीतर प्रयते पक्ष में प्रावश्यक क्राभिष्ठस्तान्तरण पत्न या हस्तान्तरण पत्न प्राप्त करेगा ।
- (ग) मदि मकान बनाने के लिए वस्तुनः दी गई रक्षत उधार लेके वाले द्वारा प्राप्त की गई रकम से कम है तो वह उनके भ्रन्तर का तूतीकं (रिन पत्तन न्यामी बोर्ड को तुरन्त प्रतिसंदाय करेगा।
- (घ) ज्यों ही मकान बन जाता है घौर उसके पक्ष में भावस्थक मभिहस्तान्तरण पत्र या हस्तान्तरण पत्र निष्यादिन हो जाते हैं, उबार लेने वाले को मामिन दो गई रक्तम के लिए मौर उन्त रक्तन के लिए मंदेय ब्याअ के लिए भी प्रतिमृति के रूप में, उक्त भूमि ग्रोर उस पर बनाए गण मकान को तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोई के पास बन्धक रखने के लिए उनत नियम द्वारा उनवन्धित प्ररूप में दस्तावेज का निष्यादन करेगा।
- (3) यदि उधार लेने वाला इपमें इमके पूर्व उखिन्धा सा में उक्त मजान का निर्माण पूरा करने में ऋसकत रहना है या ऋनने पक्ष में भावश्यक भन्दिहरतान्तरण पत्र या हरनान्तरण पत्र प्राप्त कराने में या बन्धक पत्र निष्पादित करने में ग्रसकत रहता है या यदि उदार लेत वाला दिवालिया ही जाता है या तुत्रीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की मौकरी छोड़ देता है या मर जाता है तो मग्निम को पूरी रकम उस पर लगते वाले ब्याज महित नूतीकारिन पत्तन स्यासी बोर्ड की सुरन्त शीष्ट्य धीर संदेय हो जाएगी घौर तुनोकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड घरने ग्रन्य प्रधिकारों पर प्रतिकृत प्रभाव उल्ले बिना इसके द्वारा धनुबल प्रतिभति को बसूली के लिए कार्यवाही करने का हकदार होगा।

- (4) सूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को यह हुन होता कि यह उक्त ध्रांप्रम की गेष रक्तम और उन पर व्याज जिनका संदाय उनकी (उजार लेने बाले की) सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा-निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो रहि है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिधिष्ट भाग में से बसूल कर ले जो उबार लेने दाले को मंजूर किया जाए।
- (5) तृतीकोरिन पत्तन त्यामी बोर्ड के इस निमित्त किमी श्राय अधिकार पर प्रतिकृत प्रभाव डाले थिना, यदि कांई रकम उद्यार लेने बाले द्वारा तृतीकोरिन पत्तन त्यामी बोर्ड को लौटाई जानी है या मंदेय हो जाती है तो तृतीकोरिन पत्तन त्यामी बोर्ड उम रकम का भृ-राजस्य की बकाया के रूप में बसूल करने का हकदार होगा।
- (6) इस बिलेख पर जो भी स्टाम्प गुल्क देना होगा उसे तूती-कॉरिंग पत्तन न्यासी बोर्ड देता।

ब्रनुसूची जिसका उल्लेख ऊपर किया भया है** (भूमि का वर्णन करें)

इसके साक्ष्य स्वरूप उधार लेने वाले ने धीर तूर्वाकारिन पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए धीर उनकी घार से के सार्थालय के श्री ने इस पर प्रपत्ते-प्रपत्ते हस्ताक्षर वार दिए हैं। उक्त उधार नेने वाले ने . (उधार लेने वाले के हस्लाक्षर) (1) (साक्षी का नाम, पना ग्रीर व्यवसाय) (2) · · · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पंता श्रीर व्यवसन्य) (मार्क्षा के हस्ताक्षार) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। कायिलिय के (1) पता भौर व्यवसाय) · · · · · (माक्षी के हस्ताक्षर) (2) (साक्षी का नाम, पना ग्रीर व्यवसाय) ् ----- (साक्षी के हस्ताक्षर) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। ह्म्ताक्षर

(तूर्ताकोरिन पत्तन न्यासी बीर्ड के लिए ग्रौर उनकी ग्रोर हें)

प्रकप सं० ६ (प्रसिभू बन्धपत्र)

[विनियम 7(6) देखिए]

के त्यासी बोर्ड के प्रति (जिसे इसमें आगे "तूरीकोरिन पत्तन त्यासी बोर्ड" कहा थया है और इसके अन्तर्गत उनके उत्तरवर्ती और समत्देशिसी भी हूं, अब तक कि ऐसा सन्दर्भ से अपविज्ञत या उसके विरुद्ध नही हैं।

रपये (केयल का त्रूपिकोरिन रुक्त न्यासी बोर्ड को संदाय करने के लिए वजनबद्ध हूं और दृक्तापूर्यंव आबद्ध हूं। यह संदाय पूर्णन और सही रूप में करने के लिए, अपने को, अपने वारिसों, निष्यावकों, प्रणायकों और प्रतिनिधियों को इस विलेख द्वारा दृष्टनापूर्यंक आबद्ध करना हूं। इसके साध्य स्वरूप में आज करना हूं। इसके साध्य स्वरूप में आज करना हूं। इसके साध्य स्वरूप में आज

ने जो

या पुत्र ग्रीर का निवासी
है ग्रीर इस समय जिले में प्रस्थायी/स्थायी

के ग्रीर इस समय में नियोजित है (जिले इसमें ग्राय)

"उधार लेने वाला" कहा गया है)* (किन्तु जो की की स्था-निवृत्त होने वाला है)* भूमि का क्रय करने ग्रीर/या नए मकान का निर्माण करने/विद्यमान मकान में श्रावास का विस्तार करने/बने बनाए सकान का क्रय करने के निए घोषा का श्रीयन के लिए तृतीकोरिन पत्तन न्यासी ग्रीड का ग्रावेश किया है।

तूतीकोरिन पत्तन त्यामी बोर्ड ने तूतीकोरिन पत्तन न्यास कर्भवारी (मकान के निर्माण काबि के लिए अधिन का अनुदार) वितित्रम, 1979 के जिसे इसमें आगे "जक्त विनियम" कहा गरा है, अर्थान स्मान कर दिया है। इसमें अर्थ (केवल स्थान कि सम्मान करायें) का संदाय संजूर कर दिया है।

उधार लेने वाले ने उक्त रकम का ं ं किस्तों में प्रतिसंदाय करने का वचनबन्ध किया है श्रीर उधार लेने वाने ने यह मो बिवनबन्ध किया है श्रीर उधार लेने वाने ने यह मो बिवनबन्ध किया है कि वह उक्त रकम की सहायता से निर्मित्त के किए गए मकान को बन्धक कर देगा और उक्त विनिध्न के उद्युव्ध का श्रीपालन करोगा। उधार लेने वाले को पूर्वीक्त श्रीपा दें के निर्द्र माठारित पत्तन न्यासी बार्ड द्वारा करार के प्रतिकतन्त्रका प्रतिनू ने उद्दिश बन्धान नीचे लिखी सतौं पर निष्पादित करने का करार किया है।

उक्त बाध्यक्षा की शर्त यह है कि यदि उक्त उधार क्षेत्रे वाला जक्तः ... कार्याजय में या किसी ग्रन्य कार्याजय में नियोजित रहने के दौरान, तूसीकारिन पत्तन न्यासी बोर्ड को देव पूर्वोकन ग्रिम की रक्ष्म का तूनीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड को क्षय तक सम्यक् भ्रोर नियमित रूप से किस्तों में संदाय करता है जब तक कि '''''' रुपये (केवल : : : : : रूपये) की उक्त राशि का सम्यक् रूप से भूगकान नहीं हो जाता है या वह उक्त निर्मित/कय किए गए सकान का तूनीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को बन्धक कर देना है, जो भी पूर्वनर हो, तो यह बन्धकपत्न शून्य हो जाएगा अन्यया यह पूर्णतः प्रवृत्त भीर बर्लगील रहेगा । जिल्हु यदि उधार लेने वाला मर जाना है या दिवालिया हों जाक्षा है या किसी समय तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की सेवा में नहीं रहना है तो ''''' '' (केशन '''' 'राजेश) का ∍≛त पूरा मूलधन या उसका उपना भाग जिल्ला शेप रह जाता है तथा उन्नतं मूर्लधन पर देय ब्याज जो उस समय भसंदत्त रहता है, तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड को तुरन्त शोध्य और संदेय हो जाएगा और इस बन्धपत्र के छाधार पर प्रतिभू से एक किस्त में वसूल किया जः सकेगः।

प्रतिभू ने जा बाध्यमा स्यंकार की है, वह तूर्तकारिन पत्तन न्यासी बार्ड द्वारा समय बढ़ाये जाने या उक्त उधार लेने वाले के प्रति कोई प्रत्य उदारता बरने जाने के कारण न तो उन्मोबित होगी श्रीर न किसी प्रकार प्रभावित होगी।

^{**}यह उधार लेने वाला भरेगा ।

तूतीकोरित पत्तन न्यामी बोई इस विलेख की बाबत संदेय स्टाम्प शुल्क देगा ।	के भाधार पर उक्त परिसर में रे ग्रधिकार, हक, हित, सम्पन्ति, दाप्रे
- चुर्त्वा - प्रमा । - ऊक्तः : : : : : : : : : : ने	को भनुदान, समनुदेशन भ्रौर प्र
	बन्धककर्ता को स्रौर उसके उपयोग
(1)	समनुदेशन श्रीर प्रक्षिहस्क्रान्सरण किय
· · · · · · · · · · · · · · · · · · (प्रतिःम् के हस्ताक्षरः) (प्रथम सःक्षां का नाम,पता तथा व्यवसाय)	उक्त मूल करार द्वारा प्रति <i>भू</i> स वि
	भौर उक्त धन या उसके किसी
(2) · · · · पदनाम · · · · · · ·	श्रथवा मूल करार के या परिसर सभी श्रन्योजनों, वादों, लेखाश्रों,
	प्राप्त ग्रौर धारण करेगा । बन्धकदा
(डिनीय साक्षी का नाम, पना और व्यवसाय)	करता है कि उसने (बन्धकद∂र ने
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए भीर परिदान किया ।	जानबृक्षकर सष्टन की है, ग्रीर न
···· ने	जिसमे उक्त परिसर या उसका क
(1)	भ्रन्त्रथा भ्र <mark>ि</mark> धिक्षप्त, विल्लंगमित मा
	है। इसके साक्ष्य स्वरूप बन्धकदार
(प्रथम सक्षी का नाम, पना भ्रौर व्यासाय)	क्षारा इस पर अगर सर्वप्रथम निखी
(4)	श्रनुसूची जिसका उपर उस्लेख
(तूनाकारन पनन न्यासा (द्वितीय साक्षी का नाम, पना ग्रौर व्यवसाय) बोर्ड के निर् श्रीर उसकी	बन्धकदार
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। स्रोर मे)	ने
	(1)
प्रइत्सं∘ 7	
	(प्रथम साक्षी क
मकान निर्माण कप्रिम के लिए प्रतिहस्शालरण पत्र का प्ररूप	
[विनियम 10(घ) देखिए]	(2)
यह प्रतिहम्तान्तरण थिलेख, एक पक्षकार के रूप में	
न्यासी बोर्ड (जिसे इममें भागे बन्धकवार कहा गया है भीर इसके अन्तर्गत	(ब्रिनीय साक्षी का
उसके उत्तरवर्ती ग्रौर समनुदेणिनी भी हैं, जब तक कि ऐसा सन्दर्भ से	(18.114 11311 311
भ्रपवर्जिन या उसके विरुव नहीं हैं) ग्रीर दूसरे पक्षकार के रूप में	क्षेत्र कार्यकानि में कार्यकार कार्य
क (जिसे इसमें	की उपस्थिति में हुस्ताक्षर किए।
द्यागे 'बन्धककर्ता' कहा गया है और इसके घन्तर्गत उसके बारिस, निष्पादक,	ध्यान वें: फावेदकों को मलाह दी
प्रशासक और समनुदेशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या सन्दर्भ से भगवजित या उसके विरुद्ध नहीं हैं) के बीच आज तारीखः	मुल्क देने से पूर्व यह सुनि ————————————————————————————————————
स अपनाजत या उसके विरुद्ध गहा है <i>)</i> के बाक आज गराज को किया गया है।	मुल्क के संदाय से कोई सम्पर्क कर करें
चना मन्त्रा भवा है।	सम्पर्ककर ल ।
एक पक्षकार के इता में बन्धकरुती और तूसरे पक्षकार के रूप में	प्र≇प संव
बन्धकदार के बीच नारीखाः ः ः ः को किए गए बन्धक करार द्वारा जो ः ः ः ः जिल्द	
जी '''' पृष्ठ संक्या''' से ''' नक में	भारतीय बीमा निगम को उन मक। स्रधीन स्रनुक्रोय भवन निर्माण स्रक्षिम
संख्याः के रूप में प्राप्त के लिए र्राजस्त्रीकृत	भें बोर्ड के हिल की मूचना देने या
है (जिसे इसमें मूल कारार कहा गया है) रजिस्ट्रीकृत है, बन्धककर्ता ने	,,
····· में स्थित सम्पत्ति का, जिसका विस्तृत वर्णन	प्रेषकः २
इसमें द्वागे लिखी प्रतृमूची में दिया गया है, बस्बक वस्बकार द्वारा बस्बक-	सेवा में,
कर्ताको दिए गए ६पये के ध्रप्रिम को प्रतिभूत करने के	(वितीय सलाहकार ग्रौ र मुख्य

मुल करार की प्रतिभृति पर शोब्य ग्रीर देर सत्र घर कः पूरा संदाय कर दिया गया है और सदनुसार, बन्धककर्ता के अनुरोत्र पर बन्धकदार ने इसमें इसके द्यारो अन्तर्विष्ट रूप में बन्धक परिमर का प्रतिदन्तरगर विलेख निष्पादित करने का करार किया है। प्रत्न यह प्रियेख इप बाम का साक्षी है कि उक्त करार के भनुसरम में भ्रौर उर्ग्युक्त के प्रतिकल-हर्वरूप बन्धकदारः में स्थित उन्त सम्पूर्ण भुखण्ड का, जो मूल करार में समाविष्ट है ग्रीर जिसका विस्तृत वर्णन इसमें श्रागे लिखी श्रनुसूची में किया गया है, उसके उन श्रीधकारों, सुबाचारों ौर भनुसन्नकों सहित, जो सूल करार में उल्लिखित हैं तथा सूल करार

लिए बन्धकदार की कर दिया है।

मे या पर बन्धकवार की सभी सम्पदा और मां। का इसके बाटा बन्धकानी तेहस्तान्तरण करना है। इसके द्वारा के लिए जिस परिनर का अनुदान, रा जन्ना प्रभिन्यक्त है, उसे बन्धककर्ता बर्जाने के लिए द्वागयित सभी धन भाग के लिए या उसके सम्बन्ध में की बाबत किसी चीज के सम्बन्ध में दावों ग्रीर मांगों से निवृक्त रूप में ार, इसके द्वारा बन्बककर्ता से प्रमेखिदा ') न नो ऐसो कोई बल की है, न उसमें पक्षकार या संसर्गी रहा है ोई भाग हक, सम्पदा, की बाबत या प्रभावित होता है या किया जा सकता ने धालो धोर से नारीख को हस्ताक्षर करवा दिए हैं।

किया गया है। ंके लिए भीर उनको और से म नाम, पता भ्रौर व्यवसाय) ःः (साक्षी के हस्ताक्षर)

न(म, पत्रः श्रीर व्यवसाय)

ः ः (साध्यो के हस्याक्षर्)

ग/ती है कि इस दस्तावेज पर स्ट;म्य भित्र- करने के निए कि क्या स्टास्प छूट मिन सकतो है, राज्य सरकार से

नीं की जिसका निर्नाग/कर निर्मय के से किया गया है, वासा पालिजियों तेपक्रका प्रका

। लेखा अधिकारी/निवज्रक/विज्ञाध्यक्र के माध्यम से)

महोदय,

द्यापको सूचना दी जाती है कि तूतीकोरित पत्तत न्यास भागके ति। न में प्राप्त मकान की बीमा पालिसी संख्याः ः ः ः में हिन्**बद्ध है**। म्रापसे मनुरोध है कि म्राप पालिसो में निम्तनिस्तित म्राशव का खण्ड जोड़ने की कुपाकरें।

बीमा पालिसी में जोड़े जाने वाले खण्ड का प्ररूप

 यह घोषणा की जाती है और करार किया जाता है कि ओ ः ः ः ः भवन का स्वामी है जिसका नगरपः। लिका मंख्या है) (जिसे इसमें झागे इस पालिसी की अनुमूखी में बीमाकुत कहा गया है) मकान बनाने के लिए लिए गए अग्रिम की प्रतिभूति के रूप में मकान तूरीकोरिन पतान न्याम को बन्धक कर बिया है । यह भी घोषणा की जाती है और करार किया जाता है कि तूरीकोरिन पतान न्याम ऐसे धन में भी हिनवड है जो यबि यह पृष्ठांफल न होता तो उक्त श्री (इस पालिसों के अधीन बीमाकुत) को उक्त मकान की हानि का उमका हुए नुकतान की बाबत (जिस हानि या मुक्तान की प्रतिभूति, मरम्मन, यशापूर्वकरण या प्रतिस्थापन हारा नहीं की गई है) संत्रेय होगा । ऐसा धन तूरीकोरिन पत्तन न्याम को उस समय तक विया जाएगा, जब तक कि वह इस मकान का बन्धकंदार है । उसकी रसीव इस बात का प्रमाण होगी कि ऐसी हानि या मुकतान की बाबत निगम ने पूरा और अन्तिम भुगतान कर विया है ।

2. इस पृष्ठीकन द्वारा प्रभिष्यकन रूप से जो करार किया गया है, उसके सिवाय इसकी किसी भी बान से बीमाकृत या निगम के, इस पालिसी के प्रधीन या सम्बन्ध में प्रधिकार या दायित्व का प्रथवा इस पालिसी के किसी निबन्धन, उपबन्ध का मर्त का न सो उपान्तरण होगा ग्रीर न उस पर प्रभाव पढ़ेगा।

स्थान :

भवदीय

सारोख:

झम्रेषित । क्रुपया इस पत्न के प्राप्त होते को स्रभिन्नोकृति दें । यह भी धमुरोध है कि जब कभी इस पालिसी के झम्रीत किसी दाये क संवाय किया जाए तब और यदि नजीकरण के लिए कातिक कर से प्रीमियम का संवाय नहीं किया जाता है तो उपको भी सूचना मुझे देते की क्रुपा करें।

(लेखा स्रधिकारी/विभागध्यक्ष का पदनाम)

स्थान :

तारीख:

राज्य धावाम बोर्ड से क्रय की गई सम्पत्ति के बंधक के लिए राज्य श्रावाम बोर्ड द्वारा दिया जाने वाला सहमति पत्न प्रेषक

भ्रध्यक्ष

राज्य आबास बोर्ड

सेवा में,

भ्राप्तस्य श्रम

तूतीकीरित पत्तन न्यास,

सूतीकोरिन-628004

महोदय,

निर्देश : राज्य ग्रावास बीर्ड से कय की गई संपक्तियों का बंधक किया जाना।

हम यह बजनबढ़ करने के लिए सहमत है कि यदि उस सम्पत्त/ पलेट/मकान संख्या प्राप्त कार का, जो श्री प्राप्त मकान/फ्लेट श्रादि के राज्य श्रादास बोई से क्रय किया है और जिसका बने बनाये मकान/फ्लेट श्रादि के श्रय के लिए उधार लेने के उद्देश्य से तूतीकोरित पत्तन त्यास को बंधक, करने की श्रव प्रस्थापना है, श्रावंटन की नारीख़ से पांच/दम वर्ष के भीतर किसी कारण से तूतीकोरित पत्तन त्याम द्वारा विकय किया जाना है और यदि हम केना द्वारा निष्पादित विकय/पट्टा तथा विश्रय करारों के श्रनुसार उस संपत्ति का पुनः अय करने के श्रपने विकल्पाधिकार का प्रयोग करने है, तो हम उस बकाया रकम का जो उधार के मढ़े तूनीकारित पत्तन स्यास को देय हो धौर ऐसी धानिरिक्त राशि का जो भावेदक द्वारा नूनी कोरिन पत्तन न्यास के पक्ष में निद्रादिन किए जाने वाले बंधक विलेख के निवंधनों के अनुसार देय हो, संदाय करेंगे ध्रथवा ध्रनुकल्पतः हम तूनीकोरिन पत्तन न्यास को सम्पत्ति के साथ ऐसा संव्यवहार जो धावश्यक हो जाए धौर जिसके ध्रनुगत उसका विकय भी है, करने की ध्रनुजा देंगे सानों उक्त करार के सुमंगत खण्ड में ऐसा कोई ध्रनुबन्ध नहीं है कि यवि ध्रावन्टन की तारीख से पांव/दस वर्ष के भीतर उसका विकय जिल्हा जाता है तो वह प्रथमतः राज्य ध्रावास बोई को प्रस्थापित क्रिया जाएगा।

ग्र**ध्यक्ष**

राज्य ग्रावास बोर्ड के कय की गई सम्पत्ति के बंधक के लिए राज्य ग्रावास बोर्ड द्वारा दिया जाने वाला प्रमाण-पत्न

उपाबन्ध ख

प्रेषक

ग्रह्यक्ष

राज्य आवास बोर्ड

प्रमाण-पत्र

मध्यक्ष

रिजिस्ट्रीक्टन सहकारी सोपाइटियों से बते बताए मकान/क्नैट के कब की दशा में निष्पादित किए जाने थाले स्वीय बन्धपत्न का प्ररूप (स्वीय बंधपत्न)

तारीखः ' ' ' ' ' ' ' को इस पर हस्ताक्षर किए गए।

उक्त प्रावद व्यक्ति नेमें स्थित नामक भवन में एक रिहायशी पर्तिट खरीदने के प्रयोजन के लिए रुपए के उधार के लिए बोई को प्रावेदन किया है। उक्त भवन का विस्तृत वर्णन इसमें भागे लिखी प्रनुसूची में किया गया है भौर वह भवन शीध ही •••••••••••••••सोसाइटी लिमिटेड को स्रंतरित किया जाने वाला है जो सहकारी सोमायटी श्रिवित्यम के श्रश्चीन रिजस्ट्रीकृत मोमाइटी है श्रीर जिसका रिजस्ट्रीकृत कार्यालय ••••••••••में है (जिसे इसमें मागे 'मोसायटी' वह। गया है)। बोर्ड ने यह उधार श्रन्थ यानों के साथ-साथ इन निबंधनों श्रीर शतौं पर सम्पर्क ख्व से मंत्रूर कर दिया है कि श्राबद्ध व्यक्ति इसमें भागे संतर्विष्ट रीति से एक अन्ध्यक बार्ड के पक्ष में निष्पादित करे।

इस बन्धपत्न की गर्न यह है कि यदि उक्त ग्राबद्ध व्यक्ति बोर्ड को तारीख वर्ष की श्रवधि के भीतर उक्त ' ' स्वाप की राणि का सम्यक रूप में संदाय · · · · · · · · समान मासिक किल्तों में प्रत्येक कलैंण्डर म।स के प्रथम सप्ताह में करता है तो यह बन्धपत्र शून्य हो जाएगा, ऐसी प्रवम किश्न का संवाय 19के ····· के प्रथम सन्ताह में किस जाएगा <mark>ग्रौर पश्</mark>नात्वर्ती किश्तों का संदाय तत्पत्रचात् प्रत्येक द्यागामी कर्लैण्डर मास के प्रथम सप्ताह में किया जाएगा ग्रौर इसमें इसके पूर्व जैसा उपबन्ध है उसके श्रनुसार उक्त उधार के मूलधन का नियमित किश्तों में संदाय करने के पश्चात् उक्त ग्राबद्ध व्यक्ति बोर्ड को उक्त : · · · · · · ः भग् के उधार के घटते क्षुए प्रतिशेष के व्याज की रकम का भुगतान होने तक उसका सम्बक्त रूप से संबाय : : : वर्ष की प्रतिरिक्त अवधि के भीतर : : : : : प्रितिशत प्रतिवर्ष की दर से करेगा । ऐसे ब्याज का संदाय समान मासिक किश्तों में किया जाएगा । सम्पूर्ण उधार ग्रौर उस पर स्याज का प्रतिसंदाय तारीख 😬 रो · · · · · · · · · · · वर्ष की ग्रवधि के भीतर किया जाएगा। परन्तु यवि द्याबद्ध व्यक्ति मूलधन की द्यौर/या व्याज की किसी किस्त का नियत तारीख पर संदाय करने में असफल रहता है तो ऐसे प्रत्येक मामले में बकाया मूलधन या व्याज की ऐसी किस्त की रकम पर प्रतिकात प्रतिवर्ष की ब्याज की उच्चनर दर से क्याम लगेगा ग्रीर ब्याज की ऐसी प्रत्येक किस्त में उसी अनुपात में युद्धि कर दी जाएगी। यह भी उपबन्ध है कि इसकी किसी भी बात का यह मर्थ नही लगाया जाएगा कि उसमे मूलधन ग्रीर व्याज की उक्त किस्सों का उनके लिए नियन तारीख पर संदाय करने का उक्त भावद्ध व्यक्ति का दायित्व भ्रषया भन्यथा बोर्ड का कोई ऋधिकार या उपचार शिथिल होता है।

- (ख) धाबद्ध व्यक्ति के पक्ष में मकान या भूखण्ड के धन्तरण का निष्पादन कर विए जाने पर वह उसे बोर्ड को प्राप्त किए गए उधार के लिए प्रतिभूति के रूप में बोर्ड के पास बन्धक कर देगा।
- (ग) यदि उक्त फ्लैट श्रौर ग्रेयर/डिबेंचरों की, जिनका पूर्वोक्त रूप में क्रय किया जाना श्रदेक्षित है, वास्तविक कीमत उक्त उधार की रकम से कम है तो वह उस श्राधिक्य का बोर्ड की तुरन्त प्रतिदाय करेगा।
- (घ) वह बोर्ड की लिखित पूर्व-सहमित के बिना उक्त पर्लैट या उसमें किसी हिन का न तो श्रंतरण, समनुदेशन, उप-पट्टा

- करेगा, न उतका कब्जा छोड़ेगा श्रीर न उक्त शेवर/डिवेचरों का श्रंतरण या अत्यथा श्रत्य-संकामण करेगा।
- *(घ) जब नक उक्त उधार धीर ब्याज का उसका कोई भाग बकाया रहना है और यदि बोर्ड द्वारा घनेशा की जाए तो वह उक्त गेयर/डिबेंचरों तथा समुचित रूप से हस्ताक्षरित कोरा घन्तरण प्ररूप, उक्त उबार की धतिरिक्त प्रतिभूति के रूप में, बोर्ड को सौप देगा।

भावत व्यक्ति निम्नलिखित करार करता है:---

- (1) प्रावत व्यक्ति द्वारा बोर्ड को नत्ममय देय उक्त उल्लार या उसका प्रतिशेष तथा इस विलेख के प्रतीत देय सभी धन निम्नलिखित घटनाक्रों से किसी के होते पर तुरन्त संदेय हो जाएगा:---
 - (क) यदि भावद व्यक्ति मूलअन को किमी किस्त या प्रतिसंदाय का, जब वह शोध्य भीर संदेय हो जाना है, उसके लिए नियन तारीख को संदाय करने में भ्रमकन रहता है।
 - (ख) यदि आवढ व्यक्ति व्याज की किसी किस्त का नियत नारीख को इसमें इसके पूर्व उपवन्धित रूप में संदाय करने में व्यक्ति-कम करना है।
 - (ग) यदि धावत व्यक्ति की किसी सम्पत्ति पर कोई करस्थम या निष्पादन उद्ग्रहित किया जाता है या उसका रिसीवर नियुक्त किया जाता है।
 - (घ) यवि श्राबद्ध व्यक्ति उक्त प्रसंविदायों या उपवन्धों का जिनका उसकी ग्रोर से पालन किया जाना है, भंग करता है।
 - (ङ) यदि भावद्ध व्यक्ति मर जाता है या बोर्ड की सेवा से निवृत्त हो जाता है या उसकी सेवा में नही रहना है।
 - (च) यदि भावद्ध व्यक्ति दिवालिया न्यायनिर्णीत किए जाने के लिए याचिका प्रस्तुत करना है या दिवालिया न्यायनिर्णीत कर दिया जाता है।
- 2. बोर्ड को प्रतिमास आबद्ध व्यक्ति के वेतन में से मासिक किस्तों की रकम काटने तथा उसे मूलधन या ब्याज के प्रतिमंदाय में मासिक किस्तों में विनियोजित करने का पूर्ण प्रधिकार और स्वतंत्रता होगी और उपर्युक्त प्रयोजनों के लिए प्रावद्ध व्यक्ति बोर्ड को ऐसी कटौतियां प्रावद्ध व्यक्ति की किसी प्रन्य महमनि या सम्मति की प्रावश्यकता के विना करने के लिए प्रप्रतिसंहरणीय रूप से प्राधिकृत करना है।
- 3. प्रावद्ध व्यक्ति के सेवानिवृत्त होते या सेवानिवृत्त के पूर्व मृत्यु हो जाने की दशा में बोर्ड को हक होगा कि वह उक्त उधार का सम्पूर्ण प्रसंदत्त प्रतिशेष जो ऐसी सेवानिवृत्ति या मृत्यु के समय प्रसंदत्त रहता है भौर उस पर सभी व्याज, जिसका संवाय नहीं किया गया है उस उपवान से, यदि कोई हो, वसूल कर ले जो घाबद्ध व्यक्ति की लागू सेवा नियमों के प्रधीन उसे संजूर की जाए।
- 4. जब कभी इस विलेख के मधीन आसद्ध व्यक्ति द्वारा शोध्य मीर संदेय मूलधन या ब्याज की कोई किस्त या कोई अन्य राणि बकाया होगी, बोर्ड को उसे भू-राजस्व की बकाया रकमके रूप में वसूल करते का हक होगा । यह भी उपबंध है कि यह खण्ड बोर्ड के किन्हीं मन्य प्रधिकारों, शक्ति भीर उपवारों को प्रभावित नहीं करेगा ।

इसके साध्यस्वरूप ऊपर वर्णित भावतः व्यक्ति ने ऊपर सर्वप्रथम लिखिन तारीख को इस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

प्रनु	पूची	जिस	का	ऊपर	7	उल	नेख	. :	কি	या	•	ग	या	•	ķ		Ì									
		गबद																								•
1.	٠.	• • • •	• •		•	• • •	•	٠.	٠	٠.		-	•	•	٠	•	•	•								•
2.			٠.		•	٠			٠	٠.	•	٠	٠	•	٠	•	•		 	٠.	٠	 ٠	•	•	٠	
की	उप	स्थिति	में	हस्	Ħŧ	अर	f	εŲ																		
धीर	प	रिदान	ৰি	व्या	ı																					

^{*}यह फेवल उन फ्लटों को लागू होगा जो उस भवन में खरीदे गए हैं जिसका स्वामित्व सहकारी आवास सोसाइटी के पास है।

रजिस्ट्रीकृत सहकारी सोसाइटी से बने बनाए सकान/फ्लैट के ऋप	3. लोहा और इस्पान (वर/परिमाण/लागत)
की दक्षा में निष्पादित किए जाने व1ले प्रतिभू बंधपत्र का प्ररूप ।	4. क्षकड़ी (दर/परिमाण/लागत)
(प्रतिभू बंधपक्र)	5. स्वच्छना सम्बन्धी फिटिंग (लागन)
हम :, 1.	6. विद्युल फिटिंग (लागन)
2केके	 ग्रन्य विशेष फिटिंग (लागत)
	८ श्रम प्रभार
(विभाग भावि) के है, स्वयं कोके लिए	ग्रन्य प्रभार, यदि कोई हो
(जिसे इसमें भ्रामे 'भ्रावड ज्यक्ति' कहा गया है) प्रतिभू घोषित करते हैं	भूमि भौर भवन की कुल लागनः
भीर यह प्रत्याभृति देते हैं कि भ्राबद्ध व्यक्ति वह सभी कार्य करेगा जिसको करने का बचनबंध उसने बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा निष्पादित तारीश्व	 निर्माण कार्य का पर्यवेक्षण मै स्वयं कम्ब्या ।
ें के बंधपत्न के बंधपत्न किया है। हम बोर्ड को ं फ्या किया है। हम को राशि का जो उक्त बंधनत्न के मधीन प्रावद्ध व्यक्ति द्वारा प्रोध्य ग्रीर संदेय राशि है केवल ऐसी राशि का जो बोर्ड उसको (बोर्ड को) ग्राबद्ध व्यक्ति के व्यक्तिकम के कारण हुई किसी हानि या नुकसान की	निर्माण कार्य *
पूर्ति के लिए पर्याप्त समझ, संदाय करने के लिए स्वयं को, भ्रम्न वारिसों	भवदीय
भीर निष्पादकों को प्रावद्ध करते हैं। हम यह करार भी करते हैं कि	मकान के पूरा बन जाने/मकान का विस्तार पूरा हो जाने के पश्चात्
बोर्ड, किसी भ्रत्य भ्रक्षिकार भ्रौर उपचार पर प्रतिकृत प्रभाव डाले बिना, उक्त राशि को भूराजस्व की बकाया के रूप में हमसे वसूल कर सकेगा	विहिन प्राधिकारी को रिपोर्टका प्ररूप ।
भीर हम यह करारभी करते हैं कि श्राबद्ध व्यक्ति के प्रति उक्त वंश्रपक्ष	महोवय,
के प्रवर्तन में किसी प्रविरित या किसी प्रत्य उदारता या उक्त संध्यक	मैंने भ्रपने पत्न सं० ' ' ' ' ' तारीख ' ' ' ' ' तारीख
के निबंधनों में किस परिवर्तन से या भावत व्यक्ति को दिए गए किसी	द्वारा सूचना दी थी कि मैं एक मकान बनाना चाहनाहूं। मुझे सकान बनाने
समय से या ऐसी किन्ही भग्य शर्तों या परिस्थितियों से जिनके भन्नीन	के लिए भादेश संख्या तारीख
कोई प्रतिभू विधि की दृष्टि से उन्मोचित हो जाएगा, हम उक्त रकम का	द्वारा श्रनुज्ञा दी गयी थी । भ्रत वह मकान बनकरपूरा हो गया है भौर
संदाय करने के प्रपने वायित्व से उन्मोचित नहीं होंगे प्रौर इस बंधपन्न	में ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '
के प्रवर्णन के लिए इस बंधपत के अधीन हमारा वरियत्व मूल ऋणी के	मूल्याकन रिपोर्ट संलग्न कर रहा हूं।
रूप में होगा वह प्रावदा व्यक्ति के वायित्व के साथ संयुक्ततः ग्रीर	भववीय
पूर्णकतः होगा ।	(हस्ताक्षर)
भाग सारीखा को श्री	मुख्यांकन रिपोर्ड
भी उपस्थिति में (1)	••
विभाग/कार्यालयं के श्री	मैं/हम प्रमाणित करता हूं कि मैंने/हमने सं० कैके को जो
कार्यालय/विभाग के श्री	श्री/श्रीमती ***/ हारा निर्मित किया गया है,
े इस पर हस्ताक्षर किए हैं।	मूल्यांकन किया है और मैंने/हमने उस मकान के मूल्य का जो प्राक्कलन किया है वह निम्नलिखित शोषों के अधीन इस प्रकार है :
प्रतिभू, जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं	ायाचा ह पह गान्याचाचात शाया या अवाग इस प्रकार हु:
•inham = ■	शीर्ष ′ लागत
मकान बनाने या उसमें परिवेधन करने की श्रनुज्ञा के लिए विहित	र्• वै∘
प्राधिकारी को रिपोर्ट/म्रावेदन का प्ररूप ।	1. ईंट
महोदय, 🛴	2. सीमेंट
श्रापको स्पिके की जाती है कि मैं,	 लोहा भौर इस्पात
मकान बनाना, चाहता हूं/मकान में परिवर्धन करना चाहता हूं । ग्रतः	4. लकड़ी
ग्रापसे प्रमुरोध है कि मुर्झ मकान बनाने/मकान में परिवर्धन करने की	 स्वच्छता सम्बन्धी फिटिंग
भ्रनुजा दी जाए । भूमि की भौर निर्माण/विस्तार के लिए सामग्री की	6. विद्युत फिटिंग
प्राकलित लागत् -नीव्रं दी गई है :	7. सभी श्रन्य विशेष फिटिंग
भूमि	s. श्रम प्रभार
1. स्थिति (सर्वेक्षण संख्या, प्राम, जिला, प्रवेश)	9. सभी धन्य प्रभार
2. क्षेत्रफल	
3. लागत	मकान की कुल लागन
	मूल्यांकन प्राधिकारी के हस्ताक्षर
भवन सामग्री प्रावि	[पो० ई० टी०—84/78]
1. ईंट (दर/परिमाण/लागत) : .:.	अपठनीय
2. सीमेंट (दर/परिमाण/लागत)	सारीख भवर सम्रिव,
*ठेके दार का नाम भीर कारोबार का स्थान लिखित के कि कि हैं। तिस्थित इंजीनियरी की कोई फर्म या ख्याति प्राप्त सिवित इंजीनियर। **यहां मकान का क्यौरा लिखित । ****यहां कर्मचारी का नाम, श्रादि लिखित ।	